



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(A Center University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

एमबीए पाठ्यक्रम

पाठ्यक्रम कोड : MBA-01



चतुर्थ सेमेस्टर

पाठ्यचर्या कोड : MS-447

पाठ्यचर्या का शीर्षक : स्टॉक मार्केट ऑपरेशंस

दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र)



महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

विषय कोड: MS 447

क्रेडिट्स: 2 क्रेडिट

विषय का नाम: स्टॉक मार्केट ऑपरेशंस (Stock Market Operations)

पाठ्यक्रम के उद्देश्य:

- शेयर बाजार के बुनियादी अवधारणाओं को समझने में विद्यार्थियों की मदद करना।
- भारतीय शेयर बाजार की कार्यप्रणाली को समझना
- शेयर बाजार में प्रयुक्त विभिन्न शब्दावली के साथ - साथ शेयर बाजारों के व्यावहारिक निहितार्थ से विद्यार्थियों को अवगत कराना।

मूल्यांकन के मानदंड:

1. सत्रांत परीक्षा : 70 %
2. सत्रीय कार्य : 30 %

पाठ्यक्रम सामग्री:

इकाई – I: भारत में वित्तीय बाजार के एक अवलोकन (An overview of Financial Markets in India)

- भारतीय वित्तीय प्रणाली का परिचय (Introduction of Indian Financial System)
- मुद्रा बाजार: विशेषताएं, उपकरण, संरचना और कार्य (Money market: Features, Instruments, Composition and Functions)
- न्यू इश्यू बाजार: कार्य, न्यू इश्यू फ्लोटिंग के तरीके, आईपीओ के लिए सेबी के दिशानिर्देश, न्यू इश्यू बाजार में हाल की प्रवृत्तियां (New Issue Market: Functions, Methods of Floating New Issue, SEBI Guidelines for IPO, Recent trends in New Issue Market)

इकाई – II: शेयर बाजार (Equity Market)

- शेयर बाजार में खिलाड़ी: डिपॉजिटरी संस्थान, बीमा कंपनियां (Players in the equity market: Depository Institutions, Insurance Companies)
- एसेट मैनेजमेंट कंपनियां, निवेश बैंकिंग कंपनियां (Asset Management Firms, Investment Banking firms)
- सेकेंडरी बाजार की संरचना (Structure of Secondary market)
- सेकेंडरी बाजार ट्रेडिंग यांत्रिकी: आदेश के प्रकार, लघु बिक्री (Secondary Market Trading Mechanics: Types of orders, Short selling)
- दलाल: दलालों के प्रकार, वास्तविक बाजार में दलालों और व्यापारियों की भूमिका (Brokers: Kinds of brokers, Role of brokers and Dealers in Real market)

इकाई – III: शेयर बाजारों में ट्रेडिंग सिस्टम (Trading System in Stock Exchanges)

- शेयर बाजारों का अर्थ और कार्य (Meaning and Functions of Stock exchanges)
- भारत में शेयर बाजारों के संगठन: पारंपरिक संरचना, शेयर बाजारों के निगमीकरण (Organization of Stock Exchanges in India: Traditional structure, Corporatization of Stock exchanges)
- प्रतिभूतियों की लिस्टिंग: लिस्टिंग के लाभ, लिस्टिंग प्रक्रिया (Listing of Securities: Advantages of listing, listing Procedure)
- क्लियरिंग और निपटारा, ऑनलाइन ट्रेडिंग (Clearing and Settlement, Online Trading)
- सट्टा लेनदेन, मार्जिन ट्रेडिंग, शेयर बाजार कोटेशन (Speculative Transactions, Margin Trading, Stock Market Quotations)

इकाई – IV: भारतीय शेयर बाजार (Indian Stock Exchanges)

- NSE: सुविधाएँ, एनएसई का कॉर्पोरेट ढांचा, एनएसई का शेयर सूचकांक (NSE: Features, Corporate Structure of NSE, Stock Indices of NSE)
- एनएसई में ट्रेडिंग: थोक ऋण बाजार (डब्ल्यूडीएम), पब्लिक इश्यू ऑफरिंग (पीआईओ), समयबद्ध पीआईओ प्रणाली, स्क्रीन आधारित ट्रेडिंग सिस्टम (SBTS) (Trading at NSE: Wholesale Debt Market (WDM), Public Issue Offerings(PIO), Time Bound PIO System, Screen Based Trading System(SBTS))
- बीएसई: परिचय, संगठनात्मक संरचना, बीएसई के अनुभाग (BSE: Introduction, Organisation structure, Segments of BSE)
- पूंजी बाजार और शेयर बाजार (Capital market and Stock exchange)
- सेबी की भूमिका (Role of SEBI)
- क्रेडिट रेटिंग और बिल डिस्काउंटिंग (Credit Rating and Bill Discounting)
- उद्यम पूंजी (Venture Capital)

इकाई – V: डेरिवेटिव बाजार (Derivatives Market)

- वित्तीय डेरिवेटिव का परिचय, भारत में डेरिवेटिव बाजार (Introduction to Financial Derivatives, Derivatives market in India)
- फारवर्ड अनुबंध, विदेशी मुद्रा की हेजिंग, मुद्रा फारवर्ड के माध्यम से जोखिम, फारवर्ड का लाभ और नुकसान (Forward Contract, Hedging of Foreign Exchange, Risk through Currency Forwards, Advantages and Disadvantages of Forwards)
- भविष्य अनुबंध, विकल्प, स्वैप (Future Contracts, Options, Swaps)

सम्बन्धित पुस्तकें:

- Gordan and Natrajan (2011), Financial Market Operation, First Edition, Himalaya Publishing House, New Delhi.

- Fabozzi and Modigliani (2010), Capital Markets Institutions and Instruments, Fourth Edition, PHI Learning, New Delhi.
- Chakrabarti (2010) Capital Markets in India, Second Edition, Response Books (Sage), New Delhi.

इकाई – 1: भारत में वित्तीय बाजार के एक अवलोकन**Unit 1: An overview of Financial Markets in India**

भारतीय वित्तीय प्रणाली का परिचय (Introduction of Indian Financial System)

भारतीय वित्त प्रणाली एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें व्यक्तियों, वित्तीय संस्थाओं, बैंकों, औद्योगिक कम्पनियों तथा सरकार द्वारा वित्त की माँग होती है तथा इसकी पूर्ति की जाती है।

भारतीय वित्त प्रणाली के दो पक्ष हैं, पहला माँग पक्ष तथा दूसरा पूर्ति पक्ष।

माँग पक्ष का प्रतिनिधित्व व्यक्तिगत निवेशक, औद्योगिक तथा व्यापारिक कम्पनियों, सरकार आदि करते हैं, जबकि पूर्ति पक्ष का प्रतिनिधित्व बैंक, बीमा कंपनी, म्यूच्युअल फण्ड, तथा अन्य वित्तीय संस्थाएं करती हैं।

भारतीय वित्त प्रणाली को दो भागों में बांटा गया है-

1 भारतीय मुद्रा बाजार

2 भारतीय पूंजी बाजार।

मुद्रा बाजार - यह राष्ट्रीय ऋण और जमा बाजारों जहां के सजातीय सेट केंद्रीय बैंक, वाणिज्यिक बैंकों और अन्य वित्तीय संस्थानों को बनाने के अल्पकालिक लेनदेन (अप करने के लिए एक वर्ष) प्रतिभूतियों, साथ ही का हिस्सा अल्पकालिक जमा और उधार के कार्यान्वयन के लिए ऋण बाजार संचालन, कार्यशील पूंजी कंपनियों के मुख्य रूप से आंदोलन की सेवा, बैंकों, संस्थाओं, राज्य की आबादी।

परिभाषा: मुद्रा बाजार के साधन निवेश वाहन हैं जो बैंकों, व्यवसायों और सरकार को बड़े, लेकिन अल्पकालिक मिलने की अनुमति देते हैं, कम लागत पर पूंजी की जरूरत होती है यह अवधि रातोंरात, कुछ दिन, सप्ताह या महीने होती है, लेकिन एक वर्ष से भी कम होती है। दीर्घकालिक नकदी जरूरतों को पूरा करना वित्तीय या पूंजी बाजारों द्वारा पूरी की जाती है। व्यापारों को अल्पावधि नकद की आवश्यकता होती है क्योंकि बेची जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं के लिए भुगतान महीने लग सकते हैं

पैसे के बाजार के साधनों के बिना, उन्हें पहले से बेचा जाने वाले सामानों के लिए भुगतान प्राप्त होने तक इंतजार करना होगा। इससे कच्चे माल की खरीद में देरी होगी, तैयार उत्पाद का उत्पादन धीमा कर देगा। एक व्यवसाय को ऑपरेटिंग रखने के लिए निर्धारित लागतें, जैसे किराया, उपयोगिताओं और मजदूरी, का भुगतान करना चाहिए। इसलिए, यह अतिरिक्त पैसा एक मनी मार्केट इन्स्ट्रूमेंट में डाल देगा, यह जानकर कि जब इसे जरूरत होती है, तब इसे प्राप्त कर सकते हैं।

इस कारण से, मुद्रा बाजार के उपकरण बहुत सुरक्षित होने चाहिए। एक व्यवसाय स्टॉक मार्केट में अतिरिक्त नकद नहीं डाल सका, और उम्मीद है कि जब बिलों का भुगतान करने के लिए नकद की जरूरत होती है तो कीमतें कम नहीं होतीं उन्हें एक पल के नोटिस पर वापस लेने में आसान होना चाहिए, और बड़ी लेनदेन शुल्क नहीं है अन्यथा, व्यापार केवल एक सुरक्षित में अतिरिक्त नकद रखना होगा इंटरनेशनल सेटलमेंट्स के लिए बैंक के मुताबिक, दुनिया भर में 883 अरब डॉलर के मनी मार्केट इन्स्ट्रूमेंट जारी किए गए हैं।

मुख्य वित्तीय मुद्रा बाजार के उपकरणों लेनदेन खजाना और वाणिज्यिक कर रहे हैं बिल, जमा प्रमाणपत्र, बैंकों की स्वीकृतियां, और दूसरों। मुद्रा बाजार की विशिष्टता पैसे बेच दिया है और नहीं है कि नहीं खरीदा है और विमर्श के लिए किया जाता है अवसर लागत पर अन्य तरल संपत्ति और उत्तरार्द्ध में मापा जाता है ब्याज की इकाइयों को नाममात्र दर। दूसरे शब्दों में, मुद्रा बाजार की मांग के लिए पैसे और आपूर्ति को व्यक्त करता है, जो ब्याज दरों के स्तर को निर्धारित पैसा ही की कीमत।

मनी बाजार में संतुलन पैसे के लिए मामले में हासिल की जहां मांग और आपूर्ति घटता संभवतः कई embodiments में, एक दूसरे को काटना। एक चार्ट पर उन्हें विचार करें। को में है कि पैसे के इस भुज पर राशि उपचार, और समन्वय कुल्हाड़ियों ब्याज दर। वक्र मान लेते हैं कि एस.एम. पैसे की आपूर्ति खड़ी रेखा का रूप है, और केंद्रीय बैंक में है, मुद्रा आपूर्ति को नियंत्रित करने, एक निरंतर स्तर पर बनाए रखता है मामूली ब्याज दर में कोई परिवर्तन।

भारतीय मुद्रा बाजार को तीन भागों में बांटा गया है— *असंगठित बाजार, संगठित बाजार, तथा मुद्रा बाजार का उप बाजार।*

असंगठित बाजार के अंतर्गत देशी बैंकर, साहूकार, और महाजन आदि परम्परागत स्रोत आते हैं। ग्रामीण और कृषि साख में इसकी बहुत भूमिका होती है।

संगठित बाजार में भारतीय रिज़र्व बैंक शीर्ष संस्था है, इसके अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक, निजी क्षेत्र के बैंक, विदेशी बैंक तथा अन्य वित्तीय संस्थाएं आती हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक देश में मौद्रिक गतिविधियों के नियमन का नियंत्रण करता है, भारतीय रिज़र्व बैंक के दो कार्य हैं—

1. सामान्य केंद्रीय बैंकिंग कार्य तथा
2. विकास संबंधी और प्रवर्तन कार्य।

सामान्य केंद्रीय बैंकिंग कार्य के अधीन भारतीय रिज़र्व बैंक के निम्न कार्य किये जाते हैं—

1. करेंसी नोटों का निर्गमन,
2. सरकारी बैंकर का काम,
3. बैंकों के बैंकों का काम,
4. विदेशी विनिमय को नियंत्रित करना,
5. साख नियंत्रण एवं
6. आकड़ों का संग्रहण और प्रकाशन।

विकास संबंधी और प्रवर्तन कार्य के अधीन भारतीय रिज़र्व बैंक के निम्न कार्य किये जाते हैं—

1. मुद्रा बाजार पर प्रतिबंधात्मक नियंत्रण,
2. बचतो को बैंकों व अन्य वित्तीय संस्थाओं के माध्यम से उत्पादन के लिए उपलब्ध कराना,
3. लोगों में बैंकिंग की आदत बढ़ाने के लिए प्रयास करना आदि।

भारतीय पूंजी बाजार

भारतीय पूंजी बाजार, मुद्रा बाजार से इस बात से भिन्न है कि मुद्रा बाजार अल्पावधि की वित्तीय व्यवस्था का बाजार है, जबकि पूंजी बाजार में मध्यम तथा दीर्घकाल के कोष का आदान-प्रदान किया जाता है। भारतीय पूंजी बाजार को मोटे तौर पर दो भागों में बांटा जाता है— *गिल्ड एंड बाजार और औद्योगिक प्रतिभूति बाजार।*

गिल्ड एंड बाजार में रिज़र्व बैंक के माध्यम से सरकारी और अर्द्ध-सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय किया जाता है।

गिल्ड एंड बाजार में सरकारी और अर्द्ध-सरकारी प्रतिभूतियों का मूल्य स्थिर रहता है।

औद्योगिक प्रतिभूति बाजार में नये स्थापित होने वाले या पहले से स्थापित औद्योगिक उपक्रमों के शेयर और डिबेंचर का क्रय-विक्रय किया जाता है।

यदि पूंजी बाजार में निजी निगम क्षेत्र के नये अंशों और डिबेंचर, सरकारी कंपनी की प्राथमिक प्रतिभूति या नयी प्रतिभूतियाँ तथा सार्वजनिक क्षेत्र के बांड्स के निर्गमों का क्रय-विक्रय किया जाता है, तो ऐसे बाजार को प्राथमिक पूंजी बाजार कहते हैं।

द्वितीयक पूंजी बाजार के अंतर्गत स्टॉक एक्सचेंज में होने वाले क्रय-विक्रय तथा गिल्ड एंड बाजार में होने वाले क्रय-विक्रय आते हैं।

भारतीय पूंजी बाजार में पूंजी के स्रोत हैं: अंश पूंजी, ग्रहण पत्र, मर्चेन्ट बैंक, म्यूच्युअल फण्ड, लीजिंग कंपनी, जोखिम पूंजी कंपनी आदि।

भारतीय वित्तीय व्यवस्था से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण तथ्य: भारत में वित्तीय वर्ष 1 अप्रैल से 31 मार्च तक होता है। रिज़र्व बैंक भारत का केन्द्रीय बैंक है, इसका मुख्यालय मुंबई में है। भारतीय रिज़र्व बैंक का लेखा वर्ष 1 जुलाई से 30 जून है।

भारत में मौद्रिक नीति एवं साख नीति रिज़र्व बैंक द्वारा ही बनायी जाती है और लागू की जाती है। भारत के विदेशी व्यापार से सम्बंधित आंकड़े भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा एकत्रित तथा प्रकाशित होते हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक द्वारा बैंक दर में कमी के कारण बाजार में तरलता में वृद्धि होती है।

सार्वजनिक बैंकों में भारतीय स्टेट बैंक समूह सबसे बड़ा है जो कुल बैंक जमा का लगभग 29% का नियंत्रण किया जाता है। राष्ट्रीय कृषि तथा ग्रामीण बैंक देश में कृषि एवं ग्रामीण विकास हेतु वित्त उपलब्ध कराने वाली शीर्ष संस्था है।

भूमि विकास बैंक मूलतः दीर्घकालीन साख उपलब्ध कराने वाली संस्था है। भूमि विकास बैंक का आरम्भ भूमि बंधक बैंक के रूप में 1919 ई. में हुआ था। भारतीय औद्योगिक विकास बैंक की स्थापना 1 फेब्रुअरी 1964 ई. में हुआ था।

माइक्रो फाइनेंस की बढ़ती हुई माँग एवं उपयोगिता को देखते हुए इसके विनियमित विकास बैंक के लिए राष्ट्रीय कृषि ग्रामीण विकास बैंक को नियामक निकाय बनाने का सरकार का विचार है। भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण द्वारा बीमा कंपनी पर नियंत्रण किया जाता है और उनकी गतिविधियों पर नजर रखता है।

मुख्य वित्तीय संस्थान:

1. इम्पीरीअल बैंक ऑफ इंडिया
2. भारतीय रिज़र्व बैंक
3. भारत के औद्योगिक वित्त निगम
4. औद्योगिक विकास बैंक ऑफ इंडिया
5. भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी)
6. भारत का सामान्य बीमा
7. भारतीय स्टेट बैंक
8. औद्योगिक रिकन्स्ट्रक्शन बैंक ऑफ इंडिया (आईआरबीआई) अब (औद्योगिक निवेश बैंक ऑफ इंडिया)
9. राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड)
10. लघु उद्योग विकास बैंक ऑफ इंडिया (एसआईडीबीआई)
11. राष्ट्रीय आवास बैंक (एनएचबी)
12. यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया (यूटीआई)
13. जोखिम पूंजी और प्रौद्योगिकी वित्त निगम लिमिटेड (आरसीटीसी)

14. टेक्नोलॉजी डेवलपमेंट एंड इंफॉर्मेशन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड (टीडीआईसीआई)
15. पर्यटन वित्त निगम निगम लिमिटेड (टीएफसीआई)
16. शिपिंग क्रेडिट एंड इन्वेस्टमेंट कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड (एससीआईसीआई)
17. डिस्काउंट और फाइनेंस हाउस ऑफ इंडिया लिमिटेड (डीएफएचआई)
18. क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक

मुद्रा बाजार: विशेषताएं, उपकरण, संरचना और कार्य

(Money market: Features, Instruments, Composition and Functions)

वाणिज्यिक पेपर: त्रुटिहीन क्रेडिट वाली बड़ी कंपनियों को केवल नकदी बढ़ाने के लिए अल्पकालिक असुरक्षित वचन नोट जारी कर सकते हैं।

संपत्ति-समर्थित वाणिज्यिक पत्र वाणिज्यिक कागज पर आधारित एक व्युत्पन्न है यह सबसे लोकप्रिय मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट है, जिसमें दुनिया भर में 521 अरब डॉलर का जुर्माना है, बीआईएस के मुताबिक।

संघीय निधि: बैंक वास्तव में केवल व्यवसाय हैं जो संघीय निधि का उपयोग करते हैं ये धन प्रत्येक रात फेडरल रिजर्व आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उपयोग किया जाता है

सभी बैंक देनदारियों का लगभग 10% \$ 58 8 मिलियन एक बैंक जो आवश्यकता को पूरा करने के लिए पर्याप्त नकदी के बिना अन्य बैंकों से उधार लेगा फेडरल फंड की दरें इस प्रकार है, ब्याज बैंक फेड फंड्स को उधार लेने के लिए एक-दूसरे से शुल्क लेते हैं। यहां वर्तमान फेड फंड्स दर है

डिस्काउंट विंडो: अगर कोई बैंक दूसरे बैंक से फेड फंड नहीं कर सकता, तो वह फेड की डिस्काउंट विंडो में जा सकता है फेड ने एक डिस्काउंट रेट का शुल्क लगाया जो कि फेड फंड की दर से थोड़ा अधिक है, इसलिए अधिकांश बैंक डिस्काउंट विंडो से बचते हैं। हालांकि, आपातकाल के मामले में वहां है

जमा प्रमाणपत्र: बैंक एक से छह महीने तक जमा के प्रमाण पत्र जारी करके अल्पकालिक नकदी बढ़ा सकते हैं। यह धारक उच्च ब्याज दरों को अब नकद आयोजित किया जाता है।

यूरोडोलार: बैंक विदेशी बैंकों में सीडी भी जारी कर सकते हैं, यू के बजाए यू में रखे जाते हैं। एस डॉलर

पुनर्खरीद करार: बैंक सिक्योरिटीज बेचकर अल्पकालिक धनराशि बढ़ाते हैं लेकिन एक ही समय में थोड़े समय की ब्याज के साथ अल्पकालिक (अक्सर अगले दिन) उन्हें पुनर्खरीद करने का वादा करते हैं। हालांकि यह एक बिक्री है, इसे एक अल्पकालिक संपार्श्विक ऋण के रूप में बुक किया गया है। सुरक्षा के खरीदार (जो वास्तव में ऋणदाता है) एक रिवर्स रेपो कार्यान्वित करता है

ट्रेजरी बिल: निम्नलिखित अवधियों में बिल जारी करके संघीय सरकार परिचालन नकद उठाती है: 4 सप्ताह, 13 सप्ताह, 26 सप्ताह, और एक वर्ष।

नगरपालिका नोट: शहरों और राज्यों ने नकद जुटाने के लिए लघु अवधि के बिल जारी किए हैं। इन पर ब्याज का भुगतान संघीय करों से छूट है

बैंकर्स स्वीकृति: यह अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए एक बैंक ऋण की तरह काम करता है। बैंक गारंटी देता है कि अपने ग्राहकों में से एक प्राप्त वस्तुओं के लिए भुगतान करेगा, आमतौर पर 30 - 60 दिन बाद उदाहरण के लिए, एक आयातक माल का ऑर्डर करना चाहता है, लेकिन निर्यातक उसे क्रेडिट नहीं देगा। वह अपने बैंक में जाता है, जो भुगतान की गारंटी देता है बैंक भुगतान की जिम्मेदारी स्वीकार कर रहा है। अधिक जानकारी के लिए, बैंकर्स स्वीकृति देखें

मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स में शेयर: मनी मार्केट फंड्स और बैंकों में अन्य अल्पकालिक निवेश पूल और सरकारी पूल मनी मार्केट इंस्ट्रूमेंट्स और उनके निवेशकों को शेयर बेचते हैं।
वायदा संविदा: ये अनुबंध व्यापारियों को भविष्य में किसी निश्चित तारीख को एक सहमति पर कीमत पर एक मुद्रा बाजार सुरक्षा खरीदने या बेचने के लिए बाध्य करता है।

चार उपकरणों का आम तौर पर उपयोग किया जाता है: 13-सप्ताह के ट्रेजरी बिल, तीन महीने का यूरो समय जमा, एक महीने का यूरो समय जमा, और तंग फंड दर के 30-दिवसीय औसत।

फ्यूचर्स ऑप्शंस: ट्रेडर्स केवल एक निश्चित तिथि पर या इससे पहले एक सहमति पर कीमत पर मनी मार्केट फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट खरीदने या बेचने के लिए दायित्व के बिना, सिर्फ विकल्प खरीद सकते हैं। तीन उपकरणों के विकल्प हैं: तीन महीने का ट्रेजरी बिल वायदा, तीन महीने का यूरो वायदा और एक महीने का यूरो वायदा।

स्वैप: बैंक उन कंपनियों के लिए मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं जो ब्याज दरों में बदलावों से खुद को बचाने के लिए चाहते हैं।

मुद्रा बाजार के प्रलेख-

- 1. याचना राशि-**याचना राशि का प्रयोग मुख्यतः बैंकों द्वारा उनके अस्थायी नकदी की आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए प्रयोग किया जाता है ये दिन-प्रतिदिन के आधार पर एक दूसरे से ऋण लेते तथा देते है। इसका पुनर्भूाुगतान मांग पर देय होता है और इसकी परिपक्वता अवधि एक दिन से 15 दिन तक की होती है याचना राशि पर भुगतान किए जाने वाले ब्याज की दर को याचना दर कहते है।
- 2. ट्रेजरी बिल-**ट्रेजरी बिल एक प्रतिज्ञा पत्र है जो भारतीय रिजर्व बैंक के द्वारा अल्पकालीन वित्तीय कोष की आवश्यकता की पूर्ति के लिए निर्गमित किया जाता है ट्रेजरी बिल उच्च तरलता वाला प्रलेख है जिसका धारक कभी भी किसी दूसरे पक्ष को हस्तांतरित कर सकता है अथवा रिजर्व बैंक से बट्टे पर भुना सकता है ये बिल अंकित मूल्य से कम मूल्य पर निर्गमित किए जाते है। एवं उनका शोधन अंकित मूल्य पर होता है अतः निर्गमन मूल्य व अंकित मूल्य का जो अंतर होता है वह विनियोग पर ब्याज प्रदर्शित करता है।
- 3. वाणिज्यिक पत्र-**कम्पनियों की कार्यशील पूजी की आवश्यकता की पूर्ति हेतु वाणिज्यिक पत्र एक लोकप्रिय प्रलेख है यह एक असुरक्षित प्रलेख है जो प्रतिज्ञा पत्र के रूप में निर्गमित किया जाता है यह प्रलेख सन् 1990 में सर्वप्रथम जारी किया गया था जिससे कि इसके माध्यम से कंपनियाँ अपने अल्पकालीन कोषों को उधार ले सकें यह 15 दिन से एक साल के समय तक के लिए निर्गमित किया जा सकता।
- 4. जमा प्रमाण पत्र-**जमा प्रमाण पत्र एक अल्पकालीन प्रलेख है जो वाणिज्यिक बैंकों द्वारा एवं विशिष्ट वित्तीय संस्थानों द्वारा निर्गमित किया जाता है और जो एक पक्ष से दूसरे पक्ष को स्वतंत्रतापूर्वक हस्तांतरणीय है बचत पत्र की परिपक्वता की अवधि 91 दिन से एक साल तक की होती है यह प्रपत्र व्यक्तियों को, सहकारी संस्थाओं और कम्पनियों को निर्गमित किए जा सकते है।
- 5. व्यापारिक विपत्र-**सामान्यतया व्यापारी, थोक विक्रेता या उत्पादक से माल उधार खरीदते है। विक्रेता उधार की अवधि पूर्ण होने के पश्चात् माल की कीमत प्राप्त करता है किंतु यदि कोई विक्रेता माल की कीमत प्राप्त करने की प्रतीक्षा नहीं करना चाहता या उसे तत्काल धन की आवश्यकता है तो वह क्रेता के पक्ष में एक विनिमय पत्र लिख सकता है जब क्रेता विपत्र पर स्वीकृति प्रदान कर देता है तो यह एक विनिमय साध्य प्रलेख बन जाता है इसी को व्यापारिक विपत्र या विनिमय पत्र कहते हैं।

पूँजी बाजार के प्रलेख-

पूँजी बाजार से तात्पर्य उस बाजार से है जो मध्यकालीन व दीर्घकालीन कोषों में व्यवसाय करता है दीर्घकालीन व मध्यकालीन ऋण के लिए यह संस्थागत प्रबंध है जो कि प्रतिभूतियों के विपणन एवं व्यापार की सुविधा प्रदान करता है अतः इसमें बैंको व वित्तीय संस्थाओं से सभी दीर्घकालीन ऋण, विदेशी बाजारों से ऋण और विभिन्न प्रतिभूतियों जैसे अंशों, ऋणपत्रों एवं बॉण्डस के एकत्र करने से पूँजी को शामिल किया जाता है। पूँजी बाजार के निम्नलिखित दो मुख्य भाग होते हैं।

1. प्राथमिक बाजार,
2. द्वितीयक बाजार।

प्राथमिक बाजार में निर्गमित नवीन प्रतिभूतियों का लेनदेन होता है अतः इसे नवीन निर्गमन बाजार भी कहते हैं। जबकि द्वितीयक बाजार में विद्यमान प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय होता है अतः इसे स्कंध विपणि या शेयर बाजार या स्टॉक बाजार भी कहते हैं।

1. **प्राथमिक बाजार**-प्राथमिक बाजार का सम्बन्ध उस व्यवस्था से है जिसके द्वारा कंपनियां नवीन अंशों व ऋणपत्रों के निर्गमन, द्वारा दीर्घकालीन ऋण प्राप्त करती हैं आप इस बात को जानते हैं कि कम्पनियों अंशों व ऋणपत्रों का नवीन निर्गमन अपने गठन के समय और यदि आवश्यक हुआ तो अपने व्यवसाय के विस्तारण के समय करती हैं यह कार्य बहुधा मित्रों, संबंधियों, व वित्तीय संस्थाओं से व्यक्तिगत रूप में या सार्वजनिक निर्गमन द्वारा किया जाता।
2. **द्वितीयक बाजार**-द्वितीयक बाजार, जो स्कंध विपणि या शेयर बाजार के नाम से जाना जाता है, अंशों व ऋण-पत्रों को आवश्यक तरलता प्रदान कर, दीर्घ कालीन वित्त में महत्वपूर्ण भूमिका, निभाता है यह एक स्थान है जहाँ इन प्रतिभूतियों का नकदीकरण, बिना किसी कठिनाई व विलंब के हो जाता है यह एक संगठित बाजार है जहाँ अंशों क्रय-विक्रय किया जाता है।

प्राथमिक बाजार व द्वितीयक बाजार में अंतर

1. **कार्य**-प्राथमिक बाजार का मुख्य कार्य नवीन प्रतिभूतियों के निर्गमन द्वारा दीर्घकालीन कोष एकत्र करना है वहीं द्वितीयक बाजार विद्यमान प्रतिभूतियों को सतत एवं तात्कालिक बाजार उपलब्ध कराता है।
2. **प्रतिभागी**-प्राथमिक बाजार में मुख्य भाग लेने वाली वित्तीय संस्थाएँ, म्यूचुअल फण्ड, अभिगोपक और व्यक्तिगत निवेशक हैं, जबकि द्वितीयक बाजार में भाग लेने वाले इन सभी के अतिरिक्त वे दलाल भी हैं जो शेयर बाजार (स्टॉक एक्सचेंज) के सदस्य हैं।
3. **सूचीबद्ध कराने की आवश्यकता**-प्राथमिक बाजार की प्रतिभूतियों को सूचीबद्ध कराने की आवश्यकता नहीं पड़ती, जबकि द्वितीयक बाजार में केवल उन्हीं प्रतिभूतियों का लेन-देन हो सकता है जो सूचीबद्ध होती हैं।
4. **मूल्यों को निर्धारण**-प्राथमिक बाजार के सम्बन्ध में प्रतिभूतियों का मूल्य निर्धारण प्रबंधन द्वारा सेबी के निर्देशों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है, जबकि द्वितीयक बाजार में प्रतिभूतियों का मूल्य बाजार में विद्यमान माँग व पूर्ति के समन्वय द्वारा निर्धारित किया जाता है, जो समय के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

पूँजी बाजार एवं मुद्रा बाजार में अन्तर-

मुद्रा बाजार	पूँजी बाजार
1. मुद्रा बाजार का सम्बन्ध अल्पकालीन कोष से हैं	1. पूँजी व्यापार का सम्बन्ध दीर्घकालीन कोष है।
2. मुद्रा बाजार में व्यापारिक पत्र जमा पत्र, वाणिज्यिक	2. पूँजी बाजार में ऋणपत्रों, बाण्डो, अंशों, पत्र का लेनदेन होता है प्रतिभूतियों आदि का लेनदेन होता है
3. मुद्रा बाजार के अन्तर्गत भारतीय रिजर्व बैंक वाणिज्यिक	3. पूँजी बाजार में लेने वाले दलाल, अभिगोपक, बैंक और गैर बैंकिंग वित्त कम्पनीयां आदि है म्यूच्यूल फण्ड वित्तीय संस्थाएं और व्यक्तिगत निवेशक है।

मुद्रा बाजार कैसे काम करता है ?

मुद्रा बाजारों की बात करते हुए, आमतौर पर इसका अर्थ होता है विदेशी मुद्रा बाजार - उस पर दैनिक व्यापार की मात्रा कई ट्रिलियन डॉलर तक पहुंचती है! जो लोग व्यापारिक मुद्राओं में अपने हाथ की कोशिश करना चाहते हैं, विदेशी मुद्रा व्यापार के तंत्र की समझ महत्वपूर्ण है।

आपको आवश्यकता होगी

- इंटरनेट तक पहुंच;
- ट्रेडिंग टर्मिनल

अनुदेश

1 अंतरराष्ट्रीय मुद्रा बाजार में एक मुद्रा है विभिन्न राष्ट्रीय मुद्राएं बाजार सप्ताह में पांच दिन संचालित होता है: यह रविवार शाम 23:00 GMT पर खुलता है और शुक्रवार की शाम को 22:00 बजे बंद हो जाता है।

2 विदेशी मुद्रा पर मुद्रा विनिमय बहुत अलग है संगठनों और व्यक्तियों प्रमुख खिलाड़ियों में राज्य और बड़े निजी बैंकों का उल्लेख किया जा सकता है, उन्होंने मुद्रा आंदोलनों की मुख्य गतिशीलता निर्धारित की है। विशेष रूप से, राज्य बैंक एक निश्चित कॉरिडोर में अपनी मुद्राओं को बनाए रखते हैं।

3 निजी बैंक, एक नियम के रूप में, एक खरीद करते हैं और अपने ग्राहकों के आदेश पर विदेशी मुद्रा की बिक्री - वाणिज्यिक उद्यम इसके अलावा, वे मुनाफे के लिए अक्सर अपना सट्टा कारोबार करते हैं अंत में, विदेशी मुद्रा बाजार में कई कंपनियां हैं जो मुद्राओं के विनिमय मूल्य में परिवर्तन पर पूरी तरह से कमाते हैं।

4 इस बाजार में निजी सट्टेबाजों भी हैं, अच्छे हैं एक उदाहरण जॉर्ज सोरोस है, जो एक समय में ब्रिटिश पाउंड की बैंकिंग दर गिर कर इस अटकलों पर अरबों डॉलर कमाए। इसके अलावा, विदेशी मुद्रा पर सैकड़ों हजार छोटे व्यापारियों को भी, मुद्राओं के मूल्य में परिवर्तन पर पैसा बनाने की कोशिश कर रहे हैं।

5 विदेशी मुद्रा को अक्सर इंटरबैंक बाजार कहा जाता है, क्योंकि शुरुआत में लेनदेन बैंकों के बीच बिल्कुल ठीक हुए थे लेकिन इंटरनेट के आगमन के साथ, इसके प्रतिभागियों के चक्र में काफी विस्तार हुआ है। वर्तमान में, कोई व्यक्ति घर छोड़ने के बिना विदेशी मुद्रा पर काम कर सकता है, नेटवर्क के लिए एक आउटलेट होना काफी है। ब्रोकरेज कंपनियों या ब्रोकरेज सेवाओं को प्रदान करने वाले बैंकों के माध्यम से व्यापार किया जाता है

6 प्रत्यक्ष व्यापार के लिए उपयोग किया जाता है एक व्यापार टर्मिनल कंप्यूटर पर स्थापित एक विशेष कार्यक्रम है। टर्मिनल में आप व्यापारी को ब्याज की मुद्राओं की मुद्राओं के ग्राफ देख सकते हैं और कुछ पल में खरीद और बिक्री के लिए आपरेशन कर सकते हैं।

7 दिन के दौरान, विदेशी मुद्रा बाजार में मनाया जाता है गतिविधि की वृद्धि और गिरावट की अवधि यह इस तथ्य के कारण है कि अलग-अलग समय पर, कुछ क्षेत्रों में व्यापार से जुड़े होते हैं। इसलिए, प्रशांत सत्र (11:00 पूर्वाह्न मास्को समय पर) शुरू होता है, फिर एशिया व्यापार से जुड़ा होता है (एशियाई सत्र, 3:00)। तब यूरोप व्यापार में प्रवेश करता है (यूरोपीय सत्र, 10:00) अंत में, बाजार पर 16:00 बजे अमेरिका (अमेरिकी सत्र) है। निकटवर्ती सत्र ओवरलैप हो सकते हैं - उदाहरण के लिए, बाजार पर 16:00 से 20:00 तक तुरंत यूरोप और अमेरिका हैं 20:00 के बाद, जब यूरोप बंद हो जाता है (आखिरी एक लंदन छोड़ देता है), अमेरिका बाजार में राज करता है - जब तक कि पैसिफिक सत्र के अगले आक्रामक नहीं।

8 विदेशी मुद्रा बाजार में काम करने के लिए बहुत गंभीर आवश्यकता होती है वर्षों से हासिल ज्ञान बहुत से लोग, जिसकी जानकारी आप फॉरेक्स पर अच्छी तरह से कमा सकते हैं, अनुभव और ज्ञान के बिना व्यापार शुरू करते हैं। नतीजतन, वे अपना पैसा खो देते हैं यह समझना जरूरी है कि सट्टा व्यापार में एक साधारण सिद्धांत संचालित होता है - जो कि आप कमाते हैं, किसी को खोना होगा फॉरेक्स पर धन कहीं से नहीं उठता है - कोई इसे खो देता है, कोई जीत जाता है इस बाजार में आने वाले अधिकांश नए लोग अपने पैसे खो देते हैं।

नई इशू मार्किट: फंक्शन्स, मेथड्स ऑफ फ्लोटिंग नई इशू, सेबी गाइडलाइन्स फॉर आईपीओ, रिसेंट ट्रेंड्स इन नई इशू मार्किट

(New Issue Market: Functions, Methods of Floating New Issue, SEBI Guidelines for IPO, Recent trends in New Issue Market)

नई इशू मार्किट: फंक्शन्स, मेथड्स ऑफ फ्लोटिंग नई इशू,

(New Issue Market: Functions, Methods of Floating New Issue)

पूंजी बाजार शब्द उन सुविधाओं और संस्थानों की व्यवस्था को संदर्भित करता है जिनके माध्यम से दीर्घकालिक धन; ऋण और इक्विटी दोनों उठाए जाते हैं और निवेश किए जाते हैं। पूंजी बाजार में विकास बैंक, वाणिज्यिक बैंक और स्टॉक एक्सचेंज शामिल हैं। पूंजी बाजार को दो हिस्सों में विभाजित किया जा सकता है

(ए) प्राथमिक बाजार

(बी) माध्यमिक बाजार

प्राथमिक बाजार में नए मुद्दों को फ्लोट करने के तरीके

सार्वजनिक मुद्दा: जब कोई कंपनी ऑफर दस्तावेज (प्रॉस्पेक्टस) जारी करने के माध्यम से जनता को अपने शेयर (या डिबेंचर / बॉन्ड) को बेचकर (जारी) जारी करके धन जुटाने के लिए, इसे सार्वजनिक मुद्दा कहा जाता है।
प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (आईपीओ): जब एक (असूचीबद्ध) कंपनी पहली बार सार्वजनिक मुद्दा बनाती है और स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध शेयरों को प्राप्त करती है, तो सार्वजनिक मुद्दे को प्रारंभिक सार्वजनिक प्रस्ताव (आईपीओ) कहा जाता है।

सार्वजनिक प्रस्ताव (एफपीओ): जब एक सूचीबद्ध कंपनी पूंजी जुटाने के लिए एक और सार्वजनिक मुद्दा बनाती है, तो इसे फॉलो-ऑन ऑफर (एफपीओ) कहा जाता है।

बिक्री के लिए प्रस्ताव: संस्थागत निवेशक जैसे उद्यम निधि, निजी इक्विटी फंड इत्यादि, असूचीबद्ध कंपनी में निवेश करते हैं जब यह बहुत छोटा होता है या शुरुआती चरण में होता है। इसके बाद, जब कंपनी बड़ी हो जाती है, तो ये निवेशक ऑफ़र दस्तावेज़ जारी करने के माध्यम से अपने शेयर जनता को बेचते हैं और कंपनी के शेयर स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होते हैं। इसे बिक्री के लिए ऑफ़र कहा जाता है। इस मुद्दे की आय मौजूदा निवेशकों को जाती है, न कि कंपनी के लिए।

निजी प्लेसमेंट: पूंजी जुटाने के लिए अपेक्षाकृत कम निवेशकों को प्रतिभूतियों की बिक्री। निजी प्लेसमेंट में शामिल निवेशक आमतौर पर बड़े बैंक, म्यूचुअल फंड, बीमा कंपनियां और पेंशन फंड होते हैं। निजी प्लेसमेंट सार्वजनिक मुद्दे के विपरीत है, जिसमें खुले बाजार पर बिक्री के लिए प्रतिभूतियां उपलब्ध कराई जाती हैं।

भारतीय डिपोजिटरी रसीद जारी करना (आईडीआर): विदेश में स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध एक विदेशी कंपनी भारतीय निवेशकों से शेयर (जारी) शेयर बेचकर पैसा बढ़ा सकती है। ये शेयर एक विदेशी संरक्षक बैंक द्वारा ट्रस्ट में आयोजित किए जाते हैं जिसके खिलाफ एक घरेलू संरक्षक बैंक भारतीय डिपॉजिटरी रसीद (आईडीआर) नामक एक उपकरण जारी करता है। आईडीआर को स्टॉक एक्सचेंज में किसी अन्य शेयर की तरह कारोबार किया जा सकता है और धारक स्वामित्व के अधिकारों के हकदार है लाभांश।

राइट्स इश्यू (आरआई): जब कोई कंपनी अपने मौजूदा शेयरधारकों से नए शेयर / डिबेंचरों को बेचकर (जारी) करके धन जुटाने के लिए इसे अधिकार जारी करती है। राइट्स इश्यू के लिए ऑफ़र दस्तावेज़ को ऑफ़र लेटर कहा जाता है और यह मुद्दा 30-60 दिनों के लिए खुला रहता है। मौजूदा शेयरधारक पहले से आयोजित शेयरों की संख्या के अनुपात में नए शेयरों के लिए आवेदन करने के हकदार हैं।

बोनस इश्यू: कंपनी अपने मौजूदा शेयरधारकों को नए शेयर जारी करती है। चूंकि नए शेयर कंपनी के रिजर्व (संचित मुनाफे) से जारी किए जाते हैं, इसलिए शेयरधारकों को नए शेयर प्राप्त करने के लिए कंपनी को कोई पैसा नहीं देना पड़ता है।

सेबी गाइडलाइन्स फॉर आईपीओ (SEBI Guidelines for IPO)

आईपीओ के लिए नियम

जनता की भागीदारी को देखते हुए, खासकर छोटे शेयरधारकों के हितों का ध्यान रखने के लिए सेबी कंपनियों के कामकाज पर नजर रखती है, ताकि वे उचित और निष्पक्ष तरीके से अपना कारोबार करती रहें। उदाहरण के लिए, कंपनियों में ऐसे निदेशक-मण्डल होने चाहिए, जिनमें कम से कम आधे सदस्य प्रवर्तकों/कम्पनी से अलग हों। साथ ही कंपनियों को लिस्टिंग समझौतों का पालन करना होता है, जिसके तहत कम्पनियों को निर्धारित समयावधि और विशेष प्रारूपों में विभिन्न सूचनाएं प्रकट करनी होती हैं।

आईपीओ/एफपीओ में सेबी की भूमिका

आईपीओ लाने वाली हर कंपनी को सेबी की समीक्षा के लिए मसौदा प्रस्ताव जमा करना आवश्यक होता है। 100 करोड़ रुपए तक के आकार वाले इश्यू के संबंध में मसौदा प्रस्ताव दस्तावेज़, जारी करने वाली कंपनी के पंजीकृत कार्यालय के अंतर्गत आने वाले बोर्ड के संबंधित क्षेत्रीय कार्यालय में दाखिल किया जाएगा। विभिन्न स्तरों पर सेबी के अधिकारियों द्वारा डीआईपी के दिशा-निर्देशों के तहत प्रस्ताव प्रपत्रों की जांच की जाती है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि हर आवश्यक जानकारी का खुलासा मसौदा प्रस्ताव दस्तावेज़ों में किया गया है। सेबी के निगरानी पत्र की वैधता केवल तीन महीने की होती है। यानि तीन महीने की अवधि के भीतर कंपनी को अपना इश्यू लाना होता है।

इसका अर्थ यह नहीं है कि सेबी ने किसी इश्यू की सिफारिश की है

सेबी कभी किसी इश्यू की सिफारिश नहीं करती है और न ही किसी कम्पनी की जिम्मेदारी लेती है। यह किसी योजना या परियोजना के प्रस्ताव में दिये गए बयान की शुद्धता या वित्तीय सुदृढ़ता संबंधी प्रस्ताव दस्तावेजों में अपनी राय भी व्यक्त नहीं करती है।

क्या सेबी प्रस्ताव दस्तावेज की सामग्री का अनुमोदन करती है?

यह कभी नहीं समझा जाना चाहिए कि प्रस्ताव दस्तावेज सेबी ने प्रस्तुत किये हैं या सेबी ने इसे मंजूरी दी है। लीड मैनेजर द्वारा प्रमाणित प्रस्ताव दस्तावेज में किए गए खुलासे आमतौर पर पर्याप्त मात्रा में होते हैं। निवेशक हितों के संरक्षण के लिए कम्पनियों के लिए बने सूचना प्रकट करने सम्बन्धी सेबी के दिशा-निर्देश कुछ ही समय के लिए लागू रहते हैं। निवेशकों की सुविधा के लिए प्रस्तावित इश्यू में निवेश करने का निर्णय लेने में मदद के लिए सेबी अपने दिशा-निर्देश जारी करती है। क्या सेबी की मंजूरी मिल जाने से निवेशकों के लिए आईपीओ सुरक्षित हो जाते हैं? आईपीओ में निवेश करने के लिए निवेशकों को दस्तावेजों में प्रकट जानकारी के आधार पर अपना निर्णय स्वयं लेना चाहिए। सेबी किसी भी कम्पनी या इश्यू में भागीदार नहीं होता है। इसलिए फंड निवेशकों को ही इश्यू के माध्यम से निवेश प्रस्ताव की गारंटी माना जाना चाहिए। हालांकि, निवेशकों को आम तौर पर निवेश पर विचार करने से पहले जोखिम कारकों सहित इश्यू से संबंधित तमाम तथ्यों का अध्ययन करने की सलाह दी जाती है। उन्हें किसी अनधिकृत युक्ति या अनधिकृत समाचार से सतर्क रहने की चेतावनी दी जाती है।

बाजार नियामक ने अधिग्रहण के नियमों में संशोधन को अपनी मंजूरी दे दी, जिसमें कंपनियों को शेयर निविदा अवधि के दौरान ओपन ऑफर प्राइस में ऊपर की तरफ संशोधन के लिए अतिरिक्त वक्त मिलेगा। इसके अलावा, बायबैक के नियमों में संशोधन को भी मंजूरी दी गई है।

अब आईपीओ के 2 दिन पहले प्राइस बैंड की घोषणा

अब आईपीओ के कीमत दायरे (प्राइस बैंड) की घोषणा आईपीओ लाने के दो कार्य दिवस पहले किया जा सकता है। मौजूदा समय में आईपीओ लाने से पांच कार्य दिवस पहले प्राइस बैंड की घोषणा करनी होती है।

अधिग्रहण, बायबैक नियमों में संशोधन को सेबी की मंजूरी

सेबी ने सुरक्षा कानून के तहत तीसरे पक्ष का काम करने वाली कंपनियों को नियंत्रित करने वाले विभिन्न नियमों में संशोधन की योजना बनाई है। बाजार नियामक इस संबंध में एक कंसल्टेशन पेपर जारी करेगा। प्रस्ताव को सेबी के बोर्ड ने बैठक के दौरान मंजूरी दी।

जानकारी न देने वाली फार्मा कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई

सेबी ने कहा है कि वह उन औषधि कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई करेगा, जो अमेरिकी खाद्य सुरक्षा प्रशासन (यूएसएफडीए) द्वारा किए गए निरीक्षण व रिपोर्ट की जानकारी उसे नहीं देंगे। अजय त्यागी ने कहा कि कंपनियों से जुड़ी वैसी जानकारियों को अभी से ही साझा करना आवश्यक है, जिसका असर संभावित तौर पर कंपनी के शेयरों की कीमत व निवेशकों पर पड़ सकता है।

रीसेंट ट्रेंड्स इन नई इश्यू मार्केट (Recent trends in New Issue Market)**TECHNICAL ANALYSIS – TREND**

TECHNICAL ANALYSIS में 'TREND' का मतलब है, CANDLES या STOCK PRICE POINT को जोड़ने से बनने वाला DIRECTION – (दिशा)

यह TECHNICAL ANALYSIS में सबसे महत्वपूर्ण CONCEPTS अवधारणाओं में से एक है। और हम TECHNICAL ANALYSIS में इसी ट्रेंड्स को समझने का प्रयास करते हैं।

ट्रेंड के बारे में ऐसा माना जाता है, कि जो भी ट्रेंड्स बना हुआ है, वो आगे भी बना रहेगा, जब तक कि कोई दूसरा ट्रेंड न आये,

यानी अगर कोई STOCK UP TREND LINE दिखा रहा है, मतलब वो कुछ समय और हो सकता है UPTREND यानी (तेजी) बना रहेगा,

यानी अगर कोई STOCK DOWN TREND LINE दिखा रहा है, मतलब वो कुछ समय तक हो सकता है DOWNTREND (मंदी)में रहेगा, और BULLISH बना रहेगा.

अगर सीधा सीधा कहा जाये तो मार्केट में , तेजी और मंदी को एक नजर में समझने के लिए हम ट्रेंड लाइन का इस्तेमाल करते है.

TRENDS LINE क्या होता है?

एक चार्ट पे किसी STOCK के PRICE को उसके TIME FRAME के अनुसार उसके अलग अलग PRICE POINT को मिलाते हुए एक लाइन खिंची जाती है, इसी लाइन को STOCK की ट्रेंड लाइन कहते है.

ट्रेंड लाइन के प्रकार –

पुरे TECHNICAL ANALYSIS में ट्रेंड लाइन तीन प्रकार की होती है,

1. UP TREND LINE

जब TREND LINE ऊपर की तरफ जाये तो कह सकते है कि STOCK , UP TREND कहते है अप ट्रेंड को बुलिश ट्रेंड (तेजी का दौर) भी कहा जाता है,

2. DOWN TREND LINE

जब ट्रेंड लाइन नीचे की तरफ जाये तो कह सकते है कि STOCK , डाउन ट्रेंड में है, डाउन ट्रेंड को बिअरिश ट्रेंड (मंदी का दौर) भी कहा जाता है,

3. SIDEWAYS TREND LINE

जब TREND LINE ना ऊपर जाये और ना ही नीचे, बल्कि सीधी लाइन बन जाये तो इस तरह कि TREND LINE को SIDEWAYS ट्रेंड (करेक्शन, CORRECTION)भी कहते है,

TIMES OF TRENDS- TRENDS कितने समय के लिए होता है,

अगर बात की जाये कि, कोई TREND कितने समय के लिए होता है, तो हमें एक चीज़ समझनी चाहिए कि, इसका कोई निश्चितता नहीं है कि TREND कितने समय के लिए बना रहेगा,

उतार चढ़ाव तो लगे ही रहते है, और कोई भी TREND उस STOCK से जुडी किसी खास बात से कभी भी टूट सकता है, वो खास बात कुछ भी सकता है, जो लोगो को लगता है कि उस NEWS का उस कंपनी के STOCK पर प्रभाव रहेगा.

इस तरह के MEDIUM TERM TRENDS कि पहचान करने के लिए आपको पिछले 2 से 3 साल का चार्ट देखना पड़ता है.

3. LONG TERM TRENDS –

अगर किसी स्टॉक का ट्रेंड एक साल या उस भी ज्यादा समय के लिए बना हुआ है, तो इस तरह के ट्रेंड को LONG TERM TREND कहते है.

इस तरह के LONG TERM TRENDS कि पहचान करने के लिए आपको पिछले 2 साल से अधिक का चार्ट देखना पड़ता है

TRENDS IS YOUR FRIENDS

ट्रेंड्स के बारे में एक चीज़ समझना जरूरी है, कि SHARE MARKET में TREND IS YOUR FRIEND यानी ट्रेंड ही हमारा इकलौता दोस्त होता है, और कोई नहीं, और इसलिए हमें हमेशा अपने ट्रेंड के साथ बने रहना चाहिए, आप और किसी चीज़ पे विस्वास करने से पहले एक बार ट्रेंड जरूर चेक कर ले,

ऐसा इसलिए भी कहा जाता है क्योंकि MARKET ज्यादातर ट्रेंड को ही FOLLOW करता है, बस जैसा ही कोई ट्रेंड बनता दिखे, हमें उसके साथ साथ अपने अपने TRADES लेने चाहिए, और MARKET में ट्रेंड्स बदलता रहता है, बस बदलते ट्रेंड के साथ आप भी बने रहे, यही इस MARKET में सफलता का बहुत बड़ा मंत्र है.

अगर आप बिना ट्रेंड को समझे ही TRADE ले रहे हैं, तो आप इस MARKET के नियम के खिलाफ TRADE ले रहे हैं, और आपको ज्यादातर मौकों पे नुकसान उठाना पड़ सकता है.

TRENDS का महत्व

ट्रेंड वास्तव में TECHNICAL ANALYSIS का मुख्य आधार है, हम TECHNICAL ANALYSIS का STUDY इस लिए करते हैं कि हमें STOCK के पिछले ट्रेंड के आधार पर आने वाले ट्रेंड के बारे में ADVANCE में जानकर ट्रेंड के साथ जुड़े, और फायदा उठाये.

इकाई – II: शेयर बाजार**(Equity Market)**

इक्विटी शेयर क्या है? इक्विटी शेयर को आम बोलचाल में शेयर या स्टॉक भी कहा जाता है। इससे किसी कंपनी में अमुक अंश की हिस्सेदारी व्यक्त होती है। इक्विटी शेयरधारक कंपनी के नफे-नुकसान में, अपने शेयरों की संख्या के अनुपात में व्यवसायिक हिस्सेदार होता है। इसके धारक को कंपनी के सदस्य का दर्जा प्राप्त होने के साथ कंपनी के प्रस्तावों पर अपना विचार व्यक्त करने और वोट देने का अधिकार प्राप्त है।

राइट्स इश्यू/राइट्स शेयर किसे कहते हैं? जब कोई कंपनी अपने मौजूदा शेयरधारकों को उनकी अंशधरिता के अनुपात में नई शेयर देने की पेशकश करती है तो इसे राइट्स इश्यू या राइट्स शेयर कहा जाता है। शेयरधारकों को राइट शेयर खरीने का अधिकार मिलता है। लेकिन यह उसकी इच्छा पर निर्भर है कि वह इसका उपयोग करे या न करे। राइट्स इश्यू में कंपनी अन्य प्रतिभूतियां भी जारी कर सकती है।

इक्विटी शेयरधारकों के अधिकार क्या हैं? इक्विटी शेयरधारक कंपनी के हिस्सेदार ही कहलाते हैं। इसलिए इन्हें कंपनी के वित्तीय परिणाम और आर्थिक स्थिति को जानने का अधिकार है। इसके लिए उसे प्रतिवर्ष सम्पूर्ण विवरण सहित बेलेंसशीट और वार्षिक रिपोर्ट प्राप्त करने का अधिकार है। कंपनी को अपने मुख्य कारोबार के दैनिक कामकाज के विवरण को छोड़कर, किसी भी नीति को बदलने, नए शेयर जारी करने और अन्य महत्वपूर्ण कामों के लिए शेयरधारकों की अनुमति लेनी पड़ती है। इसके लिए साल में कम से कम एक बार वार्षिक सभा करनी आवश्यक है जिसमें निदेशक बोर्ड की बैठकों में पारित प्रस्ताव रखने पड़ते हैं। वार्षिक सभा की सूचना के साथ इन प्रस्तावों की प्रति भी शेयरधारकों को इस तरह भेजी जाती है ताकि वह उन्हें वार्षिक सभा से पहले मिल जाए। शेयरधारकों को इन प्रस्तावों के पक्ष या विपक्ष में अपने विचार रखने व वोट देने का अधिकार है। कंपनी की लेखा पुस्तकों या अन्य जरूरी दस्तावेजों को जांचने का अधिकार भी शेयरधारकों को है।

बोनस शेयर मतलब क्या? कंपनी अपने वार्षिक लाभ को सम्पूर्ण रूप से लाभांश या डिविडेंड के रूप में वितरित नहीं करती है। इसका कुछ हिस्सा वह संचय खाते में जमा करती जाती है जो कुछ वर्षों में एक बड़ी राशि बन जाती है। कंपनी अपनी भावी विकास योजना या अन्य योजनाओं के लिए इस राशि को पूंजी खाते में हस्तांतरित करने के लिए इतनी ही राशि के शेयर बतौर बोनस अपने मौजूदा अंशधारकों को अनुपातिक आधार पर दे देती है। इन शेयरों के लिए शेयरधारकों से कोई मूल्य नहीं लिया जाता।

प्रेफरेंस शेयर किसे कहते हैं? इस प्रकार के शेयर रखनेवाले शेयरधारकों को प्रतिवर्ष पूर्व निर्धारित दर से लाभांश दिया जाता है। यह लाभांश कंपनी के लाभ में से दिया जाता है। लेकिन इसका भुगतान इक्विटी शेयरधारकों को लाभांश देने से पहले किया जाता है। यदि कंपनी का दिवाला निकलता है तो प्रेफरेंस शेयरधारक को उसका हिस्सा इक्विटी शेयरधारकों से पहले, लेकिन बॉण्ड होल्डरों, डिबेंचरधारकों जैसे लेनदारों को चुकाने के बाद, मिलने का अधिकार है।

क्युमुलेटिव प्रेफरेंस शेयर क्या है? ऐसे शेयरधारकों को पूर्व निर्धारित दर पर प्रतिवर्ष लाभांश नहीं दिया जाता बल्कि यह कंपनी के पास जमा होता रहता है। जब कभी भी कंपनी अपने इक्विटी शेयरधारकों को लाभांश देती है तो उससे पहले क्युमुलेटिव प्रेफरेंस शेयरधारकों को लाभांश दिया जाता है। ऐसी स्थिति में इनको उक्त अवधि तक का पूरा संचित लाभांश दिया जाता है।

क्युमुलेटिव कन्वर्टिबल प्रेफरेंस शेयर किसे कहते हैं? यह एक प्रकार का प्रेफरेंस शेयर ही है जिसमें निर्धारित दर पर लाभांश संचित होते हुए एक साथ ही चुकाया जाता है। लेकिन इसमें एक निर्धारित अवधि भी होती है जिसके पूरा होने पर उन्हें संचित लाभांश का भुगतान तो कर ही दिया जाता है, साथ ही ये शेयर स्वतः इक्विटी शेयर में रूपांतरित हो जाते हैं।

आप इक्विटी शेयर कैसे प्राप्त करें ? आप प्राइमरी मार्केट से पब्लिक इश्यू (आईपीओ या एफपीओ) के दौरान आवेदन करके या फिर सीधे शेयर बाजार के मान्यताप्राप्त ब्रोकर के माध्यम से सेकेंडरी मार्केट में शेयर खरीद सकते हैं।

प्राइमरी मार्केट क्या है ? कोई कंपनी जब अपनी परियोजनाओं के वित्त पोषण के लिए पब्लिक इश्यू जारी करती है तो इस ऑफर के माध्यम से आवेदन करके शेयर पाने और कंपनी द्वारा शेयर आवंटित करके उनको सूचीबद्ध कराने तक की सम्पूर्ण प्रक्रिया/व्यवहार प्राइमरी मार्केट के कार्यक्षेत्र में आता है। **सेकेंडरी मार्केट किसे कहते हैं?** कंपनी पब्लिक इश्यू द्वारा आवेदकों को शेयर आवंटित करने के बाद उन्हें पंजीकृत स्टॉक एक्सचेंज में listed करवाती है। LISTED के बाद पब्लिक इश्यू यानी शुरुआती पब्लिक (आईपीओ) या फॉलो-ऑन पब्लिक ऑफर (एफपीओ) के जरिए प्राइमरी मार्केट में आवंटित किए गए शेयरों की खरीद-बिक्री की जा सकती है और इसी व्यवहार/कारोबार को सेकेंडरी मार्केट में सम्मिलित किया गया है। साधारण भाषा में जब कोई व्यक्ति आवेदन करके कंपनी से सीधे शेयर लेता है तो यह प्राइमरी मार्केट का व्यवहार कहलाता है। पर जब यही शेयर वह अन्य किसी शेयरधारक से खरीता है या अन्य को बेचता है तो यह व्यवहार सेकेंडरी मार्केट कहलाता है। शेयर बाजार को ही तकनीकी रूप से सेकेंडरी मार्केट कहते हैं। प्राइमरी व सेकेंडरी मार्केट को मिलाकर बनता है देश का पूंजी बाजार।

इक्विटी बाजार में खिलाड़ी : डिपॉजिटरी संस्थान और बीमा कंपनियां

डिपॉजिटरी संस्थाएं क्या हैं?

डिपॉजिटरी संस्थान कई अलग-अलग प्रकार में आते हैं कभी भी आप किसी को उम्मीद करते हैं कि वह व्यक्ति आपके लिए इसे रखेगा और इसे वापस दे देगा, तो आप किसी डिपॉजिटरी संस्थान से काम कर रहे हैं या बहुत मूर्खता से काम कर रहे हैं। *डिपॉजिटरी संस्थाएं* एक ही मूल तरीके से सभी फ्रंक्शन:

- वे आपके पैसे स्वीकार करते हैं और आमतौर पर समय के साथ ब्याज देते हैं, हालांकि कुछ खाते ब्याज भुगतान के बदले में जमाकर्ताओं को आकर्षित करने के लिए अन्य सेवाएं प्रदान करते हैं।
- अपने पैसे को पकड़ते समय, वे अन्य लोगों या संगठनों को बंधक या अन्य ऋण के रूप में उधार देते हैं और वे आपको भुगतान की तुलना में अधिक ब्याज उत्पन्न करते हैं।
- जब आप अपने पैसे वापस चाहते हैं, तो उन्हें इसे वापस देना होगा। सौभाग्य से, वे आम तौर पर पर्याप्त जमा होते हैं कि वे आपको जो चाहें वापस वापस कर सकते हैं। यह हमेशा सच नहीं है, जैसा कि सभी महान अवसाद के दौरान देखा था, लेकिन यह लगभग हमेशा मामला है।
- इसके अलावा, भविष्य में एक और महान अवसाद के खिलाफ रक्षा करने के लिए अब सुरक्षा उपायों की स्थापना की गई है (कम से कम एक ऐसा होता है क्योंकि बैंक अपने धनियों को वापस भुगतान करने के लिए हाथों से अधिक पैसे उधार देते हैं)।

तीन मुख्य प्रकार के डिपॉजिटरी संस्थान हैं वाणिज्यिक बैंक, बचत संस्थान और क्रेडिट यूनियन।

वाणिज्यिक बैंक

वाणिज्यिक बैंक आसानी से सबसे अधिक प्रकार की डिपॉजिटरी संस्था है। वे लाभकारी निगम हैं जो आम तौर पर निजी निवेशकों द्वारा स्वामित्व में होते हैं वे अक्सर उपभोक्ताओं और दुनिया भर के निगमों के लिए कई प्रकार की सेवाएं प्रदान करते हैं।

अक्सर बैंक का आकार यह प्रदान करता है कि सेवाओं की सटीक गुंजाइश निर्धारित करता है। उदाहरण के लिए, छोटे समुदाय या क्षेत्रीय बैंक आमतौर पर उपभोक्ता बैंकिंग और लघु-व्यवसाय ऋण देने के लिए अपनी सेवाएं

सीमित करते हैं, जिसमें साधारण जमा, बंधक और उपभोक्ता ऋण (जैसे कि कार, घर इक्विटी, और इतने पर), लघु-व्यवसाय बैंकिंग, व्यापार ऋण, और बाजारों की एक सीमित सीमा के साथ अन्य सेवाएं बड़े राष्ट्रीय या वैश्विक बैंक अक्सर बड़ी कंपनियों के लिए धन प्रबंधन, विदेशी मुद्रा सेवाएं, निवेश और निवेश बैंकिंग और रात भर इंटरबैंक ऋण जैसे अन्य बैंकों जैसे सेवाएं भी करते हैं। बड़े वाणिज्यिक बैंकों में सभी डिपॉजिटरी संस्थानों की सेवाओं का सबसे विविध सेट है

बचत संस्थान

क्या आपने कभी बचत बैंक या बचत संघ से पारित किया है? ये दोनों रूप हैं *बचत संस्थान*, जो उपभोक्ता बंधक ऋण पर प्राथमिक ध्यान देते हैं। कभी-कभी बचत संस्थाएं निगमों के रूप में तैयार की जाती हैं; दूसरी बार वे 99 99> परस्पर सहकारी समितियों के रूप में स्थापित होते हैं, *जहां खाते में नकदी जमा होती है, संस्था में आपको स्वामित्व का एक हिस्सा खरीदता है।* निगम अक्सर इन संस्थानों का उपयोग नहीं करते हैं, इसलिए, मैं उन्हें पुस्तक के बाकी हिस्सों में शामिल नहीं करता है

क्रेडिट यूनियन

आपसी सहकारी समितियां हैं, जिसमें एक विशेष क्रेडिट यूनियन में जमा जमा करना उस क्रेडिट यूनियन में स्टॉक खरीदने जैसा है उस क्रेडिट यूनियन की कमाई उन सभी को वितरित की जाती है जिनके पास लाभांश के रूप में एक खाता है (दूसरे शब्दों में, जमाकर्ताओं का आंशिक मालिक हैं)। क्रेडिट यूनियनों उपभोक्ता सेवाओं पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, इसलिए मैं इन पुस्तकों में या यहाँ कहीं और उनके बारे में चर्चा नहीं करता। हालांकि, उनके डिजाइन को समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि मुस्लिम देशों में वाणिज्यिक बैंकों में यह एक ही प्रारूप बहुत लोकप्रिय है, जहां

शरिया कानून परंपरागत रूपों को चार्ज या भुगतान करने पर रोकता है। नतीजतन, यू.एस. में एक क्रेडिट यूनियन का ढांचा दुनिया के दूसरे हिस्सों में वाणिज्यिक बैंकों द्वारा अपनाया जाता है, इसलिए इस ढांचे की बुनियादी जागरूकता अंतरराष्ट्रीय कॉर्पोरेट बैंकिंग के लिए उपयोगी हो सकती है।

बीमा कंपनियां

बीमा (इंश्योरेंस) उस साधन को कहते हैं जिसके द्वारा कुछ शुल्क (जिसे प्रीमियम कहते हैं) देकर हानि का जोखिम दूसरे पक्ष (बीमाकार या बीमाकर्ता) पर डाला जा सकता है। जिस पक्ष का जोखिम बीमाकार पर डाला जाता है उसे 'बीमाकृत' कहते हैं। बीमाकार आमतौर पर एक कंपनी होती है जो बीमाकृत के हानि या क्षति को बांटने को तैयार रहती है और ऐसा करने में वह समर्थ होती है।

बीमा एक प्रकार का अनुबंध (ठेका) है। दो या अधिक व्यक्तियों में ऐसा समझौता जो कानूनी रूप से लागू किया जा सके, अनुबंध कहलाता है। बीमा अनुबंध का व्यापक अर्थ है कि बीमापत्र (पॉलिसी) में वर्णित घटना के घटित होने पर बीमा करनेवाला एक निश्चित धनराशि बीमा करानेवाले व्यक्ति को प्रदान करता है। बीमा करानेवाला जो सामयिक प्रव्याजि (बीमाकिस्त, प्रीमियम) बीमा करनेवाले को देता रहता है, वही इस अनुबंध का प्रतिदेय है। 'बीमा' शब्द फारसी से आया है जिसका भावार्थ है - 'जिम्मेदारी लेना'। डॉ० रघुवीर ने इसका अनुवाद किया है - 'आगोप'। उसका अंग्रेजी पर्याय "इंश्योरेंस" (Insurance) है।

बीमा वास्तव में बीमाकर्ता और बीमाकृत के बीच अनुबंध है जिसमें बीमाकर्ता बीमाकृत से एक निश्चित रकम (प्रीमियम) के बदले किसी निश्चित घटना के घटित होने (जैसे कि एक निश्चित आयु की समाप्ति या मृत्यु की स्थिति में) पर एक निश्चित रकम देता है या फिर बीमाकृत की जोखिम से होने वाले वास्तविक हानि की क्षतिपूर्ति करता है। बीमा के आधार के बारे में सोचने पर पता चलता है कि बीमा एक तरह का सहयोग है जिसमें सभी बीमाकृत लोग, जो जोखिम का शिकार हो सकते हैं, प्रीमियम अदा करते हैं जबकि उनमें से सिर्फ कुछ (बहुत कम) को ही, जो वास्तव में नुकसान उठाते हैं, मुआवजा दिया जाता है। वास्तव में जोखिम की संभावना वालों की संख्या अधिक

होती है लेकिन किसी निश्चित अवधि में उनमें से केवल कुछ को ही नुकसान होता है। बीमाकर्ता (कंपनी) बीमाकृत पक्षों के नुकसान को शेष बीमाकृत पक्षों में बांटने का काम करती है।

बीमा किस स्थिति में हो सकता है?

जुआ खेलने या बाजी लगाने में भी दो व्यक्ति यही समझौता करते हैं कि अमुक घटना घटित होने पर दूसरा व्यक्ति अमुक धनराशि अदा करेगा। लेकिन उसे बीमा नहीं कहा जा सकता क्योंकि स्वयं उस घटना के घटित होने या न होने में उस बाजी लगानेवाले का कोई स्वतंत्र हित नहीं होता। अस्तु, बीमा अनुबंध के लिए सामान्य अनुबंध के तत्वों के साथ-साथ बीमाहित (Insurable Interest) का अस्तित्व आवश्यक है। उदाहरणार्थ क के जीवन का बीमा कोई अजनबी व्यक्ति ख नहीं करा सकता क्योंकि क के जीवित रहने या न रहने में ख का कोई स्वतंत्र हित नहीं है। लेकिन यदि ख क की पत्नी हो तो क के जीवित रहने में ख का हित निहित होने से ख द्वारा क के जीवन का बीमा करना नियमानुकूल होगा।

बीमा हित का अर्थ व्यापक है। पति पत्नी के जीवित रहने में एक दूसरे का हित तो स्पष्ट ही है। कर्जदार के जीवन में महाजन का हित भी वैसा ही मान्य है। इसी प्रकार संपत्ति बीमा के लिए बीमाहित उस संपत्ति के स्वामी को तो है ही। यह हित उस व्यक्ति को भी उपलब्ध हो जाता है, जिसे किसी अनुबंध के अंतर्गत कोई संपत्ति उपलब्ध होती है। यही नहीं, संपत्ति पर कब्जा मात्र होने से, भले ही वह कब्जा गैरकानूनी हो, बीमाहित उपलब्ध हो जाता है। उदाहरणार्थ अगर किसी दिवालिये के पास उसके कब्जे में कोई संपत्ति है, भले ही वह अधिकर स्वतः गैरकानूनी हो क्योंकि दिवाला निकलने के बाद उसकी सारी संपत्ति पर अधिकारी अभिहस्ताकिनी का अधिकार हो जाता है - किंतु उस संपत्ति का बीमा कराने के लिए उस दिवालिये को भी अधिकारी मान लिया जाता है। किसी अनुबंध द्वारा बीमा हित उत्पन्न होने का आधार उत्तरदायित्व अथवा हित दोनों हो सकते हैं। उदाहरणार्थ जब कोई व्यक्ति कोई मकान किराए पर लेता है तो उस मकान की हिफाजत का कोई उत्तरदायित्व उस पर नहीं होता लेकिन चूंकि उस अनुबंध से किराएदार को सुरक्षा की सुविधा उपलब्धि होती है अतः उस मकान की सुरक्षा के बीमे के लिए भी उस किराएदार को बीमा हित उपलब्ध हो जाता है।

बीमा अनुबंध के लिए बीमा हित की आवश्यकता उक्त अनुबंध की वैधता आँकने के लिए तो है ही, क्षतिपूर्ति के नियमों का पालन करने के लिए भी यह आवश्यक है। इस संबंध में अंग्रेजी विधि (नियम) और भारतीय विधि में कुछ अंतर है। अंग्रेजी विधि के अनुसार (समुद्र बीमा विधि 1906 और जीवन बीमा विधि 1774) आगोप्य हित का वस्तुतः अस्तित्व आवश्यक है। किंतु भारतीय विधि में ऐसा नहीं है। भारतीय अनुबंध विधि की धारा 30 के अनुसार चूंकि जुआ या शर्त बाजी आदि के समझौते अवैध करार दिए गए हैं इसलिए बीमाहित का अस्तित्व वस्तुतः न भी हो किंतु उसे उपलब्ध करने की उचित आधार पर आशा हो तो भी वह बीमा अनुबंध की वैधता के लिए पर्याप्त है।

बीमा अनुबंध का दूसरा प्रमुख आधार सद्भाव एवं निष्कपटता है। अतः यह आवश्यक है कि दोनों पक्ष (बीमा करनेवाला तथा बीमा करानेवाला) बीमा विषयक सभी तथ्य प्रगट कर दें। प्रगट कर देने का अर्थ यही है कि जान बूझकर कुछ छिपाया न जाए। यदि कोई सार तथ्य प्रगट न किया गया हो तो दूसरा पक्ष उक्त अनुबंध से मुक्ति प्राप्त कर सकता है।

इस संबंध में भी अंग्रेजी और भारतीय विधि नियमों में कुछ अंतर है। भारतीय बीमा विधि की धारा 45 के अनुसार जीवन बीमा में अनजाने में, जानबूझकर तथा बेईमानी की इच्छा से यदि कोई गलतबयानी हो जाए तो वह क्षम्य मानी गई है। लेकिन सामान्य विधि (अंग्रेजी कानून) के अनुसार अनजाने में भी कोई गलतबयानी उस अनुबंध को प्रभावित कर देती है।

बीमा की विशेषताएँ एवं प्रकृति

1. **जोखिम से सुरक्षा** - बीमा जोखिमों से का सशक्त उपाय है। जीवन में व्याप्त सभी अनिश्चितताओं से व्यक्ति को चिन्तामुक्त करता है। ये जोखिमों जीवन, स्वास्थ्य, अधिकारों तथा वित्तीय साधनों, सम्पत्तियों से सम्बन्धित हो सकती है। अतः इन सभी जोखिमों से सुरक्षा का एक उपाय बीमा ही है।
2. **जोखिमों को फैलाने का तरीका** - बीमा में सहकारिता की भावना के आधार पर “एक सब के लिए व सब एक के लिए कार्य किया जाता है। समान प्रकार की जोखिमों से घिरे व्यक्तियों को एकत्रित कर एक कोष का निर्माण किया जाता है ताकि एक व्यक्ति की जोखिम समस्त सदस्यों में बँट जाये व किसी एक सदस्य को जोखिम उत्पन्न होने पर उस कोष से उस सदस्य विशेष को भुगतान कर दिया जाता है।
3. **जोखिम का बीमितों से बीमाकर्ता को हस्तान्तरण** - बीमा में समस्त बीमितों की जोखिमों को बीमाकर्ता को अन्तरण कर दिया जाता है। बीमाकर्ता द्वारा बीमित को हानि होने पर निश्चित भुगतान कर दिया जाता है।
4. **बीमा एक प्रक्रिया** - बीमा एक प्रक्रिया भी है जो पूर्व निर्धारित विधि से संचालित की जाती है। पहले बीमित अपनी जोखिम का अन्तरण बीमाकर्ता को निश्चित प्रीमियम के बदले करता है तत्पश्चात् बीमा कर्तव्यता द्वारा उस जोखिम के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान की जाती है।
5. **बीमा एक अनुबन्ध** - बीमा में वैधानिकता का गुण होने से यह एक वैध अनुबन्ध है। इसमें बीमित द्वारा बीमाकर्ता को प्रस्ताव दिया जाता है व बीमाकर्ता द्वारा स्वीकृति देने पर निश्चित प्रतिफल (प्रीमियम) के बदले दोनों के मध्य एक वैध अनुबन्ध निर्मित होता है। जिसमें एक निश्चित घटना के घटित होने पर बीमाकर्ता उसकी हानि की पूर्ति करने का वचन देता है।
6. **बीमा सहकारी तरीका है** - बीमा सहकारिता की भावना पर आधारित है। समान प्रकार की जोखिमों से घिरे व्यक्ति एक निश्चित कोष में अंशदान करते हैं, उसमें से किसी भी सदस्य को जोखिम उत्पन्न होने पर उस कोष से भुगतान कर दिया जाता है। इस प्रकार “सब एक के लिए व एक सब के लिए की भावना पर कार्य किया जाता है।
7. **हानियों' जोखिमों को निश्चित करना** - बीमा में जोखिमों को समाप्त नहीं किया जा सकता है, परन्तु जोखिमों की अनिश्चितता को कम व निश्चित अवश्य किया जाता है। बीमित द्वारा बीमा कम्पनी को जोखिमों का अन्तरण किया जाता है व एक निश्चित प्रतिफल / प्रीमियम से उस जोखिम का मूल्य निश्चित कर दिया जाता है। अर्थात् निश्चित प्रीमियम के बदले अनिश्चित हानियों को बीमा कम्पनी द्वारा मिलने वाली बीमा राशि के रूप में निर्धारित कर दिया जाता है। यही राशि बीमा दावा राशि कहलाती है।
8. **घटना के घटित होने पर ही भुगतान** - बीमा में घटना के घटित होने पर ही भुगतान किया जाता है। जीवन बीमा में घटना का घटित होना निश्चित है, जैसे - व्यक्ति की मृत्यु होना, किसी विशेष बीमारी से ग्रसित होना, बीमा अवधि का पूर्ण हो जाना तो ऐसी स्थिति में बीमित को भुगतान होता ही है। परन्तु सामान्य बीमों में घटना के घटित होने पर ही भुगतान होगा अन्यथा बीमित भुगतान हेतु उत्तरदायी नहीं माना जायेगा।
9. **जोखिम का मूल्यंकन व निर्धारण** - बीमा में जोखिम का मूल्यंकन बीमा अनुबन्ध के पूर्व ही कर लिया जाता है। जोखिम की राशि व जोखिम के उत्पन्न होने की सम्भावना के आधार पर प्रीमियम का पूर्व निर्धारण कर लिया जाता है। इस निश्चित प्रतिफल / प्रीमियम के बदले निश्चित जोखिम उत्पन्न होने पर निश्चित बीमित राशि का भुगतान किया जाता है।
10. **भुगतान का आधार** - जीवन बीमा में विनियोग तत्व निहित होता है अतः पक्षकार की मृत्यु होने अथवा अवधि पूर्ण होने पर निश्चित राशि का भुगतान बीमित को कर दिया जाता है। परन्तु अन्य बीमा में वास्तविक क्षति के बराबर ही भुगतान किया जायेगा। यह क्षति अनुबन्धानुसार बीमित कारणों से जोखिम उत्पन्न होने पर व बीमित राशि की सीमा में ही भुगतान किया जायेगा उससे अधिक राशि का भुगतान नहीं।
11. **व्यापक क्षेत्र** - बीमा का क्षेत्र अब बहुत विस्तृत हो गया है। पहले केवल जीवन बीमा, समुद्री बीमा व अग्नि बीमा का ही बीमा होता था पर अब परम्परागत जोखिमों के साथ गैर परम्परागत जोखिमों का भी बीमा किया

जाता है। अब विविध बीमा का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। इसमें चोरी बीमा दुर्घटना बीमा, पशुधन बीमा, फसल बीमा आदि अनेक प्रकार बीमों को सम्मिलित किया गया किया गया है।

12. **संस्थागत ढांचा** - सम्पूर्ण विश्व में बड़ी-बड़ी संस्थाएं बीमा कार्य में लगी हुई है। भारत में जीवन बीमा निगम, सामान्य बीमा निगम एवं उसकी चार सहायक कम्पनियों व कई निजी कम्पनियों बीमा के कार्य में लगी है।

13. **बीमा जुआ नहीं है** - बीमा में वास्तविक क्षति के बराबर ही क्षतिपूर्ति या सामान्य क्षति होने पर ही क्षति पूर्ति की जाती है, अतः बीमा की तुलना जुए से करना गलत है। जुए में एक पक्षकार लाभ में तो दूसरा पक्षकार हमेशा हानि में ही रहता है परन्तु बीमा में ऐसा नहीं होता है।

14. **बीमा दान नहीं, अधिकार है** - बीमा में बीमित द्वारा अंशदान दे कर अधिकार प्राप्त किया जाता है अनुबन्धात्मक सम्बन्धों के आधार पर बीमाकर्ता निश्चित प्रतिफल (प्रीमियम) के बदले बीमित को निश्चित समयावधि पश्चात् बीमा धन / दावा का भुगतान करता है।

15. **सामाजिक समस्याओं के निवारण का उपाय** - समाज में व्याप्त अनेक सामाजिक समस्याओं का निवारण बीमा के द्वारा किया जाता है क्योंकि बीमा से समाज की अनिश्चितताओं को निश्चिताओं में व जोखिमों को कम किया जाता है।

16. **बीमा कानून अनिवार्य** - आधुनिक युग में बीमा का क्षेत्र विस्तृत होता जा रहा है इसके साथ ही सरकारों का कर्तव्य होता जा रहा है कि बीमा से सम्बन्धित नियामक अधिनियम बनाये। भारत में भी जीवन बीमा, समुद्री बीमा, साधारण बीमा हेतु अधिनियम बनाये गये हैं। इसके अतिरिक्त *बीमा नियन्त्रण एवं विकास प्राधिकरण* द्वारा सम्पूर्ण बीमा व्यवसाय का नियमन एवं नियन्त्रण किया जाता है।

17. **बीमा सिद्धान्तों की अनिवार्यता** - बीमा अनुबन्ध हेतु कुछ सिद्धान्तों का होना अनिवार्य है। इनमें बीमा योग्य हित, परम सदविश्वास का सिद्धान्त, सहकारिता व संभाविता आदि मुख्य सिद्धान्त हैं। बीमा योग्य हित के सिद्धान्त के अभाव में बीमा जुए के समान माना जायेगा।

18. **वैध सम्पत्तियों / कार्यों का ही बीमा** - बीमा केवल वैध सम्पत्तियों का किया जा सकता है। चोरी, डकैती तस्करी आदि के सामान का बीमा नहीं करवाया जा सकता है।

19. **बीमितों की बड़ी संख्या का होना** - एक ही प्रकार की जोखिम से घिरे व्यक्तियों का जितना बड़ा समूह होगा उतना ही बीमितों को कम प्रीमियम के बदले सुरक्षा प्राप्त होगी।

20. **हानि बीमित के नियन्त्रण के बाहर हो** - अज्ञात व अनिश्चित हानियों का ही बीमा करवाया जा सकता है। हानि होगी अथवा नहीं होगी, हानि की गहनता व तीव्रता क्या होगी ये सभी नियन्त्रण से बाहर होनी चाहिये बीमा अनुबन्धों के प्रकार

बीमा के अनुबन्ध दो प्रकार की श्रेणियों में विभाजित किए जा सकते हैं। वे अनुबन्ध जिनमें क्षतिपूर्ति का उत्तरदायित्व होता है और वे जिनमें क्षतिपूर्ति का प्रश्न नहीं होता वरन् एक निश्चित धनराशि अदा करने का अनुबन्ध होता है। क्षतिपूर्ति विषयक बीमा सामुद्रीय (मैरीन इंश्योरेंस) भी हो सकता है और गैरसामुद्रीय भी। पहले का उदाहरण समुद्र द्वारा विदेशों को भेजे जानेवाले सामान की सुरक्षा का बीमा है और दूसरे का उदाहरण अग्निभय अथवा मोटर का बीमा है। क्षतिपूर्ति के अनुबन्ध में केवल क्षति की पूर्ति की जाती है। यदि एक ही वस्तु का बीमा एक से अधिक स्थानों (बीमा संस्थानों) में है तो भी बीमा करानेवाले को क्षतिपूर्ति की ही धनराशि उपलब्ध होती है। हाँ, वे बीमा कंपनियाँ आपस में अदायगी की धनराशि का भाग निश्चित कर लेती हैं। अतः क्षतिपूर्ति अनुबन्ध का यह सिद्धान्त जीवन बीमा तथा दुर्घटना बीमा पर लागू नहीं होता। अतः जीवन बीमा तथा दुर्घटना बीमा कितनी भी धनराशि के लिए किया गया है, बीमा करानेवाले को (यदि वह जीवित है) अथवा उसके मनोनीत व्यक्ति को वह पूरी रकम उपलब्ध होती है।

अग्नि बीमा

जैसा कहा जा चुका है, अग्नि बीमा क्षतिपूर्ति का अनुबंध है अर्थात् जो धनराशि बीमापत्र पर अंकित है वह अवश्य मिल जाएगी, ऐसा नहीं वरन् उस सीमा तक क्षतिपूर्ति हो सकेगी। अग्नि बीमा अनुबंध यद्यपि किसी न किसी संपत्ति के संबंध में ही होता है, फिर भी वह व्यक्तिगत अनुबंध ही है अर्थात् उक्त संपत्ति के स्वामी अथवा उस संपत्ति में बीमा हित रखनेवाले व्यक्ति को उस अनुबंध द्वारा क्षतिपूर्ति से आश्वस्त किया जाता है। अतः अगर बीमा करानेवाले को किस संपत्ति में स्वामित्व अथवा अन्य प्रकार का कोई ऐसा अधिकार नहीं है जिससे उसे बीमा हित उपलब्ध होता हो तो वह बीमा करा लेने के बाद भी अनुबंध का लाभ नहीं उठा सकता।

संपत्ति का स्वामित्व बदलने पर यद्यपि बीमा हित हस्तांतरित हो जाता है किंतु बीमा अनुबंध अंग्रेजी कानून के अनुसार स्वतः हस्तांतरित नहीं होता। यदि संपत्ति विक्रय के साथ साथ तत्संबंधी अनुबंध लाभ भी हस्तांतरित करना अभिप्रेत हो तो भी बीमा करने वाले की अनुमति आवश्यक है। भारतीय विधि में ऐसा नहीं है। स्थिर संपत्ति हस्तांतरण विधि की धारा 49 और 133 के अनुसार कोई विपरीत अनुबंध के अभाव में संपत्ति प्राप्तकर्ता बीमा अनुबंध का लाभ क्षतिपूर्ति के लिए माँग सकता है। एक ही वस्तु में एक से अधिक लोगों को कुछ कुछ अधिकार उपलब्ध हो सकते हैं एवं उनके विभिन्न प्रकार के बीमा हित हो सकते हैं। अतः वे सब अपने हितों के आधार पर उस एक की संपत्ति पर अनेक बीमे करा सकते हैं।

अग्नि बीमा अनुबंध पर क्षतिपूर्ति का दावा करने के लिए यह आवश्यक है कि क्षति का निकट कारण अग्नि ही हो और अग्नि का अर्थ है कि चिनगारी निकली हो (अंग्रेजी में इसे इग्नीशन Ignition कहते हैं)। किसी वस्तु के अत्यधिक दबाव के कारण वस्तु का झुलस जाना आग लगना नहीं माना जाता। बिजली गिरने से होनेवाली हानि पर "चिनगारी लगने" की अनिवार्यता का नियम लागू नहीं होता। विस्फोट द्वारा हुई हानि अग्नि से हानि नहीं कहलाती, भले ही वह विस्फोट अग्नि से ही हुआ तो। इसका आधार यह है कि हानि का निकट (Proximate cause) कारण अग्नि ही होना चाहिए। इसी प्रकार अग्नि लगने से उत्पन्न स्थिति में किसी तीसरे पक्ष द्वारा किए गए कृत्यों से उत्पन्न हानि भी अग्नि हानि में शामिल नहीं की जाती। लेकिन अग्नि अथवा जलहानि की सीमा का निर्धारण अग्नि बुझने के तुरंत बाद ही नहीं किया जाता वरन् उस समय किया जाता है जब उक्त बीमा संपत्ति बीमा करानेवाले को सौंपी जाती है।

अग्नि बीमा अनुबंध तीन प्रकार के होते हैं :

1. मूल्यांकित अथवा अमूल्यांकित
2. संपूर्ण तथा अनिश्चित
3. निर्धारित तथा औसत

मूल्यांकित बीमा अनुबंध में यदि संपत्ति पूर्ण नष्ट हो जाए तो बीमा पत्र पर लिखित धनराशि बीमा करनेवाले को अनिवार्य रूप से देनी पड़ती है। अमूल्यांकित बीमा अनुबंध में यदि पूर्ण संपत्ति नष्ट हो जाए तो उक्त संपत्ति का मूल्यांकन उस समय किया जाता है। संपूर्ण तथा अनिश्चित अग्नि बीमा अनुबंध में वस्तुओं की सूची नहीं दी जाती वरन् अग्नि से हानिभय का बीमा सामान्य रूप में किया जाता है। निर्धारित अग्नि बीमा अनुबंध में धनराशि निर्धारित बीमा पत्र पर लिखी रहती है। औसत अग्नि बीमा अनुबंध में आनुपातिक क्षतिपूर्ति की जाती है : अग्नि बीमा अनुबंध में पुनस्थापन (Restoration or Restitution), औसत (average) तथा भागदारी (Partial liability) सिद्धांत लागू होते हैं।

जीवन बीमा

जीवन बीमा का प्रारंभ भी समुद्री बीमा के प्रायः साथ ही हुआ क्योंकि व्यापारिक यात्रा पर जानेवाले पोतों के मालिकों को जहाँ पोत नष्ट होने की संभावनाओं के विरुद्ध प्रबंध करने की चिंता थी, वहीं उन जहाजों के कप्तानों का जीवन भी उतना ही मूल्यवान था। साथ ही जब कारीगरों के संघों की स्थापना होने लगी और जन्म मृत्यु के

लेखे रहने के साथ साथ आयु सीमा के औसत निकालने के नियमों की स्थापना की जा सकी तो जीवन बीमा अनुबंध का भी काफी प्रसार हो सका। लेकिन उस समय के बीमा पत्रों की शर्तें काफी कठिन होती थीं। अमरीकी गृहयुद्ध के पूर्व के जीवन बीमा अनुबंध की शर्तों के अनुसार बीमा पत्र का कोई अर्पण मूल्य (Surrender value) नहीं होता था। बीमे पर कोई कर्ज नहीं मिल सकता था। बीमा प्रव्याजि (प्रीमियम) अदा करने के लिए अतिरिक्त समय (Grace period) नहीं मिलता था तथा आत्महत्या, द्वंद्वयुद्ध अथवा समुद्रयात्रा करने पर बीमा अवैध करार दे दिया जाता था।

जीवन बीमा दो व्यक्तियों - बीमा करानेवाले और बीमा करनेवाले - के बीच ऐसा अनुबंध है जिसके अनुसार बीमा करानेवाला निश्चित अवधि तक सामयिक अदायगियों के बदले एक निश्चित धनराशि प्राप्त करने का वचन लेता है और बीमा करानेवाला उन निर्धारित अदायगियों के बदले एक निश्चित रकम निश्चित समय पर अदा करने का वचन देता है। अन्य प्रकार के बीमा अनुबंधों और जीवन बीमा अनुबंध का अंतर यही है कि यह केवल मानव जीवन से संबंधित है और बीमा अनुबंध का प्रकार अथवा रूप कुछ भी हो उसमें मूल शर्त यही होती है कि अनुबंध के चालू रहने के काल में यदि बीमा करानेवाले की मृत्यु हो जाएगी तो बीमा करनेवाला बीमापत्र पर लिखित धनराशि अदा करेगा। मृत्यु का कारण केवल दो स्थितियों में ही इस अनुबंध को समाप्त कर सकता है। एक, यदि बीमा कराने वाले के ही किसी गैरकानूनी कृत्य द्वारा उसकी मृत्यु हुई हो। दो, यदि बीमा करानेवाले की मृत्यु ऐसे कारणों से हुई हो जिन्हें बीमापत्र में बाद कर दिया गया है। इस विषय पर अंग्रेजी विधि और भारतीय विधि में कुछ अंतर है। भारत में आत्महत्या का प्रयत्न करना तो अपराध है किंतु आत्महत्या अपराध नहीं है अतः आत्महत्या करने पर ऐसा ही बीमा अनुबंध समाप्त किया जा सकता है जिसके बीमापत्र में यह शर्त लिखित हो। अंग्रेजी विधि में आत्महत्या का विषय पहली श्रेणी में आता है।

जीवन बीमा में मिलनेवाली धनराशि बीमा करनेवाले पर कर्ज माना गया है। इसलिए संपत्ति-हस्तांतरण-विधि (T.P.A.) की धारा तीन के अंतर्गत यह "संपत्ति" की श्रेणी में आ जाता है तथा उक्त विधि की धारा 130 के अनुसार इसका हस्तांतरण किया जा सकता था। अब जीवन बीमा की धनराशि के हस्तांतरण की व्यवस्था बीमा विधि की धारा 38 व 39 में की गई है। उक्त धनराशि का हस्तांतरण अभिहस्तांकन (assignment) द्वारा भी किया जा सकता है (धारा 38) और नामांकन (nomination) द्वारा भी (39)। अभिहस्तांकन में बीमा करानेवाला उस बीमा अनुबंध से उत्पन्न अपन अधिकारों एवं हितों को दूसरे को हस्तांतरित कर देता है। नामांकन का अर्थ केवल यह है कि बीमा करानेवाले की मृत्यु पर यदि नामांकित व्यक्ति जीवित हो तो बीमे की धनराशि उसे उपलब्ध हो जाए। नामांकन बिना सूचना के बदला जा सकता है। यदि नामांकित व्यक्ति की मृत्यु पहले हो जाए तो बीमा करानेवाले को ही धनराशि पाने का अधिकार पुनः प्राप्त हो जाता है। अभिहस्तांकन में ऐसा नहीं है। यदि एक बार बीमा अनुबंध के अधिकार अभिहस्तांकित कर दिए गए तो उसकी पूर्व अनुमति के बिना दूसरा अभिहस्तांकन नहीं किया जा सकता। यदि बीमा करानेवाले के पहले अभिहस्तांकित की मृत्यु हो जाए तो वे अधिकार बीमा करानेवाले को वापस नहीं मिलते वरन् उस मृत व्यक्ति के उत्तराधिकारियों को उपलब्ध हो जाते हैं।

दुर्घटना बीमा

अनुबंध के अंतर्गत दो प्रकार की परिस्थितियाँ आ सकती हैं-

- दुर्घटनावश दूसरों की क्षतिपूर्ति करने का भार तथा
- दुर्घटनावश स्वयं अथवा स्वसंपत्ति को होनेवाली हानि। अमरीका में इसे 'कैजुएल्टी इंश्योरेंस' कहते हैं। अंग्रेजी विधि में इसे 'क्षतिपूर्ति बीमा' की श्रेणी में रेखा जाता है। भारतीय बीमा विधि में ये प्रकार स्वीकार नहीं किए गए हैं वरन् यहाँ का विभाजन जीवन बीमा तथा सामान्य बीमा (जनरल इंश्योरेंस) में किया गया है। अतः उपर्युक्त वर्णित दो परिस्थितियों में बादवाली परिस्थिति जीवन बीमा की श्रेणी में आती है। इस प्रकार की

दुर्घटनाओं का बीमा मोटर सवारी विधि (1930) तथा विमान वाहन विधि (Air navigation act 1934) के अंतर्गत अनिवार्य कर दिया गया है ताकि क्षतिग्रस्त के हितों की रक्षा हो सके।

अन्य बीमाएँ

- स्वास्थ्य बीमा
- गाड़ी की बीमा (आटोोबाइल इंश्योरेंस)

बीमा की आवश्यकता

व्यक्तियों का जीवन अनेक प्रकार की अनिश्चितताओं एवं जोखिमों से घिरा हुआ है। उसे कुछ सम्पत्ति से सम्बन्धित जोखिमों है तो कभी जीवन को जोखिम है अतः वह इन जोखिमों के प्रति कै से सुरक्षा प्राप्त करे इसी विचार ने बीमा को एक आवश्यकता बना दिया है। वर्तमान औद्योगिक विकास का आधार ही प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से यदि बीमा को कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। मनुष्य जीवन को तनाव मुक्त करने हेतु बीमा एक महती आवश्यकता बन गया है। निम्न बिन्दुओं के आधार पर बीमा की आवश्यकता का अनुमान लगाया जा सकता है-

1. जोखिमों के विरुद्ध सुरक्षा प्राप्ति हेतु -सम्पत्तियों का इसलिए बीमा किया जाता है कि उनके नष्ट होने की सम्भावना निरन्तर बनी रहती है या आकस्मिक घटना के घटित होने से अपने अपेक्षित जीवनकाल से पहले ही वे निष्क्रिय हो सकती है।

2. संभावित जोखिमों से सुरक्षा प्राप्ति हेतु -बीमाकृत विषयवस्तु को क्षति हो भी सकती है और नहीं भी, भू कम्प आ भी सकता है , और नहीं भी, भू कम्प आये तो हो सकता है सम्पत्ति को क्षति पहुँचे अथवा नहीं। मनुष्य की मौत होना निश्चित है ले किन मृत्यु कब होगी समय अनिश्चित है , अतः इस अनिश्चितता या संभावित जोखिमों से सुरक्षा प्राप्ति हेतु बीमा आवश्यकता बन गया है।

3. जोखिमों के प्रभाव को कम करने हेतु - बीमा बीमाकृत विषयवस्तु को संरक्षण प्रदान नहीं करता है , खतरे के कारण पहुँचाने वाली हानि को भी नहीं रोकता है खतरे को घटित होने से टाला भी नहीं जा सकता है। परन्तु कभी-कभी बेहतर सुरक्षातथा क्षतिनियन्त्रक उपायों द्वारा खतरे को टाला या तीव्रता को कम किया जा सकता है जिससे उस विषयवस्तु पर निर्भर व्यक्तियों के जीवन व सम्पत्ति पर खतरे के प्रभाव को कम अवश्य किया जा सकता है।

4. सुरक्षा के लिए अतिरिक्त पूंजी की आवश्यकता से मुक्ति हेतु -बीमा उद्योगपतियों, व्यवसायियों एवं अन्य व्यक्तियों को सुरक्षा के लिए पूंजी वि नियोग से मुक्त कर दे ता है। थोड़ी सी प्रीमियम का भुगतान करके जोखिम को उस सीमा तक सीमित कर लिया जाता है। अतः इस व्यवस्था में लगने वाले धन का अन्यत्र उपयोग किया जा सकता है।

5. वृहत स्तरीय उपक्रमों के विकास हेतु आवश्यक -वृहतस्तरीय उपक्रमों में इतनी अधिक जोखिम होती है कि बीमा के बिना प्रारम्भ करना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव भी हो सकता है।

6. वित्तीय संस्थाओं से वित्त प्राप्ति हेतु -वित्तीय संस्थाओं द्वारा भी इन औद्योगिक व व्यावसायिक संस्थाओं को वित्त तभी प्रदान किया जाता है जबकि इनकी सम्पत्तियों का बीमा हो चुका है। अतः भारी मात्रा में वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भी बीमा आवश्यक है।

7. विदेशी व्यापार विकास हेतु आवश्यक -निर्यात व्यापार के प्रोत्साहन हेतु भी बीमा आवश्यक है। बीमा माल के मूल्य की क्षति की दशा में भी पूर्ण सुरक्षा प्रदान करता है व जिससे निर्यातक क्षति की अनिश्चितता से मुक्त होकर निर्यात कर सकते हैं।

8. बचत व निवेश को प्रोत्साहित करने हेतु -जीवन बीमा बचत व विनियोग का अच्छा स्रोत है। जीवन की अनिश्चितताओं को बीमा द्वारा निश्चित करने हेतु अधिक राशि का बी मा कराता है, जिससे अपव्यय कम होकर बचत को प्रोत्साहन मिलता है।

बीमा का महत्व

सभ्यता के विकास के साथ-साथ बीमा का महत्व भी बढ़ता जा रहा है , क्योंकि जोखिमों, दुर्घटनाओं व अनिश्चितताओं , में वृद्धि होती जा रही है आज हम ऐसे किसी देश की कल्पना नहीं कर सकते जो बीमा का लाभ नहीं उठा रहा हो। आज बीमा प्रारम्भिक स्वरूप से हट कर सामाजिक व व्यावसायिक जगत के प्रत्येक क्षेत्र में पदार्पण कर चुका है और अपनी उपयोगिता के आधार पर लोकप्रियता प्राप्त करता जा रहा है। बीमा की उपयोगिता से प्रभावित होकर ब्रिटेन के प्रधानमंत्री सर विन्स्टन चर्चिल ने कहा था “यदि मेरा वश चले तो मैं द्वार-द्वार पर यह अंकित करा दूँ कि बीमा कराओ।”

बीमा सम्पूर्ण मानवजाति एवं इससे सम्बन्धित सभी वर्गों को सामाजिक एवं आर्थिक रूप से लाभ पहुँचाता है। संक्षेप में कह सकते हैं कि आधुनिक युग में बीमा का महत्व दिन दुगुना रात चौगुना होता चला जा रहा है। बीमा के महत्व अथवा लाभों को निम्नांकित वर्गीकरण द्वारा समझा जा सकता है।

वैयक्तिक या पारिवारिक दृष्टि से महत्व

बीमा से व्यक्ति स्तर पर निम्न लाभ हो सकते हैं।

1. मितव्ययता व बचत को प्रोत्साहन – बीमा करा लेने से व्यक्ति को प्रब्याजि जमा कराने की चिन्ता रहती है अतः वह प्रारम्भ से ही बचत करना व मितव्ययता को अपनाकर प्रारम्भ कर देता है। प्रो. रीगल, मिलर तथा विलियम्स के अनुसार - “बीमा बचत को प्रोत्साहन देने वाला वातावरण प्रदान करता है।” यदि उसने प्रीमियम नहीं चुकाया हो तो वह उस धन राशि का अपव्यय भी कर सकता है। प्रति वर्ष बचत योजना के अन्तर्गत करोड़ों रूप्यक का प्रीमियम जमा होता है, जो बचत की आदत से ही संभव है।

2. जोखिमों से सुरक्षा- मनुष्य का जीवन ही नहीं व्यापार भी जोखिमों से भरा हुआ है , बीमा उन अनिश्चितताओं को दूर करता है। प्रो. एन्जे ल के अनुसार- *बीमा अनिश्चित हानियों से सुरक्षा का स्थायी आधार है। बीमा के कारण ही व्यवसाय व उद्योग विकसित हुए हैं और व्यक्ति के रोजगार को उत्पन्न जोखिम भी समाप्त होती है।”*

3. विनियोग- जीवन बीमा में विनियोग तत्व भी विद्यमान है। व्यक्ति जो राशि प्रीमियम के रूप में जमा करवाता है वह उसकी बचत है। निश्चित अवधि के पूर्ण होने अथवा निश्चित घटना के घटित होने पर बीमित को अथवा उसके उत्तराधिकारियों को निश्चित राशि प्राप्त हो जाती है। इस प्रकार बीमा व्यक्ति के लिए सुरक्षा के साथ-साथ विनियोग का साधन भी बन जाता है।

4. बीमित व उसके उत्तराधिकारियों को पूर्ण सुरक्षा - बीमा कराने से बीमित व उसके उत्तराधिकारियों को पूर्ण वैधानिक सुरक्षा प्राप्त होती है। बीमित मृत्यु से पूर्व इच्छित व्यक्ति के नाम बीमापत्र का नामांकन कर सकता है जिससे पारिवारिक धन सम्बन्धी, बँटवारे के झगड़े दूर हो सकते हैं व उत्तराधिकारी भी पूर्णतः सुरक्षित रहते हैं।

5. करों में छूट - बीमा से करों में भी छूट मिलती है। भारत में चुकायी गयी प्रीमियम की राशि पर आयकर में छूट प्राप्त की जा सकती है। इसी प्रकार सम्पदा कर में भी छूट मिलती है।

6. आय क्षमता का पूंजीकरण- बीमा के द्वारा व्यक्ति अपनी आय क्षमता का पूंजीकरण भी कर सकता है। वह भविष्य में उसके द्वारा कमायी जा सकने वाली राशि का भी बीमा करवा कर अपनी आय का पूंजीकरण कर सकता है। यदि बीमित की मृत्यु हो जाती है या कार्यक्षमता समाप्त हो जाती है तो भी इतनी ही राशि बीमापत्र पर प्राप्त हो सकेगी।

7. साख सुविधाएं - ऋणदाता ऐसे व्यक्तियों को ऋण देना अधिक पसन्द करते हैं जिनका, बीमा करवाया हुआ है। वित्तीय संस्थाएं भी बीमित-व्यक्ति को ही ऋण देना चाहती हैं। इसके अतिरिक्त बीमा कम्पनी से भी साख सुविधाएं प्राप्त की जा सकती हैं।

8. वैधानिक दायित्वों से मुक्ति - व्यक्ति वैधानिक दायित्व बीमा करवा कर तृतीय पक्षकारों के प्रति अपने दायित्वों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। निश्चित प्रीमियम के बदले बीमा कम्पनी उन दायित्वों का भुगतान करेगी।

9. कार्यक्षमता में वृद्धि - अनिश्चितता जीवन की सबसे बड़ी चिन्ता होती है और बीमा व्यक्तियों को उस अनिश्चितता से ही मुक्ति दिलाता है। व्यक्ति जब चिन्ता मुक्त होकर कार्य करता है तो पूर्ण एकाग्रता से कार्य करने में समर्थ हो पाता है, जिससे उसकी कार्यक्षमता में वृद्धि होती है।

10. मानसिक शान्ति - जब व्यक्ति अनिश्चितताओं से मुक्त हो जाता है तो वह प्रसन्न मन से कार्य करता है। उसे मृत्यु के पश्चात् उत्पन्न होने वाले दायित्वों की भी चिन्ता नहीं रहती है क्योंकि वह वर्तमान में ही उनका बीमा करा चुका होता है।

11. स्वावलम्बन को प्रोत्साहन - बीमित व्यक्ति में आर्थिक आत्मनिर्भरता की भावना पैदा हो जाती है। व्यक्ति जीवित अवस्था में भी ऋण आसानी से प्राप्त कर सकता है और मृत्यु के पश्चात् भी आश्रित परिवार को बीमा धन राशि मिलने से आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त होती है।

12. भविष्य की आवश्यकताओं का नियोजन - बीमा कम्पनी के द्वारा कई प्रकार के बीमा पत्रों जैसे शिक्षा, विवाह, पेंशन आदि को जारी किया जाता है। व्यक्ति अपनी सीमित आय में से वर्तमान में ही भविष्य की तैयारी कर लेता है कि उसे कब, किस आवश्यकता पर, कितनी राशि की आवश्यकता होगी। इस आधार पर वह उन विशेष बीमापत्रों का चयन करने में सफल हो सकता है, यहाँ तक की मृत्यु के पश्चात् भी परिवार की आवश्यकताएँ पूर्ण नियोजित तरीके से पूरी कर सकता है।

13. सतर्कता को प्रोत्साहन - बीमा कम्पनियाँ हानियों से बचने के कई सुरक्षात्मक सुझाव देती रहती है। इन सुरक्षात्मक उपायों से मानव जीवन अधिक सुरक्षित हो जाता है वह समय-समय पर विभिन्न बीमारियों से बचने के उपाय करता है। क्षतिपूर्क बीमों में सतर्कता उपाय अपनाने व सामान्य औसत से कम दाता प्रस्तुत करने पर प्रीमियम में छूट भी प्रदान की जाती है जो अनंततः बीमा लागत को कम करती है।

14. सामाजिक प्रतिष्ठा व आत्म सम्मान में वृद्धि - बीमा समाज में व्यक्ति के आत्म सम्मान व प्रतिष्ठा में वृद्धि करता है। जिन लोगों का बीमा होता है समाज उन्हें अधिक सुरक्षित समझ कर सम्मान करता है, मुसीबत के समय उन्हें दूसरों की ओर नहीं देखना पड़ता है, वे आसानी से बीमा पत्र पर ऋण भी प्राप्त कर सकते हैं।

15. वृद्धावस्था में सहारा - वर्तमान में जबकि संयुक्त परिवार प्रथा का लोप हो रहा है बीमा व्यक्ति की वृद्धावस्था का सहारा बनता जा रहा है। वृद्धावस्था में आय के स्रोत सीमित हो जाते हैं व उत्तरदायित्व बढ़ जाते हैं, ऐसे में बीमा से प्राप्त धन ही उसका प्रमुख सहारा बनता है।

व्यावसायिक / आर्थिक दृष्टि से महत्व

वर्तमान आर्थिक जगत की कल्पना बीमा के बिना अधूरी है। व्यवसायी बीमा करवाने की रूपरेखा बना लेता है ताकि वह पूर्ण शान्ति व तन्मयता के साथ व्यावसायिक क्रियाओं को पूरा कर सके। विख्यात प्रबन्ध विचारक पीटर एफ ड्रकर के अनुसार- “यह कहना अतिशयोक्तिपूर्ण नहीं है कि बीमा के बिना औद्योगिक अर्थव्यवस्था कोई भी कार्य नहीं कर सकती है।” वास्तविक स्थिति यही है कि बीमा व्यवसाय के सफल संचालन के लिए अपरिहार्य है। आर्थिक दृष्टि से बीमा का महत्व निम्न प्रकार से दृष्टिगोचर होता है -

1. बचतों को प्रोत्साहन - बीमा अनिवार्य बचत का एक साधन है। बीमा लोगों को छोटी-छोटी बचतें करने की आदत को प्रोत्साहन देता है। छोटी सी प्रीमियम के द्वारा वह भविष्य के कई बड़े सपनों को आसानी से पूरा कर सकता है। बीमा कम्पनी को इन बीमितों की छोटी-छोटी बचतों से करोड़ों रुपयों की प्रीमियम राशि प्राप्त होती है जो संचित होकर एक मोटी धन राशि बन जाती है। जिन्हें बीमा कम्पनी आवश्यक खर्चों की पूर्ति के पश्चात् सामाजिक व राष्ट्रीय हित की योजनाओं में विनियोग कर देती है।

2. पूंजी निर्माण - बीमितों से प्राप्त प्रब्याजि की राशि को बीमा कम्पनी जब विभिन्न राष्ट्रीय योजनाओं में विनियोग करती है, तो उससे व्यापार व व्यवसाय को आसानी से पूंजी की प्राप्ति होती है, व कई लोगों को रोजगार की प्राप्ति भी होती है।

3. विनियोग का साधन - बीमा अनुबन्ध में प्रीमियम के रूप में प्राप्त राशि से पूंजी का सृजन होता है इस पूंजी का विनियोग व्यापार, व्यवसाय उद्योग व अन्य क्षेत्रों में किया जाता है। जनता प्रत्यक्ष रूप से व्यवसाय में उतनी छोटी राशि का विनियोग कर लाभ प्राप्त नहीं कर सकती है पर इस अप्रत्यक्ष विनियोग के द्वारा बीमितों को बीमापत्र पर अधिक बोनस की प्राप्ति होती है साथ ही राष्ट्र का आर्थिक विकास भी होता है।

4. व्यापार व वाणिज्य में वृद्धि - बीमा के द्वारा विभिन्न प्रकार की जोखिमों को सुरक्षा प्रदान की जाती है जिससे दे शी व विदे शी दोनों ही प्रकार के व्यापार में वृद्धि होती है। बीमा का प्रादुर्भाव व विकास ही मूलतः सामुद्रिक बीमा के रूप में हुआ है। जिससे जोखिम युक्त व्यापारिक समुद्री यात्राओं को सुरक्षा प्रदान की जाती थी, फिर अग्नि बीमा का विकास हुआ जिसमें कारखानों, गोदामों, कार्यालयों व अन्य सम्पत्तियों की अग्नि से सुरक्षा हेतु उपाय व बीमा किया जाने लगा। इस प्रकार की हानियों से सुरक्षा मिलने पर व्यवसायी भयमुक्त होकर निश्चितता के साथ व्यापार करते हैं और जोखिम उत्पन्न होने पर बीमा एक सच्चे दोस्त के रूप में सहायता करता है।

5. औद्योगिकरण के लिए आधारभूत संरचना के विकास में सहायक - बीमा संस्थाएँ दे श में शक्ति, परिवहन, संचार, औद्योगिक सम्पदा आदि साधनों के विकास के लिए भारी मात्रा में धनराशि उपलब्ध कराती है जिससे दे श में औद्योगिकरण हेतु आधारभूत ढाँचा तैयार होता है।

6. वृहत् पैमाने के व्यवसायों का विकास - बीमा ने अनेक बड़े व्यवसायों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। प्रो. मे गी ने लिखा भी है कि बीमा के बिना वृहत् व्यावसायिक संस्थाओं का अस्तित्व संभव नहीं हो सकता है। बीमा कम्पनी इन विशाल व्यवसायिक संस्थाओं हेतु वित्त उपलब्ध तो करती ही है साथ ही बहुत कम प्रीमियम पर सुरक्षा भी प्रदान करती है।

7. लघु व कुटीर उद्योगों का विकास - वृहत् पैमाने के उद्योगों के साधन भी विस्तृत होते हैं। वे आकस्मिक हानि को वहन कर सकते हैं, परन्तु लघु पैमाने के उद्योगों में यदि कोई जोखिम उत्पन्न हो जाये तो वे उसका सामना नहीं कर सकते व उनका अस्तित्व ही समाप्त हो जाता है परन्तु बीमा के द्वारा इन उद्योगों को सुरक्षा प्रदान की जाती है अतः वे पूर्ण निश्चितता के साथ व्यवसाय का संचालन करते हैं।

8. उद्यमिता का विकास - बीमा के द्वारा उद्यमिता का विकास होता है, क्योंकि व्यवसाय व उद्योग का बीमा होने से उद्यमियों की जोखिम कम हो जाती है। वे पूर्ण आत्मविश्वास व निश्चितता के साथ नये व्यवसाय को प्रारम्भ करते हैं। वित्तीय संस्थाओं के द्वारा ऋण भी आसान शर्तों पर प्राप्त हो जाता है। कई तकनीकी व पेशेवर शिक्षा प्राप्त युवक, कई बड़े उपक्रम स्थापित कर रहे हैं।

9. सेवा क्षेत्र के उपक्रमों का विकास - वर्तमान में सभी दे शों में सेवा क्षेत्र के उपक्रमों का विकास हो रहा है। इन उपक्रमों की सफलता इनके द्वारा दी जाने वाली सेवाओं की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। ये संस्थाएँ भी दायित्व बीमा करवाती है ताकि जोखिमों को सीमित किया जा सके। इससे इन उपक्रमों के विकास में पर्याप्त योगदान मिल रहा है।

10. विदेशी व्यापार को प्रोत्साहन - विदेशी व्यापार में कई जोखिम होती है जैसे - समुद्री मार्ग से माल भेजने की जोखिम, आयातक व निर्यातक दे श के राजनायिक सम्बन्धों से उत्पन्न जोखिम आदि। बीमा कम्पनी से सुरक्षा मिलने पर व्यवसायी विदेशी व्यापार की जोखिमों से बच सकता है।

11. साझेदारी व्यवसाय में स्थायिता - साझेदारी फर्म में किसी साझेदार की मृत्यु होने या अचानक कोई जोखिम उत्पन्न होने पर फर्म में भारी संकट उत्पन्न हो सकता है। ऐसे संकटों से निपटने के लिए साझेदारों का संयुक्त बीमा करवाया जा सकता है जिससे किसी साझेदार की मृत्यु होने पर प्राप्त राशि से फर्म से उसके हिस्से को चुकाया जा सकता है व दूसरी ओर बीमा राशि की पूर्ति नहीं होने से उस बीमा राशि से साझेदारों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति आसानी से हो जाती है।

12. रोजगार के अवसरों का विकास - बीमा व्यवसाय से देश में रोजगार के अवसरों का विकास होता है। बीमा से देश में व्यवसाय व उद्योगों का विस्तार होता है जिससे उसमें अनेक स्तरों पर कार्य करने हेतु व्यक्तियों को रोजगार मिलता है। बीमा व्यवसाय के कारण विभिन्न प्रकार के बीमों यथा-समुद्री, अग्नि, दुर्घटना, जीवन, व अन्य प्रकार के बीमों का विस्तार होता है जिससे बीमा संगठन में ही बड़ी मात्रा में कर्मचारियों व एजेंटों की नियुक्ति की जाती है।

13. व्यावसायिक स्थायित्व में सहायक - बीमा देश में व्यावसायिक स्थायित्व के लिए आधार तैयार करता है। इसका कारण है कि व्यावसायिक जोखिमों को बीमा के माध्यम से सीमित किया जा सकता है जिससे देश में व्यावसायिक विकास हेतु अनुकूल परिस्थितियाँ बनती हैं व व्यावसायिक स्थिरता आती है।

14. महत्वपूर्ण व्यक्तियों की हानि से सुरक्षा - प्रत्येक संस्था के लिए कुछ महत्वपूर्ण व्यक्तियों का जीवन अमूल्य होता है। उन व्यक्तियों की ख्याति, क्षमता, प्रबन्ध चातुर्य आदि के कारण संस्थाएं लाभ अर्जित करती हैं। उन महत्वपूर्ण व्यक्तियों के न रहने पर संस्थाखतरे में पड़ जाती है अतः इस आर्थिक खतरे से संस्था को बचाने हेतु इन महत्वपूर्ण व्यक्तियों का बीमा करवा लिया जाता है। इन व्यक्तियों की मृत्यु होने पर संस्था को बीमा कम्पनी से क्षतिपूर्ति प्राप्त हो जाती है।

15. सुरक्षा विधियों को प्रोत्साहन - बीमा कम्पनी बीमितों को सुरक्षा विधियाँ अपनाने पर जोर देती है। जो संस्था इन उपायों को अपनाती है उन्हें प्रीमियम में छूट भी प्रदान की जाती है। **16. दुर्घटनाओं की लागत को निश्चित करना**:- कुछ दुर्घटना बड़ी तो कुछ छोटी होती है। यदि इन दुर्घटनाओं की लागत को वस्तु की लागत में जोड़ा जाये तो लागतें बहुत बढ़ जायेगी व वह उद्यमी प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जायेगा। अतः इन दुर्घटनाओं की अनिश्चितता को बीमा द्वारा निश्चितता में बदला जा सकता है।

17. कर्मचारी हितों की सुरक्षा - व्यवसाय में लाभ व हानि दोनों की संभावनाएं होती हैं। हानि की स्थिति का बुरा प्रभाव कर्मचारियों पर पड़ता है और उन्हें नौकरी से निकलना भी पड़ सकता है। यदि व्यावसायिक संस्थाएं कर्मचारियों के लिए ग्रेच्युटी, पेंशन, तथा अन्य लाभों का बीमा करवा दे तो उनके हित सुरक्षित हो जाते हैं।

18. कर्मचारी सुरक्षा योजनाओं का आसान प्रबन्ध - देश के कानूनों के अनुसार से वायोजकों को कर्मचारियों के कल्याण हेतु अनेक योजनाओं जैसे - पेंशन, ग्रेच्युटी, बीमारी लाभ, अपंगता या मृत्यु पर आश्रितों की आय की सुरक्षा, गर्भावस्था व शिशु जन्म पर लाभ आदि का संचालन बीमा के द्वारा जैसे सामूहिक बीमा योजना, सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का संचालन करके पूरा करती है। साथ ही कानूनी दायित्वों की भी पूर्ति कर सकते हैं।

19. मानव संसाधन विकास में योगदान - बीमा संस्थाओं द्वारा एजेंटों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किये जाते हैं जो उनके व्यक्तित्व व कुशलता में योगदान देते हैं। यही नहीं बल्कि बीमित संस्थाओं के अधिकारियों व कर्मचारियों को भी परिसम्पत्तियों के रखरखाव व सुरक्षा के लिए प्रशिक्षण देती है। इससे मानव संसाधन विकास में योगदान मिलता है।

सामाजिक दृष्टि से महत्व

समाज में स्थायित्व व सामाजिक समस्याओं के निवारण हेतु बीमा एक महत्वपूर्ण औजार है। समाज को बीमा से अनेक लाभ हैं जो इस प्रकार हैं -

1. सामाजिक सुरक्षा का साधन - बीमा सामाजिक सुरक्षा प्रदान करता है। बीमा करा कर व्यक्ति अपनी चिन्ताओं से मुक्त हो जाता है। जीवन बीमा के द्वारा वृद्धावस्था, अपंगता, बीमारी व मृत्यु होने पर आश्रितों को सामाजिक सुरक्षा प्राप्त होती है। अग्नि बीमा से बहुमूल्य सम्पत्तियों, औद्योगिक संस्थाओं की सुरक्षा, तो सामुद्रिक बीमा से मार्ग की कठिनाईयों व माल को होने वाली क्षति से सुरक्षा प्राप्त कर सकता है। इन सुरक्षा तत्वों के कारण बीमा समाज के प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण बनता जा रहा है।

2. **जोखिमों का अन्तरण** - बीमा के द्वारा बीमित एक व्यक्ति की जोखिमों को अनेक व्यक्तियों के समूह में बाँट दिया जाता है। क्षति का दायित्व बीमित पर या किसी एक व्यक्ति पर नहीं रह कर सम्पूर्ण समूह को (बीमाकर्ता) वितरित हो जाता है जो पूरे समाज के लिए हितकर होता है।
3. **पारिवारिक जीवन में स्थायित्वता** - बीमे के द्वारा परिवार में स्थायिता लायी जा सकती है। परिवार के मुखिया की मृत्यु होने पर पूरा पारिवारिक जीवन अस्त व्यस्त हो जाता है। किन्तु जीवन बीमा के द्वारा व्यक्ति मृत्यु के पश्चात् भी परिवार को स्थायित्व प्रदान कर सकता है।
4. **पारिवारिक विघटन से सुरक्षा** - संयुक्त परिवार तो स्वयं बीमे के समान सुरक्षा प्रदान करता है परन्तु एकल परिवारों में यदि मुखिया की मृत्यु हो जाये तो उसकी विधवा पत्नी एवं बच्चों पर ही परिवार का पूरा दायित्व आ जाता है। ऐसी स्थिति में सभी पारिवारिक सम्बन्धों को बनाये रखने पर पूरा ध्यान नहीं दे पाते हैं। कई बार तो माँ की व्यस्तता व शोकाकुलता के कारण बच्चे गलत राह पर भी अग्रसर हो जाते हैं। परन्तु जीवन बीमा से बीमा राशि समय पर उपलब्ध होने से परिवार का पूर्व नियोजित तरीके से विकास में योगदान मिलता है।
5. **सामाजिक सन्तोष** - बीमा से समाज के सभी वर्गों को लाभ पहुँचता है अतः समाज में सामाजिक सन्तोष की भावना पनपती है व सामाजिक सन्तुष्टि रहती है।
6. **सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक** - बीमा आज के युग में सामाजिक प्रतिष्ठा का द्योतक भी माना जाता है। जो व्यक्ति अपने जीवन व सम्पत्तियों का जितना अधिक व उपयुक्त बीमा करवाता है वह उतना ही प्रतिष्ठित माना जाता है। समाज शिक्षित व उन्नत होता है।
7. **सामाजिक बुराइयों की रोकथाम** - बीमा के द्वारा व्यक्तियों के जीवन में आर्थिक निश्चितता आती है, जिससे व्यक्ति की मृत्यु पर भी आश्रित बेसहारा नहीं होते हैं। इसी प्रकार अन्य क्षतिपूरक बीमों से भी व्यक्ति की सम्पत्तियाँ सुरक्षित हो जाती है। अतः जोखिम उत्पन्न होने पर उसकी आर्थिक व सामाजिक स्थिति खराब नहीं होती है तथा सामाजिक बुराइयाँ जन्म भी नहीं लेती है।
8. **शिक्षा को प्रोत्साहन** - बीमा के द्वारा शिक्षा को भी प्रोत्साहित किया जाता है। शिक्षा बीमापत्र क्रय करके माता-पिता बच्चों की शिक्षा की समुचित व्यवस्था कर सकते हैं।
9. **सतर्कता को प्रोत्साहन** - बीमा समाज में लोगों को सतर्कता हेतु भी प्रोत्साहित करता है। बीमा कम्पनियाँ उन सम्पत्तियों के बीमा प्रीमियम राशि में छूट देती है जो सतर्कता उपायों को अपनाती है व सामान्य औसत से कम दावा राशि प्रस्तुत करती है। बीमा कम्पनी स्वयं भी समय-समय पर सतर्कता उपायों से अवगत कराती रहती है।
10. **सभ्यता और संस्कृति का विकास** - कोई भी समाज कितना सभ्य, सुसंस्कृत और विकसित है इसकी कसौटी वहाँ की बीमा प्रणाली है। जिस देश में बीमा का विकास नहीं उसे पिछड़ा ही माना जाता है। सामाजिक परिसम्पत्तियों की सुरक्षा के साथ बीमा समाज की मानवीय व मौलिक सम्पत्तियों की सुरक्षा करता है। बीमा अनुबन्ध में वर्णित शर्तों के अनुसार इन संसाधनों की सुरक्षा की व्यवस्था बीमित को करनी होती है। इसके अतिरिक्त बीमा कम्पनियाँ बीमित विषय-वस्तु की सुरक्षा के बारे में जनशिक्षण भी देती है। परिणाम स्वरूप बीमा के द्वारा सामाजिक परिसम्पत्तियों की सुरक्षा होती है।
11. **रोजगार अवसरों का विकास** - बीमा से समाज में रोजगार के अवसरों में भी वृद्धि होती है। बीमा कम्पनियों में कई हजार कर्मचारी विभिन्न पदों पर व कई बीमा एजेण्ट भी कार्यरत है। एक अनुमान के अनुसार सामान्य बीमा निगम व उसकी सहायक कम्पनियों में लगभग 85000 तथा जीवन बीमा निगम में लगभग सवा लाख कर्मचारी कार्यरत है। इतना ही नहीं, जीवन बीमा निगम के ही पाँच लाख से अधिक एजेण्ट भी कार्यरत है।
12. **सामाजिक उत्थान कार्यों में योगदान** - देश का विकास सामाजिक उत्थान के बिना अधूरा ही है। सामाजिक उत्थान हेतु गरीबी एवं आर्थिक असमानता का निवारण करना होता है। बीमा कम्पनी सामाजिक क्षेत्र में असंगठित लोगों जैसे -श्रमिक, खाती, मोची, लौहार आदि, आर्थिक रूप से गरीब पिछड़े लोगों, अनौपचारिक क्षेत्र

के लोगों जैसे - स्वयं नियोजित व्यक्ति-फुटकर व्यापारी. नल- बिजली का कार्य करने वाले व्यक्ति आदि का बीमा करती है। बीमा कम्पनी इन व्यक्तियों का बीमा स्वयं की ओर से व केन्द्रीय व राज्य सरकार के सहयोग से भी करती है जैसे -जनश्री बीमा योजना। “बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण” ने भी सभी बीमाकर्ताओं के लिए सामाजिक क्षेत्र के पिछड़े लोगों का बीमा करना अनिवार्य कर दिया है। प्राधिकरण के नियमानुसार प्रत्येक नये बीमाकर्ता के लिए प्रथम वर्ष ऐसे 5000 जीवन व पाँच वर्षों में यह संख्या 20,000 तक पहुँचनी होती है।

13. नागरिक दायित्वों से सुरक्षा - कई औद्योगिक संस्थाओं में कई खतरनाक रसायनों व गैसों का उपयोग करना होता है, खतरनाक अपशिष्ट भी निकलते हैं, औद्योगिक निर्माण प्रक्रिया भी आसपड़ोस के लोगों के लिए खतरनाक हो सकती है। ऐसी संस्थाएँ अपना नागरिक दायित्व बीमा करवा लेती हैं और जोखिम के प्रभावों से बच जाती हैं।

14. जीवनस्तर में सुधार - बीमा लोगों को बचत करने व जोखिमों को बीमा कम्पनी को अन्तरित करने का अवसर देती है। इससे लोगों की आर्थिक स्थिति सन्तुलित होती है व जीवन स्तर के सुधार हेतु अतिरिक्त साधनों का उपयोग किया जा सकता है।

15. परोपकारी कार्यों को प्रोत्साहन - व्यक्ति अपनी वृद्धावस्था में अथवा मृत्यु के पश्चात् किसी संस्था को दान देना चाहते हैं परन्तु जीवित रहते हुए स्वयं की आर्थिक सुरक्षा भी चाहते हैं ऐसे में वे बीमापत्र क्रय करके उसका नामांकन उस संस्था के नाम कर देते हैं जिसको दान दिया जाना है। बीमित की मृत्यु पर नामांकित को उस बीमापत्र का भुगतान हो जाता है।

16. स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता - बीमा कम्पनियाँ बीमा करते समय भी कई प्रकार की जांच करवाती हैं जिससे कई बीमारियों की जानकारी हो जाती है। अच्छे स्वास्थ्य को बनाये रखने हेतु शिक्षाप्रद सामग्री का भी वितरण करती हैं। इन सभी उपायों से लोगों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न होती है।

राष्ट्रीय दृष्टि से उपादेयता

बीमा से केवल व्यक्ति को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र को लाभ होता है। जिसका विवरण इस प्रकार है-

1. राष्ट्रीय बचत में वृद्धि - बीमा करवाने हेतु प्रत्येक व्यक्ति बचत करता है। ये छोटी-छोटी बचतें कुल राष्ट्रीय बचत में वृद्धि करती हैं।

2. मुद्रा बाजार के विकास में योगदान - बीमा प्रीमियमों की बड़ी राशि से देश के मुद्रा बाजार के विकास में भी योगदान मिलता है। फलतः अल्पकालीन व दीर्घकालीन प्रतिभूतियों का लेन देन आसान हो जाता है। सरकारी बैंक तथा कम्पनियाँ, सभी अपनी आवश्यकतानुसार मुद्रा तत्काल प्राप्त व विनियोग भी कर सकती हैं।

3. प्राकृतिक जोखिमों से सुरक्षा - बीमा सुविधा से ही अर्थव्यवस्था के सभी घटकों को विभिन्न प्रकार की प्राकृतिक जोखिमों से सुरक्षा उपलब्ध हो रही है। बीमा कम्पनियाँ अग्नि, अतिवृष्टि, समुद्री मार्ग की जोखिमों, तटीय क्षेत्रों की जोखिमों आदि का बीमा करती हैं और उन लोगों को राष्ट्रीय सुरक्षा प्रदान करती हैं और राष्ट्र के आर्थिक विकास की गति को आगे बढ़ाने में योगदान देती हैं।

4. मुद्रा स्फीति पर नियन्त्रण - बीमा प्रीमियम के रूप में एकत्रित धन बाजार में मुद्रा प्रसार को रोकता है, बाद में इसी धन का उद्योगों के विकास में उपयोग किया जाता है। भारत में कुल प्रचलित मुद्रा का लगभग 5 प्रतिशत भाग बीमा प्रीमियम के रूप में एकत्रित होता है।

5. विनियोग को प्रोत्साहन - बीमा के द्वारा व्यक्ति छोटी-छोटी बचतें एकत्रित करके विभिन्न प्रकार के बीमापत्रों को खरीदता है उस प्रीमियम राशि का निश्चित प्रतिशत भाग उद्योगों में विनियोजित किया जाता है।

6. विदेशी मुद्रा कोष में योगदान - बीमा संस्थाओं द्वारा विदेश में भी बीमा व्यवसाय किया जाता है। विदेशों में बीमा व्यवसाय से विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है।

7. स्कन्ध विनियम केन्द्रों का विकास - बीमा कम्पनी अपने संचय कोषों का एक भाग स्कन्ध विनियम केन्द्रों में भी विनियोग करती है व निरन्तर सक्रियता से अंश विनियम व्यवसाय में हिस्सा लेती है अतः स्कन्ध विनियम केन्द्रों का भी विकास होता है।

8. वृहत पैमाने के उद्योगों को पूंजी की उपलब्धता - बीमा कम्पनियाँ अपने संचय कोषों से उद्योगों के अंश व ऋणपत्रों को क्रय करती है जिससे इन उद्योगों को भारी मात्रा में दीर्घकालीन व अल्पकालीन दोनों ही प्रकार की अंशपूंजी प्राप्त होती है।

9. सरकारी प्रतिभूतियों में निवेश द्वारा आर्थिक परियोजनाओं में योगदान - बीमा संस्थाओं ने केन्द्रीय सरकार एवं राज्य सरकारों की प्रतिभूतियों तथा इनके द्वारा गारन्टी युक्त अन्य प्रतिभूतियों में निवेश कर दे श के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन प्रतिभूतियों में निवेशित राशि दे श की आर्थिक परियोजनाओं को पूरा करने में व्यय की जाती है। जिससे दे श का आर्थिक विकास होता है।

10. मध्यम व लघु व्यवसायों को प्रोत्साहन - ये संस्थाएं सम्पूर्ण व्यवसाय का बीमा करवा कर व्यवसाय के कुशल संचालन पर पूर्ण ध्यान दे सकती है। बैंक व वित्तीय संस्थाएं भी बीमा के आधार पर ऋण उपलब्ध करवाती है। ये लघु व मध्यम व्यवसायी देशी व विदेशी व्यापार को योगदान के साथ ही कुल राष्ट्रीय उत्पादन व आय में वृद्धि भी करते हैं।

11. देश में रोजगार को बढ़ावा - बीमा कम्पनी प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से दे श में रोजगार को बढ़ावा देती है। वह स्वयं कई व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करती है व इनके द्वारा बीमित संस्थाएं भी रोजगार का सृजन कर कुल राष्ट्रीय आय में वृद्धि कर रही है।

12. राष्ट्रीय महत्व के जोखिम युक्त कार्यों को प्रोत्साहन - बीमा ने ऐसे कई कार्यों को करने के लिए प्रोत्साहन दिया है जिनमें बहुत अधिक जोखिम विद्यमान होती है। उदाहरण -विश्वस्तरीय खेलकूद प्रतियोगिताओं, आधुनिक सैनिक उपकरणों का परीक्षण, अन्तरिक्ष यान एवं प्रयोगशालाएं आदि जोखिमयुक्त कार्यों में बीमा सहयोग कर रहा है।

13. राष्ट्रीय आय व उत्पादन में भी निरन्तरता - राष्ट्रीय आय की निरन्तरता को बनाये रखने में भी बीमा का योगदान है। अनेक प्राकृतिक व मनुष्यकृत कारणों से प्रतिवर्ष कई उद्योगों व्यवसाय, जहाज आदि नष्ट होते हैं जिनसे सरकार को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों की प्राप्ति होती है, लाखों लोगों को रोजगार व करोड़ों रुपये के माल व से वाओं का उत्पादन होता है, यदि इनका बीमा न हो तो इनमें से अधिकांश इकाईयां पुनःस्थापित नहीं हो सकेगी व बेरोजगारी फैल जायेगी। परन्तु बीमा के कारण ये उद्योग पुनः स्थापित हो जाते हैं व राष्ट्रीय आय व उत्पादन में निरन्तरता बनी रहती है।

14. सम्पूर्ण राष्ट्रीय विकास में योगदान - उद्योगों के विकास, रोजगार अवसरों के विकास, अधिक बचत व पूंजी निर्माण आदि सभी घटक सम्पूर्ण राष्ट्रीय विकास में योगदान करते हैं। बीमा के उपरोक्त लाभों व महत्व को देखकर हम कह सकते हैं कि- *बीमा में दया समान गुण होते हैं। इसमें बीमाकर्ता व बीमित दोनों सौभाग्यशाली होते हैं तथा बीमा जन्म से लेकर मृत्यु तक सहायक सिद्ध होता है।*

बीमा की सीमाएँ

अनिश्चितताओं एवं आशंकाओं से भरे जीवन में बीमा अत्यधिक महत्वपूर्ण है, आज बीमा - सम्पूर्ण व्यावसायिक जगत एवं मानव समुदाय की प्राथमिक आवश्यकता बन गया है फिर भी बीमा की अपनी कुछ सीमाएँ हैं जिनके कारण बीमा के वांछित लाभ नहीं मिल पाते हैं। बीमा की कुछ सीमाएं इस प्रकार हैं -

1. सभी जोखिमों का बीमा नहीं कराया जा सकता - जीवन में अनेक जोखिम विद्यमान हैं परन्तु सभी का बीमा सम्भव नहीं है केवल शुद्ध जोखिमों का ही बीमा करवाया जा सकता है, परिकल्पित जोखिमों का बीमा नहीं करवाया जा सकता है।

2. **ऊंची प्रीमियम दरें** - देश में जीवन बीमा के प्रति लोगों की विशेष रुचि नहीं है। वाहन बीमा भी कानूनी अनिवार्यता के कारण करवाया जाता है। बड़े कारखानों का बीमा प्रचलित है परन्तु मकान, दुकान, चोरी आदि का बीमा अधिक चलन में नहीं है। इन सब का मुख्य कारण बीमा प्रीमियम का ऊंचा होना है।

3. **नैतिक संकट**- बीमा करवाने वाले कुछ लोग बीमा का दुरुपयोग भी करते हैं। निम्न परिस्थितियों में व्यक्ति की नैतिक कमजोरियों के कारण बीमा की सफलता संदिग्ध हो जाती है -

(क) कुछ लोग बीमा सेवा का आवश्यकता से अधिक उपयोग करना चाहते हैं जैसे -आवश्यकता से अधिक समय अस्पताल में रुक कर ईलाज करवाना क्योंकि बीमा कम्पनी भुगतान कर रही है।

(ख) कुछ लोग बीमाकृत जीवन व सम्पत्ति को अपनी से वाएं दे ने के बदले अधिक पारिश्रमिक वसूल करते हैं। उदाहरण-बीमित रोगी से डॉक्टर द्वारा अधिक फीस वसूल करना।

(ग) बीमाकृत सम्पत्ति का लापरवाही से प्रयोग करना।

(घ) बीमितों द्वारा नुकसान को बढ़ा चढ़ा कर बताया जाना।

4. **बीमा लाभकारी विनियोग नहीं है** - बीमा सुरक्षा के साथ-साथ निवेश भी है किन्तु यह बहुत आकर्षक निवेश भी नहीं है। इससे प्राप्त होने वाला लाभ अन्य निवेशों से कम ही है। क्षतिपूर्क बीमा में व्यक्ति को केवल वास्तविक क्षति प्राप्ति का ही अधिकार होता है। अतः इसे आकर्षक निवेश नहीं माना जाता है।

5. **बीमा की ऊंची संचालन लागतें** - बीमा कम्पनियां प्रीमियम का लगभग 20 प्रतिशत भाग अपने संचालन पर ही खर्च कर देती हैं। जिससे अन्ततः प्रीमियम दरों में वृद्धि होती है।

6. **एकाकी व्यक्ति की जोखिम का सीमा समग्र नहीं** - बीमा की सफलता तभी संभव है जब समान प्रकार की जोखिमों से घिरे व्यक्तियों का बड़ा समूह हो। यदि किसी एक व्यक्ति या बहुत कम व्यक्तियों को जोखिम हो तो उनका बीमा करना संभव नहीं होता है।

7. **बीमा केवल वित्तीय मूल्य तक ही सीमित** - किसी घटित होने वाली घटना की वास्तविक हानि का मुद्रा में मापन हो सके तो ही बीमा संभव है। इस प्रकार केवल भौतिक हानियों का बीमा, पर अमौद्रिक हानियों जैसे मानसिक पीड़ा, उत्पीड़न, तनाव, चिन्ता, आदि की क्षतिपूर्ति का मापन व बीमा दोनों ही संभव नहीं है।

8. **कुछ बीमा पत्र केवल सरकारी सहयोग पर निर्भर**- निजी बीमाकर्ता कुछ विशिष्ट प्रकार की जोखिमों का बीमा नहीं कर सकते हैं, उनमें सरकारी सहयोग की आवश्यकता होती है। जैसे -बेरोजगारी बीमा आदि।

सरकारी क्षेत्र की बीमा कंपनियां

भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी)

भारतीय जीवन बीमा निगम को बीमा अधिनियम, 1956 नामक संसद के अधिनियम द्वारा 243 कंपनियों के विलय से 1 सितम्बर, 1956 को निगमित किया गया था। एलआईसी बीमा अधिनियम, 1938, एलआईसी अधिनियम, 1956, एलआईसी विनियमन, 1956, और बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण अधिनियम, 1999 द्वारा शासित होती है। 31 मार्च, 2016 की स्थिति के अनुसार, भारत में एलआईसी के क्षेत्रीय कार्यालय, 113 डिवीजनल कार्यालय, 2048 शाखा कार्यालय, 73 ग्राहक क्षेत्र, 1401 सैटेलाइट कार्यालय और 1240 छोटे कार्यालय हैं।

निगम के फिजी में, मॉरीशस में और यूनाइटेड किंगडम में शाखा कार्यालय हैं। यह विदेशी बीमा बाजार जैसे मनामा (बहरीन में पंजीकृत) जीवन बीमा निगम (अंतर्राष्ट्रीय) बी.एस.सी.(सी), नैरोबी में पंजीकृत केनईडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड; काठमाण्डू में पंजीकृत लाइफ इश्योरेंस कारपोरेशन (लंका) और रियाद में पंजीकृत सऊदी इंडियन कंपनी फॉर कारपोरेटिव इश्योरेंस (एसआईसीसीआई) में संयुक्त उद्यम (जेवी) कंपनियों द्वारा भी परिचालित की जाती हैं। एलआईसी ने भारतीय जीवन बीमा निगम, स्ट्रैटेजिक इक्विटी मैनेजमेंट लिमिटेड और म्यूचुअल ट्रस्ट बैंक लिमिटेड के मध्य दिनांक 14.12.2015 को बांग्ला देश लिमिटेड की संयुक्त उद्यम कंपनी

भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) भी बनाया है। पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक जीवन बीमा निगम (सिंगापुर) प्राइवेट लिमिटेड की स्थापना दिनांक 30.04.2012 को की गई है। उपर्युक्त में से दो संयुक्त उद्यम (जेवी), केनइंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, नैरोबी, केन्याउ और सऊदी इंडियन कंपनी फॉर को-ऑपरेटिव इश्योरेंस (एसआईसीसीआई), रियाद, किंगडम ऑफ सऊदी अरब संयुक्त कंपनी हैं जो जीवन और गैर-जीवन व्यवसाय का संचालन करती हैं; और दो जेवी, एलआईसी (नेपाल) लिमिटेड और एसआईसीसीआई उनके संबंधित स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध हैं।

भारतीय साधारण बीमा निगम

साधारण बीमा उद्योग 1972 में राष्ट्रीयकृत किया गया था और 107 बीमाकर्ता चार कंपनियों – नेशनल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, दि-न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, दि ओरियंटल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, और यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड में समूहीकृत और एकीकृत किए गए थे। जीआईसी वर्ष 1972 में निगमित की गई थी और अन्य चार कंपनी इसकी सहायक कंपनियां बनायी गयी थीं। नवंबर 2000 में जीआईसी को भारतीय पुनर्बीमाकर्ता के रूप में अधिसूचित किया गया था और इसकी सहायक कंपनियों पर इसकी पर्यवेक्षी के रूप में भूमिका का अंत कर दिया गया था। 21 मार्च 2003 से, जीआईसी की इसके सहायक कम्पानियों पर होल्डिंग की भूमिका को भी समाप्त कर दिया गया था और इसका स्वामित्व भारत सरकार को स्थानान्तरित कर दिया गया था। निगम का प्रधान कार्यालय मुंबई में है और 3 संपर्क कार्यालय भारत में (दिल्ली, कोलकाता और चैन्नई) हैं, 3 शाखाएं विदेश में (लंदन, दुबई और कुआलालम्पुर) हैं और 1 प्रतिनिधि कार्यालय मास्कोट में है। इसकी दो विदेशी सहायक कम्पनियां (जीआईसी रे साउथ अफ्रीका और जीआईसी रे इंडिया कारपोरेट मेम्बर लिमिटेड यू.के. में) भी हैं। 31.03.2016 की स्थिति के अनुसार, निगम के कर्मचारियों की संख्या 558 है। प्राधिकृत पूंजी 1000 करोड़ रुपये है जबकि कंपनी की पेड-अप इक्विटी पूंजी 430 करोड़ रुपये है।

न्यू इंडिया एश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

यह कंपनी सर दोराब जी द्वारा 23 जुलाई, 1919 में स्थापित की गई थी और 1973 में भारतीय कंपनियों के विलय से राष्ट्रीयकृत की गयी थी। 31.03.2016 की स्थिति के अनुसार, कंपनी के 2329 कार्यालय हैं और 18783 कर्मचारी हैं। यह कंपनी 170 से अधिक उत्पादों के साथ साधारण बीमा व्यापार के लगभग सभी खंडों में ग्राहकों को बीमा सेवा उपलब्ध कराती है। कंपनी की प्राधिकृत पूंजी और पेड-अप इक्विटी पूंजी क्रमशः 300 करोड़ रुपये है और 200 करोड़ रुपये है।

यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड 1938 में निगमित की गई थी। भारत में साधारण बीमा व्यवसाय के राष्ट्रीयकरण के साथ, 12 भारतीय बीमा कंपनियां, 4 कारपोरेटिव इश्योरेंस सोसाइटी और 5 विदेशी बीमाकर्ताओं के विदेशी परिचालन, भारतीय जीवन बीमा निगम के दक्षिणी क्षेत्र के साधारण बीमा परिचालन को छोड़कर ये सभी कंपनियां यूनाइटेड इंडिया इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड के साथ विलय कर दी गई थीं। 31.03.2016 की स्थिति के अनुसार, कंपनी के 2080 कार्यालय और 16345 कर्मचारी हैं। यह कंपनी साधारण बीमा व्यापार के लगभग सभी खंडों के ग्राहकों को बीमा सेवाएं उपलब्ध कराती है। कंपनी की प्राधिकृत पूंजी और पेड-अप इक्विटी पूंजी क्रमशः 200 करोड़ रुपये है और 150 करोड़ रुपये है।

दि ओरियंटल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

दि ओरियंटल इश्योरेंस कंपनी लिमिटेड 1947 में निगमित की गई थी। 2003 में भारतीय साधारण बीमा निगम द्वारा रखे जाने वाले कंपनी के शेयर भारत सरकार को स्थानान्तरित कर दिए गए थे। 31.03.2016 की स्थिति के अनुसार, देश में कंपनी के 1924 कार्यालय और 13923 कर्मचारी हैं। यह कंपनी साधारण बीमा व्यापार के

लगभग सभी खंडों के ग्राहकों को बीमा सेवाएं उपलब्ध कराती है। कंपनी की प्राधिकृत पूंजी और पेड-अप इक्विटी पूंजी 200 करोड़ रुपये है।

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

यह कंपनी 1906 में निगमित की गई थी। राष्ट्रीयकरण के बाद यह 21 विदेशी और 11 भारतीय कंपनियों के साथ नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड बनाने के लिए विलय कर दी गई थी। 31.03.2016 की स्थिति के अनुसार, पूरे भारत में इस कंपनी के 1998 कार्यालय और 15079 कर्मचारी हैं। यह कंपनी साधारण बीमा व्यापार के लगभग सभी खंडों के ग्राहकों को बीमा सेवाएं प्रदान करती है। कंपनी की प्राधिकृत पूंजी और पेड-अप इक्विटी पूंजी क्रमशः 200 करोड़ रुपये है और 100 करोड़ रुपये है।

एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड

'एग्रीकल्चर इंश्योरेंस कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड' (एआईसी) को 20 दिसम्बर, 2002 में कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत भारत में कृषि और इससे संबंधित गतिविधियां करने वाले उन व्यक्तियों को बीमा की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए निगमित किया गया था। भारतीय साधारण बीमा निगम (जीआईसी), नाबार्ड और चार सरकारी क्षेत्र की साधारण बीमा कंपनियों ने कंपनी की शेयर पूंजी में योगदान दिया है। कंपनी की 200 करोड़ रुपये की प्रारम्भिक पेड-अप इक्विटी शेयर पूंजी के साथ प्राधिकृत शेयर पूंजी 1500 करोड़ रुपये है।

कंपनी ने बीमा विनियामक और विकास प्राधिकरण (इरडा) से अनुमोदन प्राप्त होने पर 1 अप्रैल, 2003 से इसके व्यवसाय परिचालन की शुरुआत कर दी थी। 31 मार्च, 2015 की स्थिति के अनुसार, पूरे देश में इसके कुल कर्मचारियों की संख्या 274 है। इसका प्रधान कार्यालय नई दिल्ली में है, विभिन्न राज्यों की राजधानियों में 17 क्षेत्रीय कार्यालय और जिला स्तर पर 3 एक कर्मचारी कार्यालय हैं।

एसेट मैनेजमेंट कंपनियां , (Asset Management Firms)

एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) एक ऐसी कंपनी है जो अपने ग्राहकों के पूल किए गए फंडों को प्रतिभूतियों जैसे म्यूचुअल फंड, इक्विटी में निवेश करने में सहायता करती है जो घोषित वित्तीय उद्देश्यों से मेल खाते हो। एसेट मैनेजमेंट कंपनी (एएमसी) निवेशकों को अधिक विविधता और निवेश विकल्प प्रदान करती है, जो उनके पास होते हैं। एएमसी म्यूचुअल फंड, हेज फंड और पेंशन योजनाओं का प्रबंधन करते हैं, और ये कंपनियां अपने ग्राहकों को सेवा शुल्क या कमीशन चार्ज करके आय कमाती हैं।

आम तौर पर, एसेट मैनेजमेंट कंपनी को खरीद-पक्ष फर्म माना जाता है। यह केवल इस तथ्य को संदर्भित करता है कि वे अपने ग्राहकों को पैसा निवेश करने या प्रतिभूतियों को खरीदने में मदद करते हैं। वे निर्णय लेते हैं कि इन-हाउस रिसर्च और डेटा एनालिटिक्स के आधार पर क्या खरीदना है, लेकिन वे विक्रय-पक्ष फर्मों से भी सार्वजनिक सिफारिशें लेते हैं।

निवेश बैंकिंग फर्म (Investment Banking firms)

निवेश बैंक सरकारों को पूंजी बाजार (securities) में प्रतिभूतियां (capital market)(अंश पूंजी (equity) एवं ऋण (debt) दोनों) जारी एवं विक्रय कर धन जुटाने में मदद करती है, साथ ही विलय और अधिग्रहण सौदों पर सलाह प्रदान करती है। १९८० के दशक के अंत तक, संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा निवेश बैंकिंग और वाणिज्य बैंकों (commercial bank) के बीच एक अलगाव बनाये रखा।

अधिकतर निवेश बैंक महत्वपूर्ण विलय (mergers), अधिग्रहण (acquisitions), विनिवेशकरण (divestiture), सलाहकार सेवाएँ या फ़िर ग्राहकों के लिए अन्य वित्तीय सेवाएँ प्रदान करती है, जैसे की व्युत्पादों (derivatives), निश्चित आय (fixed income), विदेशी विनिमय (foreign exchange), गल्ला (commodity) एवं अंश पूंजी प्रतिभूतियों (equity securities) के व्यापार।

नकद या प्रतिभूतियों के लिए प्रतिभूतियों का व्यापार (जैसे की लेनदेन संबंधित सुविधा प्रदान, बाजार बनाना), या फ़िर प्रतिभूतियों का प्रोत्साहन (जैसे की अवलेखन (underwriting), शोध इत्यादि) का उल्लेख विक्रय पक्ष (sell side) के रूप में होता है।

अपने निवेशों पर अधिकतम वापसी हेतु विक्रय पक्ष के उत्पाद एवं सेवाओं का पेंशन निधि (pension fund), म्यूचुअल फंड (mutual fund), बचाव निधि (hedge fund) एवं निवेशकारी आमजन द्वारा उपयोग से क्रय पक्ष (buy side) बनता है। अनेकों कंपनियों में क्रय एवं विक्रय पक्ष अंगीभूत है।

वालस्ट्रीट के सबसे बृहद उभरे प्रकोष्ठ के फार्मा (बाजार पूंजीकरण सम्बंधित) में शामिल हैं सबसे बड़ी कंपनियों के वर्ग (bulge-bracket), सिटीग्रुप (Citigroup), क्रेडिट Suisse (Crédit Suisse), डच बैंक (Deutsche Bank), गोल्डमैन सैक्स (Goldman Sachs), जेपी मोर्गन चेज़ (JP Morgan Chase), मेरील लिंघ (Merrill Lynch) मोर्गन स्टेनली (Morgan Stanley), लेहमन ब्रदर्स (Lehman Brothers) और यूबीएस एजी (UBS AG) शामिल है।

एक निवेश बैंक की संगठनात्मक संरचना

मुख्य गतिविधियाँ और इकाईयाँ

बैंक के अपने एवं अपने ग्राहकों के लिए, बैंक के प्राथमिक कार्य हैं उत्पादों की खरीद एवं विक्री बैंकों, एक विशेष वर्ग के व्यापारियों द्वारा किए गए स्वामित्व प्रधान कारोबार (proprietary trading) के लिए जो ग्राहकों के मुखातिब नहीं होते, के मध्यम से जोखिम उठाते हैं तथा जैसे व्यापारी जो ग्राहक को उत्पाद खरीद विक्री के मध्यम से जोखिम उठाते हैं पर अपने कुल लागत का बचाव नहीं करते, के लिए जोखिम उठाते हैं। बैंकों अपने तुलन पत्र में एक निर्धारित जोखिम प्रदर्शित कर, ज्यादा-से-ज्यादा लाभ कमाने की कोशिश करती है। एक निवेश बैंक तथाकथित तीन भागों में विभाजित रहती है **सम्मुख कार्यालय (Front Office)**, **मध्य कार्यालय (Middle Office)** और **आंतरिक कार्यालय (Back Office)** .

सम्मुख कार्यालय (Front Office)

निवेश बैंकिंग निवेश बैंकों के पारंपरिक पहलू में शामिल है, जो की ग्राहकों को पूंजी बाजार (funds) से कोष (Capital Markets) उगाही तथा विलय (mergers) एवं अधिग्रहण (acquisitions) पर सलाह प्रदान कर सहायता करती है। इन सेवाओं का प्रदान अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और कठिन प्रतीत होते हैं। निवेश बैंकिंग, निवेशकों को प्रतिभूति निर्गमन सदस्यता में सम्मिलित कर सकता है, बोलीदाताओं के साथ समन्वय कर सकता है, या फ़िर विलय लक्ष्य से मोल-तोल कर सकता है। निवेश बैंकिंग प्रभाग में अन्य सेवाएँ शामिल हैं विलय और अधिग्रहण (mergers and acquisitions) (एम एंड ए) और निगमक वित्त प्रदान (corporate finance). आम तौर पर निवेश बैंकिंग प्रभाग (IBD) उद्योग सम्बन्धी तथा उत्पाद कवरेज समूहों में विभाजित होते हैं। उद्योग सबधी समूहों को एक विशिष्ट उद्योग पर आलोक प्रदान करते हैं, जैसे की स्वास्थ्यसेवा, उद्योगिकी, या प्रौद्योगिकी, तथा उद्योगों के अंतर्गत निगमों से, बैंक के लिए व्यवसाय लेन हेतु सबध बनाये रखते हैं। उत्पाद सम्बन्धी समूहों ध्यान देते हैं वित्तीय उत्पाद पर, जैसे विलय और अधिग्रहण, सुविधाकृत वित्त एवं उच्च श्रेणी के ऋण.

निवेश प्रबंधन (Investment management) निवेशकों के लाभ के लिए निर्दिष्ट निवेश लक्ष्यों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रतिभूतियों (शेयरों, ऋणपत्रों (bonds), आदि) तथा अन्य परिसंपत्तियों (जैसे भू-संपत्ति (real estate)) के पेशेवर प्रबंधन हैं। निवेशक, संस्थानों (बीमा कंपनियों (insurance companies), पेंशन निधियों (pension funds), निगमों (corporations) आदि) या निजी निवेशकों (private investors) (जिनमे दोनों, सीधे निवेश अनुबंधों के माध्यम से तथा अधिकतर सामान्यतया सामूहिक निवेश योजनाओं, जैसे म्यूचुअल फंड, के माध्यम से (mutual funds)) हो सकते हैं। एक निवेश बैंक के निवेश प्रबंधन (Investment management) प्रभाग अक्सर निजी संपत्ति प्रबंधन और निजी ग्राहक सेवा के रूप में, आम तौर पर अलग अलग

समूहों में, विभाजित होते हैं। परिसंपत्ति प्रबंधन का संबंध संस्थागत निवेशकों के साथ है, जबकि निजी संपत्ति प्रबंधन, उच्च शुद्ध-योग्यता संपन्न व्यक्तियों के धन का प्रबंधन करता है।

विक्रय एवं व्यवसायबाजार निर्माण (market making) प्रक्रिया में, व्यापारी वर्ग प्रति सौदे पर क्रमागत वृद्धिमान अर्थ राशि: बनाने के लक्ष्य में वित्तीय उत्पादों का क्रय एवं विक्रय करेंगे। निवेश बैंकों के विक्रय बल को विक्रय कहते हैं, जिनका प्राथमिक कार्य संस्थागत तथा उच्च योग्यतावाले निवेशकों व्यापार योजनाओं पर सुझावों (विक्रय चेतावनी/क्रेता (caveat emptor) सावधान अधरों से संबंधित) के लिए संपर्क करना तथा आदेश लेना। बिक्री मेज तब अपने ग्राहकों के आदेशों को उपर्युक्त व्यापार मेज को सूचित करते हैं, जो की मूल्य निर्धारण तथा व्यापार निष्पादन कर सकते हैं, या फिर उचित दर पर, निर्दिष्ट जरूरत योग्य नए उत्पादों की संरचना करते हैं। **स्ट्रक्चरिंग, व्युत्पन्न (derivatives)** के मैदान में आने से, अपेक्षाकृत हल में बना एक प्रभाग है, जो की उच्चतम तकनीकी संपन्न एवं सांख्यिक कर्मियों के कर्यस्वरूप बना जटिल संरचना संपन्न उत्पाद है, तथा साधारण तौर पर नकद प्रतिभूतियों के अन्तर्निहित की तुलना में बहुत अधिक मार्ग एवं आय प्रदान करती है। संख्यात्मक योग्यता संबंधित आवश्यकता से भौतिकी और गणित में पीएच.डी. (Ph.D.) लोगों की आवश्यकता पैदा हुई है, जो क्वान्टास (quants) के रूप में कार्य करते हैं।

व्यापारिक बैंकिंग निवेश बैंकों की एक निजी अंशपूंजी (private equity) के रूप में कार्य करती है। उदाहरणों में शामिल है गोल्डमैन सैक्स कैपिटल पार्टनर्स और जेपी मोर्गन वन इकुइटी पार्टनर्स।

अनुसंधान (Research) एक विभाग है, जो कंपनियों की समीक्षा करता है और उनकी संभावनाओं के बारे में अक्सर "खरीद" या "विक्री" रेटिंग के साथ रिपोर्ट लिखता है। जबकि अनुसंधान प्रभाग कोई राजस्व उत्पन्न नहीं करता, इसके संसाधनों का व्यापार में व्यापारियों की सहायता करने के लिए, बिक्री बल द्वारा अपने ग्राहकों तथा निवेश बैंकों को, उनके ग्राहकों के साथ, योजनाओं के बारे में सुझाव देने के लिए उपयोग किया जाता है। निवेश बैंक एवं इसके विश्लेषण में संभावित स्वार्थ विरोध रहने पर, प्रकाशित विश्लेषण बैंक के मुनाफे को प्रभावित कर सकती है, इसलिए हाल के वर्षों में निवेश बैंकिंग और अनुसंधान के बीच के रिश्ते में सार्वजनिक और निजी कार्यों के बीच चीन की दीवार (Chinese wall) जैसी एक उच्च नियंत्रण की आवश्यकता बन गई है।

रणनीति (Strategy) एक ऐसा विभाग है जो बाह्य और साथ ही आंतरिक ग्राहकों को विभिन्न बाजारों में अपनायी जानेवाली रणनीतियों पर सलाह देता है। व्युत्पत्तियों से लेकर विशिष्ट उद्योगों, रणनीतिकार कंपनियों और उद्योगों को पूरी तरह से व्यापक आर्थिक परिदृश्य विचारते हुए एक मात्रात्मक ढांचे में प्रस्तुत करता है। यह रणनीति अक्सर फर्म के संचालन तरीके को प्रभावित करती है, अपने स्वामित्व एवं प्रवाह की स्थिति के लिए संभावित दिशा निर्देश सुझाती है, विक्रय प्रतिनिधि ग्राहकों को क्या सुझाव दे बताती है, साथ ही साथ ढांचों द्वारा नए उत्पादों को गठित करने का तरीका बताती है।

मध्य कार्यालय (Middle Office)

जोखिम प्रबंधन (Risk Management) इसमें विश्लेषण शामिल है बाजार (market) और ऋण जोखिम (credit risk) व्यापारियों की बैलेंस शीट पर अपने दैनिक ट्रेडों के संचालन में और पूंजी की राशि 'खराब' ट्रेडों एक डेस्क समग्र कर एक हानिकारक प्रभाव से रोकने के लिए व्यापार करने में और सीमा निर्धारण में सक्षम होते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण मध्य कार्यालय की भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि ऊपर वर्णित आर्थिक जोखिम पर यथार्थ (प्रतिपक्ष के साथ वाणिज्यिक (counterparty) शर्तों के अनुसार) सही सही (सबसे उपयुक्त प्रणालियों के मानकीकृत बुकिंग माडलों के अनुसार) तथा समय पर (साधारणतया व्यापार निष्पादन के 30 मिनट के भीतर) कब्जा लिया गया है। हाल के वर्षों में गलतियों का जोखिम, "परिचालनात्मक जोखिम (operational risk)" कहलाने लगा है और मध्यम कार्यालय के आश्वासनों में इस खतरे से निबटने के उपाय सुझाने का कार्य शामिल है।

जब ऐसा आश्वासन उपलब्ध नहीं रहता हो, बाजार और ऋण जोखिम का विश्लेषण अविश्वसनीय हो जाते हैं और तब इच्छाकृत हेरफेर का रास्ता खुल जाता है।

वित्त (Finance) संबंधी क्षेत्र एक निवेश बैंक की पूंजी प्रबंधन तथा जोखिम निगरानी के लिये उत्तरदायी होता है। किसी फर्म का वित्त विभाग, उसके पूंजी प्रवाह का अनुसन्धान एवं विश्लेषण करते हुए वरीय प्रबंधन के लिये आवश्यक क्षेत्रों, जैसे की फर्म के वैश्विक जोखिम परिधि नियंत्रण तथा फर्म के विभिन्न व्यवसायों की लाभकारिता एवं ढाचों, में मुख्य सलाहकार होता है। संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम में, वित्त नियंत्रक (Financial Controller) एक वरिष्ठ पदाधिकारी हैं जो प्रायशः मुख्य वित्तीय अधिकारी को प्रतिवेदित करते हैं।

अनुपालन (Compliance) क्षेत्रों, निवेश बैंक के दैनिक परिचालन में (एफएसए) विनियमों तथा आंतरिक विनियमों के अनुपालन के लिए जिम्मेदार हैं। अक्सर आंतरिक कार्यालय प्रभाग के रूप में भी विवेचित होता है।

आंतरिक कार्यालय (Back Office)

परिचालन में शामिल हैं सौदों के संचालन सबधी आँकड़ों की जाँच करते हुए यह सुनिश्चित करना की वे त्रुटिपूर्ण नहीं हैं तथा अपेक्षित अंतरणों को संपादित करते हैं। जबकि कुछएक लोगों का मानना है कि एक निवेश बैंक का परिचालन विभाग अन्य विभागों की तुलना में अधिकाधिक कार्य सुरक्षा के साथ क्षीणतम वृत्ति विस्तार संभावनाएँ प्रदान करता है, बहुत से बैंकों में परिचालन वाह्य सेवित है। फिर भी, यह, बैंक का एक महत्वपूर्ण प्रभाग है। वित्त सम्बंधित कैरियर में बढ़ती प्रतिस्पर्धा के कारण, कॉलेज की डिग्री अब अधिकाधिक टायर -1 निवेश बैंकों में अनिवार्य हो गया है। बैंक के समस्त प्रभागों के बीच होनेवाले सौदों एवं लेनदेन के गहराइयों को समझने में एक वित्त संबंधी डिग्री प्रभावी प्रमाणित हुआ है।

प्रौद्योगिकीसूचना और प्रौद्योगिकी विभाग का उल्लेख करती है। हर बड़े निवेश बैंक में काफी मात्रा में प्रौद्योगिकी टीम द्वारा निर्मित स्व-गृह सॉफ्टवेयर हैं, जो कंप्यूटर और दूरसंचार आधारित सहायता के लिए भी उत्तरदायी होते हैं। पिछले कुछ वर्षों में प्रौद्योगिकी में बड़े पैमाने पर बदलाव आया है और अधिकाधिक बिक्री और व्यापार डेस्क इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग प्लेटफार्म का उपयोग कर रहे हैं। ये प्लेटफार्म जटिल मॉडल संचालित एल्गोरिदम को स्व-संचालित हेजिंग की सेवा दे सकते हैं।

सेकेंडरी बाजार की संरचना (Structure of Secondary market)

प्राथमिक पूंजी बाजार और द्वितीयक पूंजी बाजार के बीच का अंतर यह है कि प्राथमिक बाजार में, निवेशक सीधे उन कंपनियों से सीधे प्रतिभूतियां खरीदते हैं, जबकि द्वितीयक बाजार में निवेशकों के बीच व्यापारिक प्रतिभूतियां होती हैं खुद को और लेनदेन में भाग लेने वाली सुरक्षा के साथ कंपनी लेनदेन में भाग नहीं लेती।

जब कोई कंपनी सार्वजनिक रूप से पहली बार स्टॉक और बांड बेचती है, तो ऐसा प्राथमिक पूंजी बाजार में होता है कई मामलों में, यह एक प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) का रूप लेता है जब निवेशक प्राथमिक पूंजी बाजार पर प्रतिभूतियां खरीदते हैं, तो प्रतिभूतियों की पेशकश करने वाली कंपनी पहले से ही एक हामीदारी फर्म को भेंट की समीक्षा करने के लिए किराए पर ले रही है और कीमतों को रेखांकित करके और जारी किए जाने वाले प्रतिभूतियों के अन्य विवरणों को एक विवरणपत्र तैयार कर सकती है।

प्राथमिक पूंजी बाजार के माध्यम से प्रतिभूतियों को जारी करने वाली कंपनियों ने निवेश संस्थाओं को बड़ी संस्थागत निवेशकों से प्रतिबद्धताओं को प्राप्त करने के लिए प्रतिभूतियों की खरीद के लिए पहली बार पेशकश की है। छोटे निवेशक अक्सर इस समय प्रतिभूतियों की खरीद नहीं कर सकते हैं, क्योंकि कंपनी और उसके निवेश बैंकर आवश्यक मात्रा को पूरा करने के लिए कम समय में सभी उपलब्ध प्रतिभूतियों को बेचना चाहते हैं और बड़े निवेशकों को बिक्री के विपणन पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए अधिक प्रतिभूतियों को एक बार में खरीद सकते हैं निवेशकों को बिक्री के विपणन में अक्सर "रोड शो" या "कुत्ता और टट्टू शो" शामिल हो सकते हैं, जिसमें निवेश

बैंकों और कंपनी के नेतृत्व संभावित निवेशकों से मिलने और उन्हें जारी किए गए सुरक्षा के मूल्य के बारे में समझने के लिए यात्रा करते हैं।

द्वितीयक बाजार है जहां प्राथमिक बाजार में दिए गए सभी शेयरों और बॉन्ड को बेची जाने के बाद प्रतिभूतियों का कारोबार होता है। न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज (एनवाईएसई), लंदन स्टॉक एक्सचेंज या नास्डैक जैसे बाजार द्वितीयक बाजार हैं। द्वितीयक बाजार में, छोटे निवेशकों को सिक्योरिटीज खरीदने या बेचने का बेहतर मौका मिलता है, क्योंकि वे छोटी राशि की वजह से आईपीओ से बाहर नहीं रह जाते हैं। कोई भी द्वितीयक बाजार पर सिक्योरिटीज खरीद सकता है, जब तक वह उस कीमत का भुगतान करने को तैयार हों, जिसके लिए सुरक्षा का कारोबार होता है।

द्वितीयक बाजार पर, किसी निवेशक को अपने दम पर प्रतिभूतियों की खरीद के लिए दलाल की आवश्यकता होती है। सुरक्षा की कीमत बाजार के साथ उतार-चढ़ाव करती है, और निवेशक की लागत में दलाल को दिया गया कमीशन शामिल होता है। बिकती प्रतिभूतियों का मात्रा दिन-प्रति-दिन अलग-अलग होता है, क्योंकि सुरक्षा में उतार-चढ़ाव की मांग होती है। निवेशक द्वारा भुगतान की गई कीमत अब सीधे सुरक्षा की प्रारंभिक कीमत से जुड़ी नहीं होती है, जैसा कि पहले जारी किया गया था, और जो कंपनी सुरक्षा जारी करती है, वह दो निवेशकों के बीच किसी भी बिक्री के लिए एक पार्टी नहीं है। हालांकि, कंपनी द्वितीयक बाजार पर स्टॉक बैकबैक में संलग्न हो सकती है।

सेकेंडरी बाजार ट्रेडिंग यांत्रिकी , आदेश के प्रकार, लघु बिक्री

प्राइमरी बनाम सेकेंडरी मार्केट होता है। कोई कंपनी पहली बार लिस्ट होने के लिए पब्लिक इश्यू लाती है उसे प्राइमरी मार्केट कहते हैं। आईपीओ और पब्लिक इश्यू प्राइमरी मार्केट में लाए जाते हैं। लिस्ट होने के बाद शेयर सेकेंडरी मार्केट में ट्रेड करते हैं। सेकेंडरी मार्केट में रोजाना शेयरों की खरीद-बिक्री होती है। भारत में बीएसई - एनएसई सेकेंडरी मार्केट हैं।

सेकेंडरी मार्केट में ट्रेडिंग 2 तरह की होती है। ऑफलाइन ट्रेडिंग और ऑनलाइन ट्रेडिंग। शेयरों की खरीद-बिक्री के लिए ट्रेडिंग, डीमैट और बैंक अकाउंट आपस में लिंक होना जरूरी होता है। ट्रेडिंग अकाउंट ब्रोकर के पास खुलता है।

ऑफलाइन ट्रेडिंग ट्रेडर्स खुद नहीं करते वह ट्रेडर्स ब्रोकर को फोन पर शेयर खरीदने को कहता है। कई ट्रेडर्स डीलिंग रूम में बैठकर ब्रोकर के जरिए ट्रेडिंग करते हैं। सुबह साढ़े 9 बजे से शाम साढ़े 3 बजे तक ऑफलाइन ट्रेडिंग संभव है।

ऑनलाइन ट्रेडिंग ब्रोकर की वेबसाइट के जरिए ट्रेडर्स खुद करते हैं। ऑनलाइन ट्रेडिंग में ट्रेडिंग, बैंक और डीमैट अकाउंट आपस में लिंक होना जरूरी है। ऑनलाइन अकाउंट भी ब्रोकर के यहां खोला जाता है। ऑनलाइन ट्रेडिंग में ब्रोकर से बात करना जरूरी नहीं होता। इन दिनों ऑनलाइन ट्रेडिंग मोबाइल के जरिए भी मुमकिन है। साथ ही कई ब्रोकर मोबाइल पर ट्रेडिंग एप भी मुहैया कराते हैं। मोबाइल के जरिए भी ब्रोकर की साइट से ट्रेडिंग की जा सकती है। ऑनलाइन ट्रेडर्स भी जरूरत पड़ने पर फोन पर ब्रोकर के जरिए ऑफलाइन ट्रेड कर सकते हैं। लेकिन ज्यादातर ब्रोकर ऑनलाइन और ऑफलाइन ट्रेडिंग दोनों सुविधाएं देते हैं।

कॉन्ट्रैक्ट नोट ट्रेडिंग खत्म होने के बाद ब्रोकर शाम तक ट्रेडर्स के पास भेजता है। कॉन्ट्रैक्ट नोट में ट्रेडिंग से जुड़ा सारा हिसाब किताब होता है। कॉन्ट्रैक्ट नोट में शेयर की कीमत, संख्या और खरीद-बिक्री की पूरी जानकारी होती है। कॉन्ट्रैक्ट नोट ईमेल के जरिए ट्रेडर्स को भेजा जाता है। ट्रेडर्स अगर चाहे तो कूरियर के जरिए कॉन्ट्रैक्ट नोट की हार्ड कॉपी भी भेजी जाती है।

ऑफलाइन ट्रेड दो तरह से होता है। पहले वो जो फोन पर ब्रोकर को ऑर्डर देकर ट्रेड करते है। और दूसरे वो जो ब्रोकर के ऑफिस में बैठकर ट्रेड करते है। ऑनलाइन ट्रेडिंग में ब्रोकर फोन पर ट्रेडर्स को लगातार अपडेट करता है।

फोन पर ट्रेडिंग की सारी बातचीत रिकॉर्ड की जाती है। ट्रेडिंग को लेकर विवाद होने पर रिकॉर्डिंग सुनी जाती है। फोन पर ट्रेडिंग हमेशा रिकॉर्डेड लाइन पर ही होनी चाहिए। ट्रेडिंग कन्फर्म होने की जानकारी एक्सचेंज भी ट्रेडर्स को भेजते हैं। ऑफलाइन ट्रेड में कॉन्ट्रैक्ट नोट बेहद जरूरी है। कॉन्ट्रैक्ट नोट ट्रेडिंग का सबूत होता है।

ऑफलाइन ट्रेडिंग की जरूरी बातें हैं। विवाद और कन्फ्युजन से बचने के लिए ट्रेडर्स और ब्रोकर में बातचीत साफ और स्पष्ट होनी चाहिए। शेयर का नाम सही सही बताया जाना चाहिए। साथ ही शेयर की कीमत स्पष्ट तौर पर बताई जानी चाहिए। खरीद या बिक्री में शेयरों की संख्या भी साफ और स्पष्ट होनी चाहिए। शेयर खरीदना है या बेचना - ये भी साफ और स्पष्ट तौर पर बताया जाना चाहिए। अगर ब्रोकर और ट्रेडर्स में विवाद होता है तो सेबी के पास जाना चाहिए।

ब्रोकर अपने ट्रेडर्स को ज्यादा शेयर खरीदने के लिए लीवरेज भी देते हैं। जितना ज्यादा लीवरेज उतना ज्यादा फायदा या नुकसान के आसार होते हैं। पॉजिशन उतनी ही लें जितना फंड हो। लीवरेज ब्रोकर और ट्रेडर्स के रिश्तों पर निर्भर करता है।

रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्ट्स वो डॉक्युमेंट है जो पब्लिक इश्यू लाने से पहले सेबी को देना होता है। ये डॉक्युमेंट कंपनी के प्रमोटर्स की ओर से मर्चेन्ट बैंकर सेबी को सौंपता है। रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्ट्स में कंपनी और उसके प्रमोटर्स के बारे में सारी जानकारी दी जाती है। रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्ट्स में कंपनी के फाइनेंस, टैक्स और उससे जुड़े विवाद समेत हर चीज का ब्योरा होता है। रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्ट्स मर्चेन्ट बैंकर और ऑडिटर सर्टिफाई करते हैं। सेबी की मंजूरी के बाद रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्ट्स का नाम बदलकर प्रॉस्पेक्ट्स हो जाता है। रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्ट्स मंजूर होने के बाद कोई कंपनी अपना आईपीओ ला सकती है। निवेशक को आईपीओ में पैसा लगाने से पहले प्रॉस्पेक्ट्स जरूर पढ़ना चाहिए। प्रॉस्पेक्ट्स में कारोबार से जुड़े रिस्क फैक्टर दिए जाते हैं। निवेशकों को रिस्क फैक्टर पर जरूर गौर करना चाहिए।

ईपीएस का मतलब प्रति शेयर आय से है। टैक्स घटाने के बाद प्रति शेयर जो मुनाफा होता है उसे ईपीएस कहा जाता है। कंपनी के मुनाफे को उसके शेयरों की संख्या से डिवाइड करके ईपीएस यानि प्रति शेयर आय निकाली जाती है। ईपीएस से भी शेयर की कीमत तय होती है। पीई यानि प्राइस टू अर्निंग रेशियो भी ईपीएस के आधार पर ही निकाला जाता है।

डेट यानि कर्ज और इक्विटी के बैलेंस को डेट टू इक्विटी रेशियो कहा जाता है। ये कर्ज और निवेश की गई पूंजी के संबंध को भी दिखाता है। कम डेट-इक्विटी रेशियो वाली कंपनी को अच्छा समझा जाता है। अलग अलग सेक्टरों की कंपनियों में डेट टू इक्विटी रेशियो अलग अलग होता है। आमतौर पर इंफ्रा और पावर सेक्टर में डेट-टू-इक्विटी रेशियो ज्यादा होता है। जबकि एफएमजीसी और फार्मा सेक्टर का डेट-टू-इक्विटी रेशियो कम होता है। ज्यादा डेट-टू-इक्विटी रेशियो वाली कंपनियों के शेयरों पर ज्यादा रिटर्न नहीं आते। ज्यादा डेट-टू-इक्विटी वाली कंपनियों में लंबे नजरिए निवेश फायदेमंद होता है।

ट्रेडिंग आर्डर टाइप्स

टर्मिनलों आईएफसी बाजार की ट्रेडिंग निम्न आदेश प्रकार निष्पादित हैं: बाजार, लंबित, से लिंक, OCO और आदेश सक्रिय करा। पीछे चल बंद करो मोड सर्वर-आधारित है, यानी चल रही है यहां तक कि जब क्लाइंट का टर्मिनल बंद है

मार्किट आर्डर

बाजार आदेश एक ग्राहक के आदेश को खरीदने या बेचने के वर्तमान बाजार मूल्य पर एक वित्तीय साधन है। लेन-देन तुरन्त के माध्यम से प्रदर्शन किया है ट्रेडिंग प्लेटफार्म और मूल्य पर बाजार आदेश विंडो में या डीलर के द्वारा उद्धृत किया गया कीमत में टेलीफोन के जरिए दिखाया गया।

बाजार आदेश विंडो में ग्राहक का अधिकतम अनुमति प्राप्त कीमत विचलन आदेश का निष्पादन अनुरोध की गई कीमत से सेट कर सकते हैं। एक कठोर मूल्य बदलें और नेटवर्क के मामले में देरी की स्थिति उद्घाटन निम्नलिखित तरीके में प्रदर्शन किया है:

- यदि वर्तमान बाजार मूल्य से परे निर्दिष्ट विचलन है, ग्राहक एक नए बाजार मूल्य के साथ उपलब्ध कराया जाएगा। इस मामले में ग्राहक ऑर्डर निष्पादित करने के लिए नए मूल्य स्वीकार करता हो।
- यदि वर्तमान बाजार मूल्य सेट विचलन के भीतर रहता है, तो स्थिति इस बाजार मूल्य पर खोला जाएगा।

पेंडिंग आर्डर

वर्तमान बाजार मूल्य से अलग कीमत पर एक व्यापार की स्थिति को खोलने के लिए एक क्लाइंट का आदेश आदेश लंबित है।

टाइप्स ऑफ़ पेंडिंग ऑर्डर्स:

- सेल्ल लिमिट – वर्तमान बाजार मूल्य से अधिक कीमत पर एक बेचने के आदेश।
- बुय लिमिट – एक खरीद आदेश वर्तमान बाजार मूल्य से कम कीमत पर।
- सेल्ल स्टॉप – वर्तमान बाजार मूल्य से कम कीमत पर बेचने के आदेश।
- बुय स्टॉप – एक खरीद आदेश के वर्तमान बाजार मूल्य से अधिक कीमत पर।

जब एक आदेश में निर्धारित मूल्य बाजार मूल्य पहुँचता है, खरीदने या बेचने के एक सौदा शुरू हो रहा है। ग्राहक द्वारा निर्धारित मूल्य पर या एक बेहतर कीमत पर बेचने की सीमा और सीमा खरीद आदेश क्रियान्वित कर रहे हैं। जब पहली बार बाजार में उपलब्ध मूल्य पर ऑर्डर मार डाला जा सकता मूल्य अंतराल, के मामलों को छोड़कर, ग्राहक द्वारा निर्धारित मूल्य पर बेचने के बंद करो और बंद करो खरीदें आदेश क्रियान्वित कर रहे हैं।

लिंकड लिमिट एंड स्टॉप ऑर्डर्स

वहाँ एक खुले स्थान या एक लंबित आदेश - बंद करो हानि और लाभ ले करने के लिए जुड़ा हुआ आदेश के दो मुख्य प्रकार हैं:

- बस्टॉप लोस्स आर्डर संभावित नुकसान को सीमित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है और एक मूल्य पर सेट स्थिति खुलने की कीमत या आदेश का निष्पादन लंबित की कीमत से भी बदतर है।
- ट्रेक प्रॉफिट लक्षित लाभ के स्तर तक पहुँचने के द्वारा एक स्थिति को बंद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है और एक मूल्य पर बेहतर खोलने की स्थिति के मूल्य या की कीमत लंबित क्रम निष्पादन से सेट है।

जब मूल्य एक लिंकड स्टॉप लोस्स और टेक प्रॉफिट आर्डर में सेट स्तर तक पहुँचता है, स्थिति अपने आप बंद हो जाता है।

स्थिति बंद है जब लिंकड स्टॉप लोस्स एंड टेक प्रॉफिट ऑर्डर्स स्वचालित रूप से हटा रहे हैं या लंबित आदेश को रद्द कर दिया गया है। टेक प्रॉफिट आर्डर ग्राहक द्वारा निर्धारित कीमत पर या एक बेहतर कीमत पर निष्पादित किया है। स्टॉप लोस्स आर्डर एक ग्राहक द्वारा निर्धारित मूल्य पर निष्पादित किया है, मूल्य अंतराल के मामलों को छोड़कर, बाजार में उपलब्ध पहली कीमत पर आर्डर निष्पादित किया जा सकता है।

OCO - एक दूसरे को रद्द (केवल NetTradeX व्यापार मंच में)

OCO आदेश वर्तमान बाजार मूल्य से अलग कीमतों पर एक स्थिति को खोलने के लिए सेट दो लंबित आदेशों का एक संयोजन है। दो आदेशों में से एक का निष्पादन शेष एक के एक स्वतः हटाने के लिए लाता है।

पेंडिंग आर्डर करने के लिए OCO आदेश का निष्पादन नीति लागू किया जाता है..

एक्टिवेटेड आर्डर (NetTradeX और MetaTrader 5 व्यापारिक प्लेटफार्मों पर)

सक्रिय क्रम मूल्य सक्रियण के स्तर तक पहुँच जाता है, जब सेट किया गया है एक लंबित क्रम है। लंबित आदेश निष्पादन नीति सक्रिय आदेश के लिए लागू किया जाता है। MetaTrader 5 प्लेटफॉर्म पर, सक्रिय ऑर्डर्स को स्टॉप लिमिट खरीदें और स्टॉप लिमिट बेचें कहा जाता है।

ट्रेलिंग स्टॉप

ट्रेलिंग स्टॉप मोड निम्नलिखित नियम के अनुसार एक जुड़े हुए स्टॉप लोस्स आर्डर का स्वतः बदलाव के तंत्र को बनाए रखता है यदि एक स्थिति का लाभ उच्च सेट दूरी तय हो जाती है, स्टॉप लोस्स आर्डर ले जाता है के स्तर पर जो वर्तमान बाजार मूल्य और ऑर्डर मूल्य के बीच अंतर करने के लिए इस दूरी के बराबर है।

इस मामले में स्टॉप लोस्स आर्डर शुरू में सेट नहीं किया गया, लेकिन ट्रेलिंग स्टॉप मोड है, लाभ मोड में निर्धारित दूरी के बराबर हो जाता है जब स्टॉप लोस्स आर्डर स्थिति खोलने की कीमत पर स्वचालित रूप से सेट किया गया है।

NetTradeX मंच में ट्रेलिंग स्टॉप एक सर्वर साइड मोड है जो सक्रिय बना रहता है यहां तक कि जब क्लाइंट का टर्मिनल बंद हो जाता है। यदि आपने पहले कभी ऐसा नहीं किया है, तो शेयर खरीदना शायद बीन्स या रोटी का एक रोटी खरीदने की तरह लगता है कीमत का भुगतान करें और अपना स्टॉक लें, है ना? उत्तर हां भी है और नहीं भी। स्टॉक खरीदना एक कार खरीदने की तरह थोड़ी अधिक है कार के साथ, आप डीलर के स्टिकर की कीमत का भुगतान कर सकते हैं और कार पा सकते हैं। या आप एक कीमत पर बातचीत कर सकते हैं और जब तक डीलर आपकी कीमत पूरी नहीं कर लेता तब तक सौदे को अंतिम रूप देने से इनकार कर सकते हैं। शेयर बाजार एक समान तरीके से काम करता है।

स्टिकर प्राइस

स्टॉक मार्केट में, ऑर्डर करने का सबसे सरल तरीका कहा जाता है कि एक मार्केट ऑर्डर लगाया जाए कार शॉपिंग शर्तों में, बाजार ऑर्डर देने का मतलब है कि आप डीलर के स्टिकर की कीमत का भुगतान करने के लिए तैयार हैं। स्टिकर कीमत पर एक कार खरीदने और पेशेवरों द्वारा पूछे जाने वाले मूल्य को कॉल करने पर स्टॉक खरीदने में थोड़ी ही फर्क है चूंकि स्टॉक पूरे दिन लंबी होती है और कीमतें तेजी से बदल सकती हैं, जब आप एक बाजार ऑर्डर देते हैं तो आप नहीं जानते कि आप जितने शेयर खरीदते हैं, उसके शेयरों का भुगतान कितना होगा। उदाहरण के लिए, अगर आप \$ 1, 000 मूल्य एबीसी कंपनी के शेयर खरीदना चाहते हैं और स्टॉक को वर्तमान में \$ 25 में सूचीबद्ध किया गया है। 00 प्रति शेयर, आपकी अंतिम कीमत \$ 25 से अधिक या कम हो सकती है। 00 यदि आप बाजार के आदेश पर एक शेयर डालते हैं दूसरे शब्दों में, स्टिकर की कीमत उस समय के बीच में बदल सकती है जब आप शेयर के लिए एक ऑर्डर और बिक्री वास्तव में पूरा हो गया है।

इसलिए, यदि शेयर बाजार तेजी से बढ़ रहा है, तो यह संभव है कि आप अपने ऑर्डर के समय और इसे निष्पादित किए जाने के समय के बीच मूल्य बढ़ा सकते हैं। अंतिम परिणाम यह है कि आप \$ 25 का भुगतान कर सकते हैं। 01 या \$ 25 02 प्रति शेयर इसी तरह, यदि कीमत गिर रही है, तो आप \$ 24 का भुगतान कर सकते हैं। 99 या \$ 24 98 प्रति शेयर मार्केट ऑर्डर देकर, आप विक्रेताओं को संकेत भेज रहे हैं कि आप स्टॉक खरीदना चाहते हैं और इसे पाने के लिए चलने की दर का भुगतान करने के लिए तैयार हैं। जबकि आपके द्वारा भुगतान की जाने वाली कीमत आम तौर पर कीमत के करीब है, जब आपने अपना ऑर्डर दिया था (एक पैसा या दो के भीतर), जब तक व्यापार पूर्ण नहीं हो जाता तब तक आप अंतिम कीमत नहीं जानते।

अपनी खुद की कीमत चुनें

बाजार के ऑर्डर को देने के बजाय, आप एक सीमा आदेश का अनुरोध करना चुन सकते हैं जो कि एक फर्म मूल्य निर्धारित करता है जो आप से अधिक नहीं चाहते हैं एक सीमा आदेश देकर, आप उस राशि पर छत डालते हैं जो आप भुगतान करने के इच्छुक हैं अगर आप \$ 1, 000 मूल्य एबीसी कंपनी के शेयर खरीदना चाहते हैं और आप

\$ 24 से अधिक का भुगतान करने के लिए तैयार नहीं हैं प्रति शेयर 99, आप \$ 24 के लिए एक सीमा आदेश रखेंगे 99. यदि स्टॉक की कीमत 25 डॉलर है 00 या अधिक, आपकी खरीद पूरी नहीं होगी।

सिक्वोरिटीज बेचना

क्रय स्टॉक में काम करने पर समान तर्क यह है कि उन्हें बेचते समय खेलना होता है। यदि आप बाजार मूल्य पर एक बेचने के आदेश देते हैं, तो आप यह दर्शाते हैं कि आप जो कुछ भी कीमत खरीदार खरीदना चाहते हैं, वे स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। अगर आपको अभी अपना स्टॉक बेचने की ज़रूरत है, तो बाजार में जाने का तरीका यही है।

वैकल्पिक रूप से, आप एक सीमा आदेश लगाने का चयन कर सकते हैं अगर आपके पास एबीसी कंपनी के शेयर के 40 शेयर हैं और आपको अपने शेयरों के लिए \$ 1,000 प्राप्त करने की आवश्यकता है, तो आप \$ 25 का एक सीमा आदेश रखेंगे। 00 प्रति शेयर एक सीमा आदेश के साथ, आपके शेयर बेचा नहीं जाएंगे, जब तक कि खरीदार आपकी पूरी पूछती कीमत का भुगतान करने के लिए तैयार नहीं होता है।

ट्रेडिंग के मैकेनिक्स को समझना

जब आप कोई व्यापार करते हैं, तो ब्रोकरेज फर्म, व्यापार को निष्पादित करता है, जल्दी से सभी सिक्वोरिटीज को बिक्री के लिए और उन सभी आदेशों की जांच करता है जिन्हें खरीदारी करने के लिए रखा गया है ब्रोकरेज फर्म खरीदारों और विक्रेताओं से मेल खाने का प्रयास करता है मार्केट ऑर्डर मैच करना आसान है क्योंकि खरीदार जो कुछ भी कम कीमत वाला विक्रेता स्वीकार करेगा वह भुगतान करने के लिए तैयार है। सीमा आदेश को भरना अधिक मुश्किल हो सकता है क्योंकि खरीदार मौजूदा न्यूनतम पूछ मूल्य से कम भुगतान करना चाहते हैं जो विक्रेताओं की मांग कर रहे हैं। इसे ध्यान में रखते हुए, व्यापारी दो तरीकों से सीमा आदेश लगा सकते हैं। एक तरह से एक दिन का ऑर्डर देना है जो सिर्फ एक ट्रेडिंग दिन के लिए अच्छा है। यदि आप उस दिन उस आदेश को पूरा नहीं किया जा सकता है, तो ब्रोकरेज फर्म ऑर्डर रद्द कर देगा। दूसरा तरीका यह है कि ऑर्डर लंबे समय तक सक्रिय रहे, जैसे कि 60 दिन तक। यदि आप निवेश करने की जल्दी में हैं, तो आपके आदेश पर एक दिन की सीमा को रखने का मतलब है कि, अगर उस दिन व्यापार को लागू नहीं किया गया है, तो आप कल कुछ अलग खरीद सकते हैं। यदि आप एक विशिष्ट स्टॉक चाहते हैं और इसे प्राप्त करने में जल्दबाजी नहीं कर रहे हैं, तो एक अच्छा-तिल रद्द करने का तरीका हो सकता है।

अंत में, कुछ निवेशकों के पास एक निश्चित मूल्य बिंदु है कि वे अपने स्टॉक के नीचे गिरने को नहीं देखना चाहते हैं उदाहरण के लिए, यदि किसी निवेशक ने प्रति शेयर 10 डॉलर का भुगतान किया है लेकिन 10% से अधिक नुकसान का डर है, तो निवेशक शेयरधारकों को अपने शेयरों को स्वचालित रूप से बेचने के निर्देश देने के लिए होल्डिंग्स पर स्टॉप-लॉस ऑर्डर दे सकता है, अगर शेयर की कीमत 9 डॉलर हो जाती है हालांकि अक्सर नुकसान से बचने के साथ जुड़ा हुआ है, रोकें आदेश भी स्वचालित रूप से बेचे जाने के निर्देशों के साथ रखे जा सकते हैं यदि सुरक्षा की कीमत एक निश्चित स्तर तक बढ़ जाती है

कुछ चीजें लागतों के बारे में

जब आप एक कार खरीदते हैं, तो वाहन के लिए बातचीत करने वाली कीमत में अक्सर अतिरिक्त शुल्क जैसे कि शीर्षक, करों और प्रशासनिक शुल्क शामिल नहीं हैं। तदनुसार, लेनदेन को पूरा करने के लिए आवश्यक धनराशि राशि वाहन की बिक्री मूल्य से अधिक है। वही अवधारणा तब लागू होती है जब व्यापारिक स्टॉक ब्रोकरेज फर्म अपनी सेवाओं के लिए अपने ट्रेडों के शुल्क की सुविधा प्रदान करते हैं यहां तक कि एक मामूली शुल्क, जैसे \$ 5 प्रति व्यापार, का मतलब है कि आपको खरीद करने के लिए 5 डॉलर की कीमत और दूसरे शेयरों को बेचने के लिए 5 डॉलर खर्च होंगे। इसलिए, हमारी सीमा आदेश को फिर से आना, अगर आपके पास एबीसी कंपनी के स्टॉक में शेयर के 40 शेयर हैं और अपने शेयरों के लिए \$ 1,000 प्राप्त करने की आवश्यकता है, तो आप \$ 25

का एक सीमा आदेश रखेंगे। 00 प्रति शेयर बिक्री पूर्ण होने के बाद, आप \$ 1,000 की आय देखेंगे और ब्रोकरेज फर्म को \$ 5 फीस का भुगतान करेंगे। आपका ले घर \$ 995 है यदि यह आवश्यक है कि आप \$ 1, 000 घर लेते हैं, तो आपको अपने सीमा आदेश को तदनुसार समायोजित करने और बेचने से इनकार करना पड़ता है जब तक आप \$ 25 प्राप्त नहीं कर सकते। 13 प्रति शेयर इसके परिणामस्वरूप \$ 1, 005 की बिक्री से आय प्राप्त हुई है। 20. \$ 5 ट्रेडिंग शुल्क का भुगतान करने के बाद, आप \$ 1, 000 लेते हैं। 20.

अनुसंधान पहले

प्रत्येक दलाली फर्म के व्यापार नियमों के लिए नियम और प्रक्रियाएं हैं। उनके द्वारा दिए गए आदेशों के प्रकार और उनके इस्तेमाल की शब्दावली भिन्न-भिन्न होती है ब्रोकरेज प्लेटफॉर्म सरल खरीदारी और विक्रय के प्रति तैयार करते हैं, केवल ऊपर दिए गए वर्णों जैसे कुछ व्यापारिक विविधताओं की पेशकश कर सकते हैं। अक्सर व्यापारियों के साथ काम करने वाली फर्म भरण-या-मारने के आदेशों के रूप में विविधताओं की पेशकश कर सकते हैं, जिसके लिए यह आवश्यक है कि पूरे आदेश को तुरंत पूरा किया जाए या रद्द किया जाए। व्यापार करने का प्रयास करने से पहले आपके ब्रोकरेज फर्म की सेवाओं की समीक्षा करने और उन सेवाओं से संबंधित शब्दावली की समीक्षा करने के लिए समय व्यतीत करना उचित है। यदि आपके पास प्रश्न हैं या स्पष्टीकरण की आवश्यकता है, तो सबसे पहले यह पूछना सबसे अच्छा होगा कि बाद में एक महंगा गलती हो सकती है।

नीचे की रेखा

स्टॉक खरीदने और बेचने के साथ जुड़ी शब्दावली नए निवेशकों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकती है, लेकिन वास्तव में कुछ महत्वपूर्ण शब्द हैं जिन्हें आपको आरंभ करने के लिए पता होना चाहिए। असली चुनौतियों में शामिल करना चुनना है कि वह क्या खरीदना है, इसे कब खरीदना है, इसे कब रखना है और कब इसे बेचना है।

लघु बिक्री

लघु बिक्री प्रक्रिया क्या है?

प्रश्न: स्टैंडर्ड लघु बिक्री प्रक्रिया क्या है? एक पाठक पूछता है: “हम अंत में हमारे घर को बेचने का फैसला किया है हम अपने घर से दूर चलने के लिए नहीं करना चाहते हैं, तो हम एक एजेंट है जो हमारे लिए एक छोटी बिक्री कर रही है वह आया था के साथ सूचीबद्ध और का एक समूह का चुनाव किया। हम से कागजात वह भी हमें बैंक के लिए एक तीसरे पक्ष के प्राधिकरण पर हस्ताक्षर करने के लिए कहा। लेकिन अब क्या होता है? वह कहती है कि हम एक खरीदार खोजने की जरूरत है, लेकिन मैंने सोचा था कि हम बैंक से कहा कि एक छोटी बिक्री करते हैं। यदि आप एक मिलता है खरीदार पहले या पहले एक छोटी बिक्री करने के लिए बैंक से पूछें? मैं अगर हमारे एजेंट बहुत कई लघु बिक्री किया है पता नहीं है, और यह मुझे असहज बना रही है। क्या मानक लघु बिक्री प्रक्रिया है?”

उत्तर: यह असामान्य एक एजेंट एक छोटी बिक्री विशेषज्ञ होने का दावा करने के लिए जब एजेंट कम बिक्री का केवल एक मुट्ठी भर में कामयाब रहा है नहीं है। ऐसा नहीं है कि आपके एजेंट आप के लिए झूठ बोल रही है नहीं है; यह एजेंट का मानना है कि 2 या 3 कम बिक्री कर रही है कि एजेंट एक विशेषज्ञ बनाता है। और, काफी स्पष्ट रूप से, समय की राशि के साथ यह कुछ कम बिक्री करने के लिए ले जाता है, यह असामान्य एक एजेंट सोच वह अधिक समय बिताया है कि कम बिक्री की तुलना में वह खर्च किए पर काम खत्म करने के लिए नहीं है। उसके मन में, वह एक विशेषज्ञ है। एजेंटों को 50 या 100 लघु बिक्री एक साल बंद के मन में, वह एक विशेषज्ञ नहीं है। जिसे तुम एक लघु बिक्री करना किराया चाहिए? पहली बात आपको क्या करना चाहिए एक छोटी बिक्री विशेषज्ञ अपने छोटे बिक्री को संभालने के लिए किराया है। वह व्यक्ति एक रियल एस्टेट एजेंट या एक वकील हो सकता है। अधिकांश एजेंट कमीशन पर काम करते हैं, बिक्री की आय से भुगतान किया है, और सबसे वकीलों विक्रेता द्वारा

सीधे अग्रिम भुगतान कर रहे हैं। आप एक वकील या एक एजेंट किराया अपने छोटे बिक्री वार्ताकार होने के लिए हैं, हमेशा कानूनी सलाह लो कुछ वकीलों, बस कुछ अचल संपत्ति एजेंटों की तरह, होना करने के लिए एक छोटी बिक्री विशेषज्ञ अभी तक सच्चाई एक छोटा सा खींच होना दावा कर सकते हैं। यह जानना जिसे भरोसा करना मुश्किल है। एक अच्छा शासन एक रेफरल के लिए चारों ओर पूछने के लिए है। निश्चित रूप से, किसी और आप जानते हैं कि आप के लिए एक उत्कृष्ट संदर्भ है। आप भी सावधान है जब आप एक छोटी बिक्री एजेंट या एक वकील का चयन नहीं हो सकता है।

यह एक लघु बिक्री के लिए बैंक से पूछो करने के लिए इससे पहले कि एक प्रस्ताव प्राप्त हुआ है स्टैंडर्ड प्रक्रिया है? संक्षेप में, नहीं। लेकिन सिर्फ इसलिए कि एक छोटी बिक्री के लिए मानक प्रक्रिया पहले शामिल हो सकता है एक प्रस्ताव प्राप्त करना, इसका मतलब यह नहीं है कि एक विक्रेता हमेशा मानक प्रक्रिया का पालन करना चाहिए। वहाँ कभी कभी नियम के अपवाद हैं। मानक प्रक्रिया बैंक से बैंक के लिए अलग-अलग हो सकते हैं। यह आपके बैंक है कि मानक प्रक्रिया सेट है, और प्रत्येक लघु बिक्री बैंक अलग हो सकता है। आम तौर पर, जब आप एक प्रस्ताव करने से पहले एक छोटी बिक्री के लिए बैंक से पूछते हैं, आप दे रहे हैं बैंक आप के लिए नियमों और प्रक्रिया निर्धारित किया है। सबसे महत्वपूर्ण है, आप बैंक बिक्री मूल्य का चयन दे रहे हैं। यही कारण है कि आप के खिलाफ काम कर सकते हैं। लघु बिक्री preapproval के लिए मानक प्रक्रिया कुछ लघु बिक्री बैंकों – एक फ्रेडी मैक Hafa कम बिक्री, जिसके लिए मानक कम बिक्री प्रक्रिया केवल preapproval है के होते हुए भी – अपने छोटे बिक्री preapprove पसंद करते हैं। वे preapproval की उम्मीद नहीं है, तो वे कम से कम बिक्री मूल्य और अपने घर के विपणन में शामिल होने की उम्मीद है। आमतौर पर, न तो एक अच्छा विचार है। आप बैंक पूछ मूल्य चुनने दें, तो कीमत बहुत अधिक हो सकता है। अपनी कीमत बहुत अधिक है, तो खरीदारों को एक प्रस्ताव किसी भी तरह का नहीं हो सकता है। यह भी संभव है बैंक घर उम्मीद है कि आप अंत में बैंक एक विलेख-इन-एवज पुरोबंध के दे देंगे में बहुत अधिक मूल्य होगा। बैंकों हमेशा सही बाहर आने और तुम बताओ कि वे कम बिक्री करने के लिए नहीं चाहता है नहीं होंगे। कभी कभी, वे बस इस तरह से है कि यह नहीं बेचेगा में उसकी कीमत आप बाध्य करेगा। लघु बिक्री के अनुमोदन एक प्रस्ताव के बाद के लिए मानक प्रक्रिया सबसे आम तरीका एक छोटी बिक्री करने के लिए जैसे ही अपने घर बिक्री के लिए सूचीबद्ध किया गया है बैंक के लिए तीसरे पक्ष के प्रमाणीकरण सबमिट करना है। उसके बाद, आप एक प्रस्ताव प्राप्त होने के बाद, एक छोटी बिक्री पैकेज बैंक के लिए, प्रस्तुत दस्तावेज और अपने प्रस्ताव का समर्थन करने के साथ। यह प्रक्रिया नियंत्रण और नहीं बैंक में डालता है। अपने आप से पूछें, नहीं बैंकों काफी नुकसान किया है? निम्नलिखित दस्तावेज बैंक को भेजने के लिए कर रहे हैं: क्रय अनुबंध बयाना जमा की प्रति फंड की क्रेता सबूत क्रेता preapproval पत्र पर हस्ताक्षर किए तृतीय-पक्ष प्राधिकरण (मामले में पहली प्रतिलिपि खो गया था) अनुमानित समापन वक्तव्य या HUD-1 एमएलएस से प्रिंट-आउट सीएमए बैंक की लघु बिक्री पैकेज और वित्तीय प्रत्येक बैंक का अपना आवश्यकताएं हैं, और वे लगातार दस्तावेजों वे की आवश्यकता होती है बदल जाते हैं। यह अपने 2 पिछले टैक्स रिटर्न और बैंक विवरण और पेट्रोल स्टैंड के 2 महीने का अनुरोध करने के लिए आम है। लेकिन इस तरह के अमेरिका सहकारी लघु बिक्री के एक बैंक के रूप में कुछ बैंकों यहां तक कि उन दस्तावेजों की आवश्यकता नहीं हो सकता है। आपका लघु बिक्री विशेषज्ञ, वास्तव में उस व्यक्ति के एक विशेषज्ञ है अगर, पता होना चाहिए।

लघु बिक्री के मुनाफे

घर विक्रेताओं जो ऋणदाता से अधिक अपने घर के लायक है देना है के लिए, यह के रूप में धूमिल के रूप में यह ध्वनि हो सकता है नहीं है, लेकिन सबसे कम बिक्री न दें विक्रेता एक लाभ। कुछ बैंक विक्रेताओं को एक स्थानांतरण प्रोत्साहन भुगतान करना होगा और कुछ कार्यक्रमों विशेष प्रोत्साहन प्रदान करते हैं, लेकिन अधिकांश भाग के लिए, एक विक्रेता बिक्री से होने वाली आमदनी को पॉकेट में नहीं है। एक छोटी बिक्री विक्रेता का मतलब है या विक्रेता के एजेंट के पास से एक खरीदार या पास बाजार मूल्य के लिए घर बेचता है, और ऋणदाता बंधक पर पूरा भुगतान के रूप में आय स्वीकार करने के लिए, भले ही बिक्री मूल्य मौजूदा बाधा से भी कम है इससे सहमत हैं। नकारात्मक पक्ष यह है उधारदाताओं रियायती भुगतान के लिए बातचीत करने की आवश्यकता नहीं है, और कोई गारंटी अपने ऋणदाता आप एक छोटी बिक्री करते हैं जाएगा। कौन एक लघु बिक्री पर लाभ प्राप्त करता है? सवाल है, तो विक्रेता एक छोटी बिक्री, जो पैसे बना रही है पर किसी भी पैसा बनाने नहीं कर रहा है? क्योंकि आप जानते हैं कि किसी को आगे बाहर आने के लिए जा रहा है। और यह विक्रेता होने के लिए नहीं जा रहा है। सच तो यह है सूर्य के नीचे हर कोई विक्रेता को छोड़कर एक छोटी बिक्री पर पैसा बनाने जाएगा।

कम बिक्री से लाभ पर नजर डालते हैं:

मौजूदा रेहनदार एक लाभ गेन्स एक लाभ लेकिन जरूरी नहीं कि मौजूदा ऋणदाता कब्जा दाखिल बचा जाता है, जब कोई भी नीलामी में बोली लगाता है और अपने स्वयं के खरीदार की तलाश में बाजार पर समय से बचा जाता है पुस्तकों पर संपत्ति को ले जाने टाला। लिस्टिंग एजेंटों और खरीद एजेंटों लाभ एक लघु बिक्री से। दी, एजेंटों आयोग पर एक हिट क्योंकि ऋणदाता एक शुल्क में कमी पर जोर देते हैं सकता है लग सकता है, लेकिन नीचे की रेखा एजेंटों और उनके दलालों संपत्ति की बिक्री के लिए भुगतान प्राप्त है। एक लघु बिक्री से शीर्षक कंपनियां लाभ टाइल कंपनी नए खरीदार और नए ऋणदाता के पक्ष में एक ALTA नीति के पक्ष में स्वामी के शीर्षक नीति जारी करता है। कुछ राज्यों में, शीर्षक कंपनियों के बजाय सार सेवाएं प्रदान करते हैं, लेकिन, परवाह किए बिना, वे भुगतान मिलता है।

एक लघु बिक्री से कंपनियों लाभ एस्करो राज्यों में एस्करो कंपनियों अचल संपत्ति के लेनदेन में एक स्वतंत्र तृतीय पक्ष के रूप में कार्य में, इन कंपनियों को भी आगे बाहर आते हैं। वे ऋणदाता द्वारा भुगतान मिलता है या शुल्क ऋणदाता और खरीदार के बीच बांटा गया है। रियल एस्टेट वकीलों एक लघु बिक्री से लाभ उठा सकती कम बिक्री की सेलर्स हमेशा एक छोटी बिक्री पर बेचने के लिए एक अनुबंध में प्रवेश करने से पहले कानूनी सलाह लेनी चाहिए। तो, वकीलों भुगतान मिलता है। कुछ वकीलों कि सेवा के लिए कम बिक्री और प्रभारी बातचीत के विशेषज्ञ हैं। टैक्स कंसल्टेंट्स और CPAs लाभ एक लघु बिक्री से

कम बिक्री की सेलर्स हमेशा एक छोटी बिक्री पर बेचने के लिए एक अनुबंध में प्रवेश करने से पहले कर सलाह लेनी चाहिए। वहाँ कर ऋण माफ़ की वजह से असर हो सकता है। आंतरिक राजस्व सेवा एक लघु बिक्री से लाभ हो सकता है यदि ऋणदाता विक्रेता के लिए एक 1099 जारी आईआरएस अपनी उचित हिस्सा एकत्रित करेगा, विक्रेता प्रदान लघु बिक्री पर कराधान के अधीन है। क्रेता एक लघु बिक्री से लाभ हो सकता है यह संभावना खरीदार पर संपत्ति या बाजार मूल्य है, जो संपत्ति में क्रेता आधार को कम करती है नीचे एक सा खरीदा है। राज्य और काउंटी अधिकार क्षेत्र के आधार पर यह कर निर्धारक द्वारा अपने भविष्य के कराधान कम हो सकता है। भले ही, क्रेता बंधक भुगतान कम हो क्योंकि ऋण कम है। नई ऋणदाता एक लघु बिक्री पर लाभ प्राप्त करता है

नए ऋणदाता पैसा बनाता है क्योंकि एक नए ऋण नए कारोबार और नए राजस्व उत्पन्न करता है। एक नए ऋण हामीदार और ऋण प्रोसेसर के रूप में अच्छी तरह से भुगतान करता है। मूल्यांकक मुनाफे एक लघु बिक्री से यहां

तक कि संपत्ति बाजार मूल्य से कम के लिए बेच होने के बावजूद, नए ऋणदाता की आवश्यकता होगी कि खरीदार एक मूल्यांकन प्राप्त करते हैं। मूल्यांक एक मूल्यांकन के लिए \$ 650 के लिए \$ 250 कमा सकते हैं। एक लघु बिक्री से नया बंधक दलाल मुनाफे। क्रेता ऋण एक बंधक दलाल द्वारा पैकेजिंग शामिल हैं, तो उस व्यक्ति को ऋण पर अंक भुगतान किया जाएगा। साथ ही, YSP बंधक दलाल के लिए भी एक बड़ा पेचेक उत्पन्न हो सकते हैं। काउंटी कर निर्धारक हो सकता है या नहीं लाभ एक लघु बिक्री से। ऐसे क्षेत्र हैं जहां संपत्ति बिक्री पर पुनर्मूल्यांकन किया जाता है, कर निर्धारक पुनर्विक्रय मूल्य की वजह से एक उच्च मूल्यांकन मूल्य पर एक समय के आधार पर और शायद संपत्ति कर इकट्ठा करने के लिए जारी रहेगा। एक ऋण पुनर्वित्त आमतौर पर कर आकलन को प्रभावित नहीं करता। बीमा कंपनियों के लिए एक लघु बिक्री से लाभ क्रेता बीमा कंपनी खरीदार और नए घर के बीमा के लिए एक प्रीमियम ऊपर उठाता है। इसके अलावा, बीमा एजेंट गृहस्वामी बीमा पॉलिसी पर एक कमीशन अर्जित करता है। लेकिन वहाँ एक सच में अच्छा कारण एक विक्रेता एक छोटी बिक्री करने के लिए है। लघु बिक्री क्रेडिट और गृह खरीदना पर प्रभावित।

उद्योग का चुनाव और सुझाव:

किसी भी नये उद्योग को प्रारम्भ करने से पहले निम्नलिखित सुझावों का गंभीरता से अध्ययन करना चाहिए क्योंकि नये उद्योग को लगाने के लिए उसकी कई महत्वपूर्ण आवश्यकताओं का ज्ञान जरूरी है। उद्योग की सफलता, प्रारम्भ किये जाने वाले उद्योग और उसके कई कार्यों आदि की समयानुसार पूर्ति करने पर निर्भर करता है।

- 1 उद्योग में नयी उत्पादन की जाने वाली वस्तु क्या है, कितनी पूंजी आवश्यक है?
- 2 अपने नये उद्योग की पूर्ण जानकारी, उद्योग में नई बनाई जाने वाली वस्तु के बारे में सामान्य और टैक्निकल ज्ञान।
- 3 कच्चे माल की उपलब्धि एवं क्वालिटी।
- 4 निर्मित वस्तु व माल का मार्केट तथा बिक्री साधन।
- 5 उत्पादन की क्वालिटी मार्केट में उत्तम बनाना।
- 6 उत्पाद का मार्केट में काॅम्पिटिशन का अध्ययन।
- 7 उत्तम क्वालिटी उत्पाद के लिए पर्याप्त पूंजी की व्यवस्था।

लघु उद्यम के स्थापना की प्रक्रिया को तीन चरणों में विभाजित किया जा सकता है:

1. प्रथम चरण के अंतर्गत उद्यमी कोई इकाई विशेष स्थापित करने का निर्णय लेता है तथा उसकी अनुमानित योजना तैयार करता है।
2. द्वितीय चरण के अंतर्गत वह इकाई की स्थापना हेतु आवश्यक कदम उठाता है तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा चाही गई शर्तें ; औपचारिकताएं पूरी करता है तथा
3. तृतीय चरण में इकाई को यथार्थ रूप देने हेतु कार्य करता है तथा इकाई स्थापित करता है।

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड 1955 में भारत सरकार द्वारा स्थापित एक सार्वजनिक उपक्रम है। यह भारत के सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय के अंतर्गत आता है। यह देश में सूक्ष्म और स्मॉल स्तर के उद्योगों और उद्यमों को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए स्थापित किया गया था। यह मूल रूप से एक भारतीय सरकारी एजेंसी के रूप में स्थापित किया गया था। जो बाद में पूर्ण स्वामित्व वाली सरकार निगम में परिवर्तित हो गया। भारत के छोटे और उभरते उद्यमियों को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार ने सरकारी एजेंसी की स्थापना करने का निर्णय लिया जो लघु उद्योगों को सहायता प्रदान कर सकते हैं।

दलाल

दलाल (broker) उस व्यक्ति या संस्था को कहते हैं जो क्रेता एवं विक्रेता के बीच सौदा तय कराने में मदद करता है। जब यह सौदा पक्का हो जाता है तो इसके बदले में दलाल को दलाली (commission) मिलती है।

दलाल भांति-भांति के होते हैं। गाय-भैंस की बिक्री से लेकर घर, जमीन, शेयर, कमोडिटी, हथियार, विवाह आदि सभी के दलाल होते हैं।

एक दलाल एक अकेला व्यक्ति होता है जो सौदा निष्पादित होने पर एक खरीदार और विक्रेता के बीच लेनदेन की व्यवस्था करता है। एक दलाल जो विक्रेता के रूप में या खरीदार के रूप में भी कार्य करता है, वह सौदा करने के लिए एक प्रमुख पार्टी बन जाता है। किसी भी भूमिका को एजेंट की भूमिका के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए- जो एक सौदे में एक प्रमुख पार्टी की तरफ से कार्य करता है।

परिभाषा

दलाल एक स्वतंत्र पार्टी है, जिनकी सेवाओं का उपयोग कुछ उद्योगों में बड़े पैमाने पर किया जाता है। दलाल की मुख्य जिम्मेदारी विक्रेताओं और खरीदारों को एक साथ लाना है और इस प्रकार एक दलाल खरीदार और विक्रेता के बीच तीसरा-व्यक्ति समन्वयक प्रदान करता है। एक उदाहरण रियल एस्टेट दलाल होगा जो संपत्ति की बिक्री को सुगम बनाता है।

दलाल कीमतों, उत्पादों और बाजार स्थितियों के बारे में बाजार की जानकारी भी प्रस्तुत कर सकते हैं। दलाल या तो विक्रेता या खरीदार का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं लेकिन एक ही समय पर दोनों को नहीं कर सकता। उदाहरण स्टॉक दलाल होगा, जो अपने ग्राहक की तरफ से प्रतिभूतियों की बिक्री या खरीद करता है। दलाल स्टॉक, बॉन्ड और अन्य वित्तीय सेवाओं की बिक्री में एक बड़ी भूमिका निभाते हैं।

दलाल का उपयोग करने के फायदे हैं। सबसे पहले, वे अपने बाजार को जानते हैं और संभावित खतों के साथ संबंध स्थापित कर चुके हैं। दलाल के पास खरीदारों के सबसे बड़े संभावित आधार तक पहुंचने के लिए टूल और संसाधन हैं। फिर वे इन संभावित खरीदारों की राजस्व के लिए जाँच करते हैं जो संभावित अधिग्रहण का समर्थन करेंगे। दूसरी ओर, एक व्यक्तिगत निर्माता के पास, विशेष रूप से बाजार में एक नया, शायद दलाल की तरह ग्राहकों के लिए समान पहुंच नहीं होगी। दलाल का उपयोग करने का एक और लाभ है लागत - वे छोटे बाजारों में, छोटे खतों के साथ, या उत्पादों की सीमित लाइन के साथ सस्ते हो सकते हैं।

दलाल को काम पर लेने से पहले, इसे खिताब का उपयोग करने वाले किसी से संबंधित आवश्यकताओं का शोध करना समझदारी मानी जा सकती है। कुछ खिताब, जैसे कि रियल एस्टेट दलाल, अक्सर इस शब्द का उपयोग करने के लिए सख्त राज्य आवश्यकताओं रखते हैं, जबकि अन्य, जैसे कि विमान दलाल को, आमतौर पर औपचारिक लाइसेंसिंग या प्रशिक्षण आवश्यकताएं नहीं हैं।

शब्द-व्युत्पत्ति

"दलाल" शब्द, अनिश्चित उत्पत्ति का पुरानी फ्रांसीसी ब्रोसेर "छोटे व्यापारी", से व्युत्पन्न है, लेकिन संभवतः पुराने फ्रांसीसी ब्रोशर से "वाइन रिटेलर" का अर्थ है, जो क्रिया ब्रोशियर से आता है, या "टू ब्रोच (एक केग)"।^[3]

दलालों के प्रकार

1. ब्रोकर-डीलर
2. ब्रोकरेज फ़र्म
3. व्यापार दलाल
4. कार्गो ब्रोकर
5. ऑटो परिवहन दलाल
6. कमोडिटी ब्रोकर
7. सीमा शुल्क दलाल
8. सूचना दलाल
9. बीमा दलाल

10. बौद्धिक संपदा ब्रोकर
11. निवेश दलाल
12. संयुक्त उद्यम दलाल
13. ब्रोकर सूची
14. विवाह ब्रोकर
15. संदेश दलाल
16. गिरवी दलाल
17. विकल्प ब्रोकर
18. साहूकार
19. पावर ब्रोकर (टर्म)
20. प्राइम ब्रोकर
21. रियल एस्टेट ब्रोकर
22. जहाज दलाल
23. प्रायोजन ब्रोकर
24. स्टॉक ब्रोकर
25. शेयर दलाल
26. कार्यालय दलाल
27. सर्विस्ड कार्यालय दलाल
28. नौका दलाल

वास्तविक बाजारों में दलालों और व्यापारियों की भूमिका

दलाल एक मध्यस्थ है जिसकी ग्राहक की ओर से सिक्योरिटीज खरीदने और बेचने का लाइसेंस है। स्टॉक ब्रोकर खरीदारों और विक्रेताओं के बीच समन्वय अनुबंध, आमतौर पर एक आयोग के लिए। दूसरी तरफ, एक बाजार निर्माता एक मध्यस्थ है जो एक लाभदायक कीमत के लिए प्रतिभूति खरीदने और बेचने के लिए तैयार और तैयार है।

एक दलाल सिक्योरिटीज के खरीदारों और विक्रेताओं को एक साथ लाकर पैसा बनाता है। ब्रोकरों के पास एक निवेशक की ओर से प्रतिभूतियां खरीदने के लिए प्राधिकरण और विशेषज्ञता है - न केवल किसी को न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज और खरीद स्टॉक में जाने की इजाजत है; इसलिए, निवेशकों को उनके लिए ऐसा करने के लिए लाइसेंसधारी दलालों को भर्ती करना चाहिए। किसी व्यापार को चलाने और एक सुरक्षा के लिए सबसे अच्छी कीमत खोजने के लिए ब्रोकर को एक फ्लैट शुल्क या प्रतिशत-आधारित कमीशन दिया जाता है। चूंकि दलालों को विनियमित और लाइसेंस प्राप्त होता है, इसलिए उनके ग्राहकों के सर्वोत्तम हित में कार्य करने का उनका दायित्व है। कई ब्रोकर भी स्टॉक, म्यूचुअल फंड और अन्य सिक्योरिटीज खरीदने के लिए सलाह दे सकते हैं। इंटरनेट आधारित स्वचालित स्टॉक ब्रोकरिंग सिस्टम की उपलब्धता के कारण, ग्राहक अक्सर अपने ब्रोकरेज फर्मों के साथ कोई व्यक्तिगत संपर्क नहीं करते हैं।

बाजार निर्माता उच्च को बेचने और कम खरीद करने का प्रयास करके लाभ कमाता है। मार्केट निर्माताओं ने उद्धरण स्थापित किया है जिसके तहत बोली मूल्य सूचीबद्ध कीमतों की तुलना में थोड़ा कम निर्धारित होता है और एक छोटी सी मार्जिन कमाने के लिए पूछ मूल्य की तुलना में थोड़ा अधिक होता है। बाजार निर्माताओं उपयोगी होते हैं क्योंकि वे हमेशा खरीदने और बेचने के लिए तैयार रहते हैं जब तक कि निवेशक किसी विशेष कीमत का भुगतान करने के लिए तैयार नहीं होता है। इससे बाजार में तरलता और दक्षता पैदा करने में मदद मिलती है। मार्केट

निर्माताओं अनिवार्य रूप से थोक विक्रेताओं के रूप में बाजार को संतुष्ट करने के लिए प्रतिभूतियों को खरीदने और बेचकर कार्य करते हैं; वे कीमतें बाजार की आपूर्ति और मांग को दर्शाती हैं। जब सुरक्षा की मांग कम होती है और आपूर्ति अधिक होती है, तो सुरक्षा की कीमत कम हो जाएगी। यदि मांग अधिक है और आपूर्ति कम है, तो सुरक्षा की कीमत अधिक होगी। मार्केट निर्माताओं को कीमत और आकार के उद्धरण और बेचने के लिए बाध्य किया जाता है। यह अक्सर ऐसा मामला है कि बाजार निर्माता एक ब्रोकर भी है। यह कभी-कभी दलाल के लिए प्रोत्साहन को सिक्योरिटीज की सिफारिश करने के लिए तैयार कर सकता है जिसके लिए वह या तो बाजार भी बना देता है। इसलिए, निवेशकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि ब्रोकर और बाजार निर्माता के बीच एक स्पष्ट जुड़ाई है।

जैसा कि प्रौद्योगिकी वृद्धि और व्यापारिक नवाचार जारी है, दुनिया में उपयोग किए जा सकने वाले व्यापारिक उपकरणों के प्रकार में एक विस्तार देख रहा है। प्रतीत होता है कि अलग-अलग बाजार एक दूसरे के शेयर बाजार में चोरी करने का प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को फ्रिश्चर अनुबंध से शारीरिक रूप से या यहां तक कि सोने की खरीद करने की जरूरत नहीं है, इसलिए वह सोना की कीमतों के आंदोलन में भाग लेने के लिए केवल एक एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) खरीद सकते हैं। यह देखते हुए कि मुद्राओं, वस्तुओं, स्टॉक और अन्य निवेशों के साथ समान परिदृश्य संभव है, व्यापारियों ने यह ध्यान रखे कि वे कैसे व्यापार करते हैं और उन्हें अपने व्यक्तिगत परिस्थितियों में अधिक दर्जी करते हैं।

ट्रेडिंग सिस्टम्स

बाजार, बाजार, बाजार शिक्षा और अनुभव के आधार पर, एक व्यक्ति को उस निवेश या व्यापारिक वाहनों से पूरी तरह अवगत नहीं हो सकता है जो एक क्लिक से मुलभ हो माउस का यहां तक कि सार और अतरल बाजार से बचने के दौरान, व्यापारियों को कई अलग-अलग बाजारों में ट्रेड मिल सकता है:

स्टॉक मार्केट: यह प्रसिद्ध बाजार में केवल एक कंपनी के शेयर खरीदने / शॉर्टिंग शामिल है

ईटीएफ मार्केट: सभी प्रकार के क्षेत्रों, उद्योग, मुद्राओं और वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करने वाले फंड शेयरों के समान व्यापार, इन फंडों को तेजी से खरीदा जा सकता है और लंबी अवधि के लिए रखा जा सकता है।

विदेशी मुद्रा बाजार: दुनिया का सबसे बड़ा बाजार। विदेशी मुद्रा बाजार एक मुद्रा के लिए एक मुद्रा के आदान-प्रदान की सुविधा प्रदान करता है कई संभावित संयोजनों के साथ, मुद्राएं हमेशा जोड़े में कारोबार करती हैं, लेकिन इनमें से केवल कुछ बहुत ही तरल हैं।

विकल्प मार्केट: एक बाजार जो एक परिसंपत्ति के व्युत्पन्न में प्रतिभागियों को पदोन्नति करने की अनुमति देता है इसलिए, विकल्प एक अंतर्निहित परिसंपत्ति का स्वामित्व नहीं है (हालांकि अधिकार और दायित्व मौजूद हैं), लेकिन विकल्प मूल्य (अन्य निविष्टियों के साथ) मूल्य (या कमी) के साथ भिन्न होता है जो अंतर्निहित परिसंपत्ति प्रदान कर रही है अंतर के लिए अनुबंध (सीएफडी): शेयर, विदेशी मुद्रा और विकल्प बाजार के एक संकर जो कि अंतर्निहित परिसंपत्तियों के आधार पर प्रतिभागियों को एक व्युत्पन्न उत्पाद में ट्रेड करने की अनुमति देता है आम तौर पर सीएफडी की समाप्ति तिथि, प्रीमियम या कमीशन (दलाल के नियम और शर्तों को देखें) नहीं है, लेकिन इसके लिए प्रतिभागी आम तौर पर किसी उत्पाद के वास्तविक भौतिक बाजार में दिखाई देने वाली चीजों की तुलना में एक बड़ी बोली / पूछताछ फैल देते हैं। (सीएफडी के बारे में और जानने के लिए, शेयरों के बजाय, सीएफडी व्यापार करें।) अन्य बाजारों में मौजूद हैं, लेकिन ये बाजार अब घर से आसानी से आसानी से सुलभ हो सकते हैं। प्रत्येक बाजार अलग-अलग फायदे और नुकसान प्रदान करता है इस वजह से कई व्यापारियों के लिए केवल एक बाजार का व्यापार करने का फैसला हो सकता है क्योंकि उन्हें लगता है कि यह उनके जीवन का एक पहलू है या उन्हें उपलब्ध बाजारों के बारे में जानकारी नहीं है। इसका मतलब यह हो सकता है कि व्यापारियों ने अपने व्यापारिक शैली को सही बाजार का लाभ नहीं उठाया है। कौन सा बाजार व्यापार करता है?

व्यापार की कार्यप्रणाली, वित्तीय संसाधनों, स्थान और किसी व्यक्ति के व्यापार (या व्यापार करना चाहता है) का दिन क्या है, सभी एक भूमिका निभा सकते हैं जिसमें बाजार व्यक्ति के लिए सबसे उपयुक्त होगा। चूंकि इनमें से कुछ बाजार परिचित नहीं हैं इसलिए हम दो सामान्य व्यापारी समूहों को देखेंगे और वे अपने व्यापार को बेहतर बनाने के लिए अन्य बाजारों के उपयोग को कैसे लागू कर सकते हैं। ऐसे विकल्पों के बारे में जागरूक होना महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे कुछ ठीक ट्यूनिंग के लिए प्रदान कर सकते हैं, जो लंबे समय तक बेहतर परिणाम बना सकते हैं।

दिन के व्यापारी के लिए वैकल्पिक बाजार 2000 से विदेशी मुद्रा बाजार में कारोबार की मात्रा में लगातार वृद्धि हुई है इसका मतलब विदेशी मुद्रा और सीएफडी दलालों के साथ खाता खोलने वाले दिन व्यापारियों की संख्या में वृद्धि है, जो संख्या में भी बढ़ोतरी हुई है। मुख्य आकर्षण यह है कि न्यूनतम निवेश आवश्यक है। खातों को अक्सर \$ 100- \$ 1000 के लिए खोला जा सकता है और व्यक्तियों को वैश्विक मुद्राओं, अनुक्रमित और वस्तुओं को व्यापार करने की अनुमति देगा। विदेशी मुद्रा बाजार के साथ व्यापारी वास्तव में दूसरे के लिए एक मुद्रा का आदान-प्रदान कर रहा है, संभवतः एक अन्य मुद्रा में निहित खाते में। यह अच्छा लगता है - प्रवेश के लिए कम बाधाएं, आमतौर पर कोई कमीशन नहीं (लेकिन एक फैल का भुगतान किया जाता है), उच्चतर लाभ उठाने (उच्च जोखिम / उच्च पुरस्कार) और चार्ट और अनुसंधान जैसे निशुल्क व्यापार उपकरण लेकिन विकल्प हैं यदि कोई विदेशी मुद्रा या सीएफडीएस व्यापार करना चाहता है, जो सिर्फ दूसरे बाजारों में शामिल हो सकता है। (कुछ सामान्य रणनीतियों के बारे में सीखने के लिए शुरुआती के लिए

दिन की ट्रेडिंग रणनीतियां देखें) एक्सचेंज ट्रेडेड फंड्स अब व्यापारियों को स्टॉक एक्सचेंज पर ट्रेड्स बनाने के द्वारा मुद्रा चाल में हिस्सा लेने की अनुमति देते हैं। एक दिन के व्यापारिक स्टॉक / ईटीएफ खाते को खोलने के दौरान अधिक पूंजी की आवश्यकता होगी, उस ईटीएफ में फायदे हैं जो स्वयं लीवरेज या अनलिवर हो सकते हैं। इसका मतलब है कि जो व्यक्ति प्रत्येक वृद्धिशील मूल्य आंदोलन के लिए अतिरिक्त जोखिम / इनाम लेना चाहता है, उदाहरण के लिए "3X बैल" ईटीएफ खरीद कर ऐसा कर सकते हैं। इसके अलावा, ईटीएफ के साथ, एक व्यापारी को प्रसार का भुगतान करने की आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, वे बोली या पेशकश को तरलता प्रदान कर सकते हैं और इस तरह ईसीएन रिबेट्स इकट्ठा कर सकते हैं (कमीशन ऑफसेटिंग, या अतिरिक्त मुनाफा प्रदान)। यह सीमित जोड़े के साथ मुद्रा जोड़े में बहुत लाभकारी है, या जब व्यापारी एक स्केलिंग रणनीति को लागू करना चाहता है ईटीएफ एक व्यापारी को अन्य बाजारों जैसे तेल सोने, चांदी या स्टॉक इंडेक्स की चाल चलने की भी अनुमति देते हैं; व्यापारी सीएफडी बाजार से बाहर निकल सकते हैं और ईटीएफ के साथ व्यापार शुरू कर सकते हैं, उन्हें उत्पादों की एक बड़ी श्रृंखला प्रदान कर सकते हैं। ईटीएफ, सीएफडी और विदेशी मुद्रा बाजार का उपयोग व्यापार शैली के आधार पर, बुद्धिमान हो सकता है। विभिन्न उपकरणों का इस्तेमाल मुद्रा में डिस्कनेक्ट का लाभ लेने के लिए किया जा सकता है जैसे कि मुद्रा जोड़ी इसी ईटीएफ चलती (या इसके विपरीत) के बिना चलती है।

दीर्घकालिक निवेशकों के लिए वैकल्पिक बाजार कमोडिटीज अक्सर दीर्घकालिक निवेशकों को आकर्षित करते हैं, फिर भी वे वायदा बाजार से अपरिचित हो सकते हैं और इसलिए उन्होंने सोने, चांदी या प्लैटिनम जैसी वस्तुओं के आंदोलन में सीधे भाग नहीं लिया है। इसके अलावा, यह संभावना नहीं है कि उनके पास अलग-अलग मुद्रा का एक्सपोजर है। और जब वे विकल्प ट्रेडिंग मानते हैं, तो साधन की समयबद्धता की प्रकृति उनके व्यापारिक योजना से अपील नहीं करती है। यह एक और मौका है जहां विभिन्न बाजारों को समझना रूढ़िवादी निवेशकों के लिए भी नए दरवाजे खोल सकते हैं, जो कुछ ट्रेड करते हैं। विभिन्न बाजारों के बारे में सीखने के बाद, विदेशी मुद्रा बाजार का उपयोग मुद्रा के प्रदर्शन को प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है। ईटीएफ का उपयोग मुद्रा के प्रदर्शन को हासिल करने के लिए किया जा सकता है, साथ ही सोने, तेल, चांदी या अन्य वैश्विक अर्थव्यवस्थाओं के मूल्य

आंदोलनों में भी भाग ले सकता है। सीएफडी का उपयोग दीर्घकालिक व्यापारियों द्वारा किया जा सकता है क्योंकि बोली / पूछना प्रसार समय सीमा पर न्यूनतम है और वे विकल्प के कुछ लाभ प्रदान करते हैं, लेकिन समाप्ति तिथि के बिना। उदाहरण के लिए, बड़ी नीली चिप स्टॉक अक्सर सीएफडी द्वारा उपलब्ध होते हैं। स्टॉक वास्तव में स्वामित्व नहीं है, जो उपयोग में कम पूंजी के साथ मूल्य आंदोलनों में भागीदारी के लिए अनुमति देता है (क्योंकि अगर वांछित होने पर उच्च लाभ का उपयोग किया जा सकता है), लेकिन सीएफडी मतदान अधिकार या एक टुकड़ा के स्वामित्व से संबंधित किसी भी भत्तों को प्रदान नहीं करता है उस कंपनी का किसी भी उपकरण का व्यापार करते समय करों के बारे में पता होना जरूरी है और यह कि कैसे सैद्धांतिक रूप से समग्र लक्ष्यों में फिट हो सकते हैं। प्रत्येक साधन का इलाज थोड़ा अलग हो सकता है; इसलिए एक पेशेवर की सलाह तलाश करना बुद्धिमान है

नीचे की रेखा यह जानना जरूरी है कि विकल्प वहां से बाहर हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि हर विकल्प हर व्यक्ति के लिए अच्छा होगा, लेकिन बाजारों के संयोजन का उपयोग करना या ठीक ट्यूनिंग करना कि हम उन बाजारों के साथ कैसे बातचीत करते हैं, परिणामों पर असर पड़ सकता है। कुछ लोगों के लिए इसका मतलब यह हो सकता है कि उन्हें बाजार स्विच करना होगा क्योंकि उनकी सफलता की संभावना नहीं है, अगर वे जो भी कर रहे हैं वह करना जारी रखता है। दूसरी ओर, अन्य बाजारों को शामिल करना लागतों में छोटे बदलाव, पूंजी के आउटले और जोखिमों जैसे लाभ प्रदान कर सकता है जो लंबे समय से अधिक प्रभाव डाल सकते हैं। उपलब्ध सभी बाजारों से परिचित होना अधिक अवसरों की अनुमति देगा और संभावित रूप से लाभ या कम लागत में वृद्धि होगी।

इकाई – III शेयरबाजारोंमेंट्रेडिंगसिस्टम (Trading System in Stock Exchanges)

हाल के समय में, बड़ी संख्या में लोग शेयर बाजार में ट्रेडिंग करने की ओर बढ़ रहे हैं ऐसा इसलिए है क्योंकि शेयर बाजार बहुत कम समय में बहुत अच्छा रिटर्न देने वाला जरिया बन गया है।

शेयर बाजार में ट्रेडिंग करने वाले ट्रेडर्स में से कुछ ट्रेडर अपने कौशल पर निर्भर रहते हैं और कुछ अच्छे रिटर्न के लिए दूसरों पर निर्भर होते हैं। लेकिन इनमें बहुत कम लोगों को सफलता मिली है और ज्यादातर लोग अभी भी सफलता की उम्मीद कर रहे हैं। यह केवल इसलिए है क्योंकि ट्रेडर टेक्नोलॉजी के बारे में पूरी तरह जागरूक नहीं है। इस लेख में हम आपको कुछ शक्तिशाली सॉफ्टवेयर के बारे में बताने जा रहे हैं, जिन्होंने ट्रेडिंग का इतिहास बदल दिया है और यह धीरे-धीरे ट्रेडर्स के बीच बहुत तेजी से प्रसिद्ध हो रहे है। आप सभी जानते हैं कि आजकल टेक्नोलॉजी ने हर क्षेत्र में अपने पैर जमा लिया है, और हर क्षेत्र में टेक्नोलॉजी हमें बहुत तेजी से सफलता की तरफ ले जा रहा है। टेक्नोलॉजी ने ट्रेडर्स के लिए ट्रेडिंग को बहुत आसान और लाभदायक बना दिया है।

लेकिन इससे पहले हमें यह जानना होगा कि ट्रेडिंग करने के कितने तरीके हैं। शेयर बाजार में ट्रेडिंग करने के दो तरीके हैं।

मैन्युअल ट्रेडिंग में, ट्रेडर को सिर्फ अपनी कौशल के साथ ट्रेडिंग करनी पड़ती है। उनमें से कुछ ट्रेडर सलाहकार सेवा पर निर्भर होकर रह जाते हैं और कुछ ब्रोकर हाउस द्वारा टिप्स लेकर ट्रेड करते हैं। यह ही नहीं ट्रेडर्स को Price movements को समझने के लिए बहुत अधिक समय देना पड़ता है और पूरा विश्लेषण करना पड़ता है, उसके बाद ही वो ट्रेड कर पाते हैं और फिर भी यह बहुत लाभदायक साबित नहीं होता। लेकिन अगर ट्रेडिंग रोबोट सिस्टमद्वारा की जाती है, तो ट्रेडिंग बहुत Pure, perfect and error free हो सकती है। ऑटो रोबोट ट्रेडिंग या एल्गो ट्रेडिंग एक ऐसी तकनीक है जिसमें हम सॉफ्टवेयर के द्वारा शेयरों को खरीदते और बेचते हैं और हमारे सॉफ्टवेयर हमारी Strategy के हिसाब से सही वक्त पर शेयरों को खरीदते और बेचते हैं और इन सॉफ्टवेयर को विकसित करने और लाइव मार्केट पर परीक्षण करने के बाद ही बाजार में उतारा गया है। रोबोट लाभ होने की सम्भावना को बढ़ा देता है क्योंकि ऑटो ट्रेडिंग में सभी प्रक्रियाएं खुद ब खुद (ऑटोमैटिक) काम करती हैं और हमारी भावनाएं हमारे ट्रेडिंग करने के बीच नहीं आती हैं। कई बार मैन्युअल ट्रेडिंग करते समय, ट्रेडर्स को पता चलता है कि बाजार में उनके शेयरों या कमोडिटी की स्थिति नुकसान की तरफ ले जा रही है तब भी ट्रेडर अपनी भावनाओं की वजह से उस स्थिति (पॉज़िशन) को खत्म नहीं करते और नुकसान बढ़ जाता है। यदि बाजार में हमारी स्थिति खराब है और हमें पता चल जाता है कि हमारी ट्रेड दोबारा फायदे की स्थिति में नहीं आएगी, तो हमें जल्दी से बाहर निकलना चाहिए। लेकिन, भावनाओं के कारण हम ऐसा नहीं कर पाते और हम उस शर्त (कन्डिशन) में ज्यादा नुकसान कर लेते हैं। और यही कारण है कि कई ट्रेडर ट्रेडिंग न करने का फैसला ले लेते हैं। इसके बाद, यह न केवल पैसे का नुकसान होगा, बल्कि ट्रेडर अपना आत्मविश्वास भी ढीला कर लेता है और ट्रेडर शेयर बाजार में ट्रेडिंग करने वालों के आलोचकों के समूह में शामिल हो जाता है।

भारत में, अधिकांश लोग मैन्युअल ट्रेडिंग कर रहे हैं क्योंकि वे ऑटो रोबोट ट्रेडिंग के बारे में नहीं जानते हैं। उनके पास अच्छा ज्ञान है लेकिन फिर भी वे सफल नहीं हैं, क्योंकि वे सफलता से एक कदम दूर हैं, जो उन्हें रोबोट सिस्टम का उपयोग करके उसे पा सकते हैं।

ऑटो रोबोट ट्रेडिंग सिस्टम कुछ फास्ट कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का एक समूह होता है, जिसमें ऑर्डर अपने आप उत्पन्न होते हैं और ट्रेडिंग टर्मिनल पर स्वतः सबमिट हो जाते हैं। रोबोटिक ट्रेडिंग कई सारे फायदे देता है। जैसे की अच्छी ऐक्युरेसी, एक बार में कई स्क्रिप्ट पर ध्यान दे पाना, अच्छा रिटर्न, समय की बचत और रीयल टाइम ट्रेडिंग।

ऑटो ट्रेडिंग स्ट्रेटेजी और रोबोट का मेल होता है ऑटो ट्रेडिंग ट्रेडर्स को प्रवेश और बाहर निकलने के लिए नियम बनाने की अनुमति देता है और कंप्यूटर नियमों के अनुसार स्वचालित रूप से पूरा ट्रेड करता है। स्ट्रेटेजी सरल शर्तों पे भी आधारित हो सकती है जैसे कि मूविंग एवरेज या यह कुछ जटिल नियम पर आधारित हो सकती है। यही नहीं, ट्रेडर अपनी स्ट्रेटेजी को भी रोबोट में जोड़ सकता है।

हर व्यवसायी को सफलता हासिल करने के लिए अपने व्यापार के जरूरी सफलता कारकों को पहले से ही खोज लेना चाहिए, क्योंकि सफलता का मंत्र ही यह तय करता है कि व्यापार कितनी सफलता पायेगा। इसी तरह से ट्रेडिंग करते वक्त नई तकनीक ही ट्रेडिंग का जरूरी सफलता कारक होता है, जिसको हम ऑटो रोबोट ट्रेडिंग के नाम से जानते हैं। यदि ट्रेडर खुद को रोबोट ट्रेडिंग सिस्टम के साथ जोड़ लेगा, तो वह सब कुछ बड़े स्तर पर कर पायेगा, क्योंकि रोबोट ट्रेडिंग करते वक्त उनको ट्रेडिंग करने में पूरा वक्त नहीं देना होगा, बल्कि उसको कुछ मिनट अपनी आवश्यकता रोबोट में जमा करने को देने होंगे, उसके बाद रोबोट अपने आप हर प्रक्रिया को खुद ब खुद पूर्ण करेगा।

लोगों को गलत समझ है कि नई तकनीक को उपयोग करना कठिन है। परंतु ऐसा नहीं है, तकनीक को समझने के लिए बस कुछ मिनट देने होते हैं और फिर जिंदगी भर वो हमें सफलता की तरफ तेजी से ले जाने का काम करती है। वास्तव में, रोबोट को समझना और उपयोग करना बहुत आसान है। ट्रेडर को केवल एक बार रोबोट ट्रेडिंग शुरू करना होगा और कुछ दिनों में वह इन सॉफ्टवेयर पर महारत हासिल कर लेंगे।

शेयर बाजारों का अर्थ और कार्य (Meaning and Functions of Stock exchanges)

शेयर का सीधा सा अर्थ होता है हिस्सा। शेयर बाजार की भाषा में बात करें तो शेयर का अर्थ है कंपनियों में हिस्सा। उदाहरण के लिए एक कंपनी ने कुल 10 लाख शेयर जारी किए हैं। आप कंपनी के प्रस्ताव के अनुसार जितने अंश खरीद लेते हैं आपका उस कंपनी में उतने का मालिकाना हक हो गया जिसे आप किसी अन्य खरीददार को जब भी चाहें बेच सकते हैं। आप 100 से लेकर अधिकतम शेयर खरीद सकते हैं।

कंपनी जब शेयर जारी करती है उस वक्त किसी व्यक्ति या समूह को कितने शेयर देना हैं यह उसका विवेकाधीन अधिकार है। बाजार से शेयर बाजार खरीदने/बेचने के लिए कई शेयर ब्रोकर्स होते हैं जो उनके तय पारिश्रमिक (लगभग 2 फीसदी) लेकर अपने ग्राहकों को यह सेवा देते हैं।

इन कंपनियों के शेयरों का मूल्य मुंबई शेयर बाजार (बीएसई) में दर्ज होता है। सभी कंपनियों का मूल्य उनकी लाभदायक क्षमता के अनुसार कम-ज्यादा होता है। इस पूरे बाजार में नियंत्रण भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) का होता है। इसकी अनुमति के बाद ही कोई कंपनी अपना प्रारंभिक निर्गम इश्यू (आईपीओ) जारी कर सकती है।

प्रत्येक छमाही या वार्षिक आधार पर कंपनियां लाभ होने पर अंशधारकों को लाभांश भी देती हैं। और कंपनी की गतिविधियों की जानकारी से भी रूबरू कराती है।

शेयर बाजार में लिस्टेड होने के लिए कंपनी को बाजार से लिखित समझौता करना पड़ता है, जिसके तहत कंपनी अपनी हर हरकत की जानकारी बाजार को समय-समय पर देती रहती है, खासकर ऐसी जानकारियां, जिससे निवेशकों के हित प्रभावित होते हों। इन्हीं जानकारियों के आधार पर कंपनी का मूल्यांकन होता है और इस मूल्यांकन के आधार पर मांग घटने-बढ़ने से उसके शेयरों की कीमतों में उतार-चढ़ाव आता है। अगर कोई कंपनी लिस्टिंग समझौते के नियमों का पालन नहीं करती, तो उसे डीलिट कर देने की कार्रवाई सेबी करता है।

शेयर बाजार के कार्य-

शेयर बाजार के निम्नलिखित कार्य हैं-

1. अनवरत बाजार उपलब्ध कराना-

शेयर बाजार सूचीबद्ध प्रतिभूतियों के नियमित एवं सुविधापूर्ण क्रय-विक्रय के लिए एक स्थान है। शेयर बाजार विभिन्न अंशों, ऋणपत्रों, बॉण्ड्स एवं सरकारी प्रतिभूतियों के लिए तात्कालिक एवं अनवरत बाजार उपलब्ध कराता है इसके माध्यम से प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय में उच्च कोटि की तरलता पाई जाती है क्योंकि इसके धारक जब भी चाहें, अपनी प्रतिभूतियों का नकद भुगतान प्राप्त कर सकते हैं।

2. मूल्य एवं विक्रय सम्बन्धी सूचना प्रदान करना-

एक शेयर बाजार विभिन्न प्रतिभूतियों के दिन-प्रतिदिन के लेने देन का पूर्ण विवरण रखता है और मूल्य एवं विक्रय की मात्रा की नियमित सूचना प्रेस एवं अन्य संचार माध्यमों को देता रहता है वास्तव में आजकल आप टी.वी. चैनल जैसे-सी.एन.बी.सी.जी न्यूज, एन.डी.टी.वी. और मुख्य खबरों (हेड लाइन) के माध्यम से विशिष्ट अंशों के विक्रय की मात्रा एवं मूल्यों के सम्बन्ध में मिनट-मिनट की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। यह निवेशकों को उन प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय के सम्बन्ध में शीघ्र निर्णय लेने की सुविधा प्रदान करता है जिनके लेनदेन में वे इच्छुक हैं।

3. लेनदेन एवं निवेश में सुरक्षा प्रदान करना-

शेयर बाजार में लेनदेन केवल उनके सदस्यों के मध्य पर्याप्त पारदर्शिता एवं नियमों विनियमों के कठोर मापदंड के अंतर्गत, जिसमें सुपुर्दगी व भुगतान का समय और प्रक्रिया भी निश्चित होती है, संपन्न होते हैं। यह शेयर बाजार में हुए लेनदेनों को उच्च कोटि की सुरक्षा प्रदान करता है।

4. बचत की गतिशीलता एवं पूँजी नियंत्रण में सहायक-

शेयर बाजार का कुशल कार्यप्रणाली एक सक्रिय एवं विकासशील प्राथमिक बाजार के लिए उपयोगी वातावरण का सृजन करती है स्कंध बाजार का अच्छा कार्य निष्पादन और अंशों के प्रति रूख नये निर्गमन बाजार को तेजी प्रदान करता है जिससे बचत को व्यावसायिक एवं औद्योगिक उपक्रमों में निवेश करने में गतिशीलता आती है केवल यही नहीं, बल्कि शेयर बाजार अंशों व ऋण-पत्रों के निवेश एवं लेनदेन में तरलता एवं लाभप्रदता प्रदान करता है।

5. कोष का उचित आबंटन-

शेयर बाजार लेनदेन प्रक्रिया के फलस्वरूप कोषों का प्रवाह कम लाभ के उपक्रमों से अधिक लाभ के उपक्रमों की ओर होता है और उन्हें विकास का अधिक अवसर प्राप्त होता है अर्थव्यवस्था के वित्तीय स्रोतों का इस प्रकार से श्रेष्ठ आबंटन होता है।

भारत में शेयर बाजारों के संगठन: पारंपरिक संरचना, शेयर बाजारों के निगमीकरण (Organization of Stock Exchanges in India: Traditional structure, Corporatization of Stock exchanges)

भारत में शेयर बाजार

शेयर बाजार एक 'शेयर बाजार' या 'इक्विटी बाजार' भी स्टॉक एक्सचेंज के खरीदारों और विक्रेताओं के एकत्रीकरण (आर्थिक लेन-देन का एक ढीला नेटवर्क नहीं, एक भौतिक सुविधा या असतत इकाई) (जाता है 'कहा जाता शेयर); केवल निजी तौर पर कारोबार उन के रूप में के रूप में अच्छी तरह से एक शेयर बाजार पर सूचीबद्ध | इन [प्रतिभूतियों] [सुरक्षा (वित्त)] शामिल हो सकते हैं।

स्टॉक एक्सचेंज

एक शेयर बाजार स्टॉक व्यापारियों (लोगों और कंपनियों) के शेयरों में व्यापार कर सकते हैं जिसके द्वारा एक जगह या संगठन है। कंपनियां अपने शेयर स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध पाने के लिए चाहते हो सकता है। अन्य शेयरों में एक व्यापारी के माध्यम से, यह है कि, "काउंटर पर" कारोबार किया जा सकता है।

व्यापार

शेयर बाजारों में व्यापार के लिए एक खरीदार के लिए एक विक्रेता से एक शेयर या सुरक्षा के पैसे के लिए हस्तांतरण का मतलब है। यह एक कीमत पर सहमत करने के लिए इन दोनों पार्टियों की आवश्यकता है। इक्विटीज (स्टॉक या शेयर) एक विशेष कंपनी में एक स्वामित्व हित प्रदान करते हैं।

दुनिया में कहीं भी आधार पर किया जा सकता है, और बैंकों, बीमा कंपनियों या पेंशन फंड और हेज फंडों में शामिल हो सकते हैं, जो बड़े व्यापारियों निवेशकों के लिए छोटे व्यक्ति के शेयर निवेशकों से शेयर बाजार रेंज में भाग लेने। उनका खरीदने या बेचने के आदेश।

कुछ बाजारों लेन-देन खुले चिल्लाहट के रूप में जाना जाता है एक विधि द्वारा, एक ट्रेडिंग फ्लोर पर बाहर किया जाता है, जहां शारीरिक स्थानों रहे हैं। इस विधि को कुछ स्टॉक एक्सचेंजों और कमोडिटी एक्सचेंजों में प्रयोग किया जाता है, और मौखिक बोलियों में प्रवेश करने से व्यापारियों शामिल है और सी करता है।

एक संभावित खरीदार के एक शेयर के लिए एक विशिष्ट मूल्य बोलियों और एक संभावित विक्रेता एक ही शेयर के लिए एक विशिष्ट मूल्य पूछता है। बाजार में खरीदने या बेचने आप किसी भी क्रमशः शेयर के लिए मूल्य या बोली मूल्य पूछना स्वीकार करेंगे इसका मतलब है। जब बोली और कीमत पूछना है। पेरिस एक्सचेंज यूरोनेकस्ट का अब हिस्सा, एक आदेश से जुड़ गया,

इलेक्ट्रॉनिक स्टॉक एक्सचेंज है। यह देर से 1980 के दशक में स्वचालित किया गया था। 1980 के दशक से पहले, यह एक खुला चिल्लाहट विनिमय शामिल थे। शेयर दलालों ट्रेडिंग फ्लोर या पेले Brongniart पर मुलाकात की। इस (एक खरीदार के लिए एक विक्रेता के लिए खरीदार, विक्रेता) संभावित प्रतिपक्षों की संख्या सबसे अधिक है और शायद सबसे अच्छी कीमत देता है के बाद से शेयर ट्रेडिंग लोग सबसे लोकप्रिय एक्सचेंज पर व्यापार करने के लिए पसंद करेंगे। हालांकि, हमेशा विकल्प नहीं किया गया है

शेयर बाजारों के निगमीकरण**निगमीकरण और कंपनीकरण संस्था से लाभ कमाने वाली संस्था में परिवर्तन के लिए प्रक्रिया.**

4 बी. (1) सभी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड द्वारा निर्दिष्ट किए जाने वाले ऐसे समय के भीतर अपने अनुमोदन के लिए निगमीकरण और कंपनीकरण संस्था से लाभ कमाने वाली संस्था में परिवर्तन के लिए एक योजना प्रस्तुत करेगा खंड -4 ए में करने के लिए भेजा:

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड, सरकारी राजपत्र में अधिसूचना द्वारा पहले से ही निगम और demutualized किया गया था, जो मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के नाम निर्दिष्ट कर सकते हैं, और इस तरह के शेयर बाजार इस धारा के तहत योजना प्रस्तुत करने की आवश्यकता नहीं होगी बशर्ते कि .

(2) उपधारा में निर्दिष्ट योजना के प्राप्त होने पर (1), भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड, ऐसी जांच के रूप में बनाने के बाद, यदि कोई हो, इस संबंध में आवश्यक हो सकता है और इस तरह के आगे जानकारी प्राप्त कर सकते हैं हो सकता है यह हो सकता है के रूप में इसके साथ या संशोधन के बिना इस योजना को मंजूरी, व्यापार के हित में और भी जनता के हित में होगा कि संतुष्ट है, तो आवश्यकता है और.

(3) उप - धारा के तहत कोई योजना (2) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड द्वारा अनुमोदित किया जाएगा यदि किसी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के सदस्यों की सदस्यता कार्ड के एवज में एक वैध विचार या व्यापार के अधिकार के प्रावधान के लिए शेयर जारी या सदस्यों को लाभांश का भुगतान है कि शेयर बाजार के किसी भी भंडार या संपत्ति के बाहर प्रस्तावित किया गया है.

योजना उप - धारा के तहत मंजूरी दे दी है, जहां (4) (2), तो अनुमोदित योजना से तुरंत प्रकाशित किया जाएगा

(क) प्रतिभूति और विनिमय सरकारी राजपत्र में भारत की बोर्ड;

(ख) भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड द्वारा निर्दिष्ट किया जा सकता है के रूप में इस तरह के दो दैनिक समाचार पत्रों में मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज, भारत में घूम

और इस तरह के प्रकाशन पर, बल या किसी भी समझौते, पुरस्कार, निर्णय, डिक्री या तत्समय प्रवृत्त के लिए अन्य साधन में कुछ समय के लिए इस अधिनियम या किसी भी अन्य कानून में निहित विपरीत करने के लिए कुछ भी होते हुए भी, योजना प्रभाव है और किया जाएगा सभी सदस्यों, लेनदारों, जमाकर्ताओं और कर्मचारियों मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज की और सभी व्यक्तियों को किसी भी अनुबंध होने पर सहित सभी व्यक्तियों और अधिकारियों पर बाध्यकारी, अधिकार, शक्ति, दायित्व या करने के लिए, के ऊपर, के खिलाफ के साथ दायित्व, या मान्यता प्राप्त है, के संबंध में शेयर बाजार या अपने सदस्यों.

(5) भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड यह व्यापार के हित में और भी उप - धारा के तहत इस योजना को मंजूरी के लिए सार्वजनिक हित में नहीं होगा कि संतुष्ट है (2), यह एक आदेश से, अस्वीकार कर सकते हैं कहां योजना और अस्वीकृति के ऐसे आदेश राजपत्र में यह द्वारा प्रकाशित किया जाएगा:

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड सभी संबंधित व्यक्तियों और योजना को खारिज एक आदेश पारित करने से पहले संबंध में मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज को सुनवाई का उचित अवसर देना नहीं होगी.

(6) भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड मई, उप - धारा के तहत योजना का अनुमोदन करते हुए (2), लेखन में एक आदेश से प्रतिबंधित-

(क) वोटिंग भी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज का शेयर दलाल हैं जो शेयरधारकों के अधिकारों;

(ख) शेयरधारकों के सही या शेयर बाजार के संचालक मंडल पर प्रतिनिधियों की नियुक्ति के लिए मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के एक शेयर दलाल;

(ग) संचालक मंडल की कुल संख्या का एक चौथाई से अधिक नहीं होगी, जो मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज के संचालक मंडल पर नियुक्त होने के लिए मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज का शेयर दलालों के प्रतिनिधियों की अधिकतम संख्या.

(7) उप - धारा (6) के अधीन किए गए आदेश, जिनमें सरकारी राजपत्र में और प्रकाशन पर प्रकाशित किया जाएगा व्यवस्था होगी, कंपनी अधिनियम, 1956 में निहित विपरीत करने के लिए कुछ भी होते हुए भी (1956 का 1), या किसी भी तत्समय प्रवृत्त के लिए अन्य कानून, पूरा प्रभाव है.

(8) प्रत्येक मान्यता प्राप्त शेयर बाजार, निगमीकरण या कंपनीकरण संस्था से लाभ कमाने वाली संस्था में परिवर्तन के लिए योजना (2), करेगा, के रूप में सार्वजनिक या किसी अन्य तरीके से करने के लिए इक्विटी शेयरों के नए मुद्दे से या तो उप - धारा के तहत मंजूरी दी गई है जिनके संबंध में निर्दिष्ट किया जा सकता है भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड द्वारा किए गए नियमों द्वारा ¹, अपने इक्विटी शेयर पूंजी का प्रतिशत कम से कम पचास एक उप - धारा के तहत आदेश (7) के प्रकाशन की तारीख से बारह महीनों के भीतर आयोजित की जाती है कि यह सुनिश्चित करें व्यापार के अधिकार होने के शेयरधारकों से सार्वजनिक अन्य द्वारा:

भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड, पर्याप्त कारण पर यह दिखाया जा रहा है और जनता के हित में एक और बारह महीनों से उक्त अवधि तक का हो सकता है.

प्रतिभूतियों की लिस्टिंग: लिस्टिंग के लाभ, लिस्टिंग प्रक्रिया (Listing of Securities: Advantages of listing, listing Procedure)

पब्लिक इश्यू और प्रतिभूतियों की लिस्टिंग धारा 2 के खंड (ज) के उपखंड (आईई) में निर्दिष्ट.

17A. (1) बल में कुछ समय के लिए इस अधिनियम या किसी भी अन्य कानून में निहित प्रावधानों के प्रतिकूल प्रभाव डाले बिना, प्रकृति का कोई प्रतिभूतियों धारा 2 के खंड (ज) के उपखंड (आईई) में निर्दिष्ट जनता के लिए

पेशकश की जाएगी जारीकर्ता ऐसे पात्रता मानदंडों को पूरा करता है और भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड द्वारा किए गए नियमों द्वारा निर्दिष्ट किया जा सकता है जैसे अन्य आवश्यकताओं का अनुपालन जब तक या किसी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध है।

(2) हर जारीकर्ता एक करने के लिए, जनता के लिए प्रस्ताव दस्तावेज जारी करने से पहले जनता के लिए उसमें संदर्भित प्रमाण पत्र या उपकरणों की पेशकश करने के इच्छुक धारा 2 के खंड (ज) के उपखंड (आईई) में निर्दिष्ट एक आवेदन करेगा या अधिक इस तरह के प्रमाण पत्र या शेयर बाजार या ऐसे प्रत्येक स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध होने के लिए उपकरणों के लिए अनुमति के लिए स्टॉक एक्सचेंजों को मान्यता दी।

(3) जहां उपधारा के तहत के लिए आवेदन की अनुमति (2) लिस्टिंग के लिए मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों या इनमें से किसी के द्वारा दी जाती है या मना कर दिया नहीं किया गया है, जारीकर्ता झट से, यदि कोई हो, सब पैसे की रकम चुकाने के अनुसरण में आवेदकों से प्राप्त करेगा जारीकर्ता इसे चुकाने के लिए उत्तरदायी हो जाता है के बाद किसी भी तरह के पैसे के आठ दिनों के भीतर चुकाया नहीं है अगर प्रस्ताव दस्तावेज, और, जारीकर्ता और मामले के रूप में उसके हर निर्देशक या ट्रस्टी, डिफॉल्ट रूप में है, जो हो सकता है करेगा, समाप्ति पर और से आठवें दिन की सालाना पंद्रह फीसदी की दर से ब्याज के साथ कि पैसे चुकाने के लिए संयुक्त रूप से और अलग - अलग उत्तरदायी हो।

स्पष्टीकरण एक और दिन के बाद आठवें दिन *गणना* में, परक्राम्य लिखत अधिनियम, 1881 (1881 का 26) के तहत एक सार्वजनिक अवकाश है जो किसी भी मध्यवर्ती दिन, अवहेलना, और किया जाएगा (ताकि गणना के रूप में) आठवें दिन में ही है, तो ऐसी एक सार्वजनिक अवकाश, कहा प्रयोजनों के लिए एक छुट्टी नहीं है जो उसके बाद पहले दिन वहाँ रखे जाएँगे।

(4) किसी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज पर एक सार्वजनिक कंपनी की प्रतिभूतियों की लिस्टिंग से संबंधित इस अधिनियम के सभी प्रावधानों, (खंड के उपखंड (आईई) में निर्दिष्ट प्रकृति की प्रतिभूतियों की लिस्टिंग के लिए यथोचित परिवर्तन सहित लागू होंगे जारीकर्ता द्वारा धारा 2, एक विशेष उद्देश्य अलग इकाई होने का ज)

देश के दो शीर्ष स्टॉक एक्सचेंजों बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) ने हाल ही में छोटी कंपनियों के लिए एसएमई एक्सचेंज की शुरुआत की है। हालांकि, पिछले कुछ महीनों में एनएसई के एसएमई एक्सचेंज पर अभी तक एक ही कंपनी सूचीबद्ध हुई है, पर बीएसई के एसएमई एक्सचेंज पर 8-10 कंपनियों की सूचीबद्धता हो चुकी है। हालांकि यह शुरुआत है, आने वाले दिनों में इस एक्सचेंज पर कंपनियों की संख्या में अच्छी खासी बढ़ोतरी होगी।

भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) ने अपनी पिछली बोर्ड मीटिंग में जो नया नियम लागू किए हैं उसके मुताबिक जिन कंपनियों का शुद्ध लाभ 15 करोड़ रुपये है, वही मुख्य प्लेटफार्म पर आईपीओ ला सकती हैं जबकि उससे कम कमाई वाली कंपनियां एसएमई एक्सचेंज पर अपना आईपीओ ला सकती हैं। देश में इस समय लगभग तीन करोड़ एसएमई हैं जिसमें से 10 लाख एसएमई काफी बड़ी हैं और उनके लिए यह दोनों एक्सचेंज पैसा जुटाने के लिए बहुत अच्छे संसाधन हैं। यदि किसी कंपनी को एसएमई से पैसे जुटाना है तो उसकी प्रक्रिया इस तरह शुरू होती है।

एसएमई कैसे लाएं आईपीओ

** सबसे पहले मर्चेट बैंकर की नियुक्ति करना। मर्चेट बैंकर पूंजी बाजार नियामक सेबी द्वारा जारी किए जानेवाले मर्चेट बैंकिंग का सर्टिफिकेट धारक होता है।

** रजिस्ट्रार की नियुक्ति और ट्रांसफर एजेंट (आरटीए) की नियुक्ति करना। आरटीए शेयरों के डिमैटेरियलाइजेशन का कार्य करता है।

** कंपनी का ड्यू डिलिजेंस - मर्चेट बैंकर की नियुक्ति के बाद मर्चेट बैंकर ड्यू डिलिजेंस को कैरी करता है।

ए ड्यू डिलिजेंस के तहत कंपनी के अलावा उसकी ग्रुप कंपनियों की सभी वित्तीय सूचनाओं की समीक्षा की जाती है।

बी ड्यू डिलिजेंस के तहत सभी वर्क यूनिटों का निरीक्षण, प्रबंधन के साथ चर्चा आदि शामिल होते हैं।

** कानूनी सलाहकार की नियुक्ति करना : कानूनी सलाहकार की इसलिए नियुक्ति की जाती है ताकि वह कानूनी ड्यू डिलिजेंस को देख सके।

** प्रोस्पेक्टस की तैयारी: ड्यू डिलिजेंस के बाद मर्चेट बैंकर प्रोस्पेक्टस की तैयारी करता है। प्रोस्पेक्टस में कंपनी की सभी तरह की सूचनाओं को सेबी के नियमों के मुताबिक घोषणा और खुलासा करना होगा।

** प्रोस्पेक्टस और अन्य जरूरी कागजातों को सेबी, आरओसी (रजिस्ट्रार ऑफ कंपनीज) और एसएमई स्टॉक एक्सचेंज के पास फाइल करना प्रोस्पेक्टस और कुछ अन्य जरूरी कागजातों को पूंजी बाजार नियामक सेबी, एसएमई स्टॉक एक्सचेंज, आरओसी के पास फाइल किया जाता है। प्रोस्पेक्टस की फाइलिंग के बाद मर्चेट बैंकर एसएमई स्टॉक एक्सचेंज की सभी जरूरी सूचनाओं से उसे संतुष्ट करता है और इसके बाद आईपीओ लाने के लिए स्टॉक एक्सचेंज अनुमति दे देता है।

** अनुमति के बाद की प्रक्रिया: एसएमई एक्सचेंज से अनुमति मिलने के बाद अंडरराइटिंग, सिंडिकेशन और बैंकर्स फाइनल किए जाते हैं।

** आईपीओ खुलने और पैसा जुटाने की शुरुआत: उपरोक्त प्रक्रियाओं को फाइनल करने के बाद कंपनियां नए शेयर जनता के लिए जारी करती हैं और उनसे पैसे जुटाती हैं।

** एसएमई एक्सचेंज पर नए शेयरों की सूचीबद्धता की अनुमति

ए एक्सचेंज के पास सभी आवश्यक दस्तावेजों की फाइलिंग करना।

बी एसएमई स्टॉक एक्सचेंज की सभी जरूरी सूचनाओं से उसे संतुष्ट करने के बाद सूचीबद्धता की अनुमति मिलती है।

सी इसके बाद स्टॉक एक्सचेंज पर शेयरों को सूचीबद्ध कराया जाता है जिसके बाद शेयरों में कारोबार शुरू होता है।

शर्तें

** न्यूनतम आवेदन वैल्यू- एक लाख रुपये

** नेट वास्तविक (टैजिबल) असेट्स- एक करोड़ रुपये

** तीन सालों से लगातार लाभ का प्रदर्शन करना- (साल की अवधि 12 महीने)

** पोस्ट इश्यू पेड अप कैपिटल-न्यूनतम एक करोड़ रुपये और 25 करोड़ से अधिक न हो।

** कंपनी के लिए जरूरी है कि उसकी वेबसाइट हो।

** सूचीबद्धता के लिए यह जरूरी है कि कंपनी का प्रमोटर लिस्टिंग एडवाइजरी कमिटी के सामने साक्षात्कार के लिए हाजिर हो।

आईपीओ में शामिल होने वाले तंत्र

** एसएमई कंपनी

** मर्चेट बैंकर

** ब्रोकर और उप ब्रोकरों के सदस्य

** रजिस्ट्रार टू द इश्यू

** एफआईआई, क्यूआईबी, बैंक आदि.

** हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल (एचएनआई)

** वेंचर कैपिटल फंड्स, प्राइवेट इक्विटी फंड

** नियामक प्राधिकरण

क्लीयरिंग और निपटारा , ऑनलाइन ट्रेडिंग

(Clearing and Settlement, Online Trading)

समाशोधन और निपटान

समाशोधन और निपटान दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं हैं जो वित्तीय बाजारों में लेनदेन निष्पादित करते हैं वित्तीय प्रतिभूतियों को खरीदा और बेचा जा सकता है समाशोधन और निपटान क्लीयरिंग निगमों को किसी भी अधिकार दायित्वों का एहसास करने की अनुमति है, जो प्रतिभूति व्यापार की प्रक्रिया में बनाई गई है, और व्यवस्था करने के लिए ताकि धन और प्रतिभूतियों को सही समय पर, कुशल तरीके से स्थानांतरित किया जा सके। लेख स्पष्ट रूप से बताता है कि इनमें से प्रत्येक कार्य प्रतिभूति व्यापार की प्रक्रिया में कैसे आता है, दोनों प्रक्रियाओं के बीच संबंध बताते हैं, और समाशोधन और निपटान के बीच समानताएं और अंतर दर्शाता है।

क्या साफ है?

क्लियरिंग अन्य वित्तीय संस्थानों के दावों के खिलाफ वित्तीय संस्थानों के एक समूह के दावों के निपटारे की प्रक्रिया है। समाशोधन की प्रक्रिया एक व्यापार के निष्पादित समय के बीच होती है और एक समझौता किया जाता है। एक व्यापार एक वित्तीय बाजार में निष्पादित या पूरा होने के बाद, समाशोधन एजेंसी को सूचित किया जाएगा, जो तब लेनदेन को साफ करने की प्रक्रिया को पूरा करेगा। समाशोधन बहीखाता पद्धति के समान है, जहां क्लियरिंग हाउस खरीदार और लेनदेन के विक्रेता से मिलान करके डेटाबेस को अपडेट करता है जिससे इस बात की पुष्टि हो जाती है कि दोनों पक्ष व्यापार के नियमों के साथ समझौते में हैं। आगे क्लियरिंग हाउस एक प्रक्रिया में संलग्न होगा जिसे 'नेटिंग' कहा जाता है।

चूंकि एक दिन में बड़ी संख्या में व्यापार और लेनदेन वित्तीय बाजारों में होते हैं, क्लियरिंग हाउस खरीद और बेचने के आदेश को बंद करने के लिए एक स्वचालित प्रणाली का उपयोग करता है जिससे कि केवल कुछ लेन-देन वास्तव में हो सकें तय किया। एक बार खरीदारों और विक्रेताओं के मिलान और सही ढंग से चुने गए, क्लियरिंग हाउस पार्टियों को लेनदेन के लिए सूचित करेगा और विक्रेता को धन हस्तांतरित करने और खरीदार को प्रतिभूतियों के हस्तांतरण की व्यवस्था करेगा।

निपटान क्या है?

निपटान एक कदम है जो पिछले प्रतिभूतियों की खरीदारी की प्रक्रिया में आता है। निपटारे में, खरीदार विक्रेता को आवश्यक भुगतान करके लेनदेन के अपने पक्ष को पूरा करेगा, और विक्रेता खरीदार को खरीदी गई प्रतिभूतियों को स्थानांतरित कर देगा। जब समाशोधन निगम खरीदार को प्रतिभूतियों का स्वामित्व हस्तांतरित करता है और निधि को विक्रेता को स्थानांतरित कर दिया जाता है तो निपटान पूरा हो जाएगा। निष्पादन की तारीख से 3 दिनों के बाद स्टॉक और बॉन्ड का निपटारा किया जाता है; सरकारी प्रतिभूतियां, विकल्प और म्यूचुअल फंड निष्पादन की तारीख के एक दिन बाद जमा करते हैं और जमा की प्रमाण पत्र आमतौर पर निष्पादन के रूप में उसी दिन बसाए जाते हैं।

समाशोधन और निपटान के बीच अंतर क्या है?

सिक्क्योरिटीज ट्रेडिंग की प्रक्रिया में क्लियरिंग हाउस द्वारा क्लियरिंग और सेटलमेंट दोनों प्रक्रियाएं होती हैं यह महत्वपूर्ण है कि वित्तीय बाजारों के भीतर चिकनी प्रतिभूति व्यापारिक संचालन को बनाए रखने के लिए एक मजबूत समाशोधन और निपटान प्रणाली निर्धारित की जाती है। क्लियरिंग प्रक्रिया का दूसरा हिस्सा है जो व्यापार के निष्पादन के बाद और लेनदेन के निपटारे से पहले आएगा। समाशोधन है जहां खरीदार और विक्रेता मिलान और पुष्टि की जाती हैं, और लेनदेन को खाली किया जाता है (विक्रय लेनदेन के साथ खरीद के सेट) ताकि केवल

कुछ लेनदेन वास्तव में पूरा हो जाएंगे। निपटारा प्रक्रिया का अंतिम चरण है जहां क्लियरिंग हाउस खरीदार को खरीदी गई प्रतिभूतियों के स्वामित्व का हस्तांतरण करेगा और विक्रेता को भुगतान में धन हस्तांतरित करेगा। समाशोधन और निपटान प्रणाली का मुख्य लाभ लेनदेन की सुरक्षा है चूंकि यह प्रक्रिया एक समाशोधन निगम द्वारा आयोजित की जाती है, खरीदार और विक्रेता यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि प्रतिभूतियों और फंड की डिलीवरी एक समय पर और सटीक तरीके से होगी।

समाशोधन बनाम निपटारा

- समाशोधन और निपटान दो महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं हैं जो वित्तीय बाजारों में लेनदेन निष्पादित करते समय की जाती हैं जहां कई प्रकार की वित्तीय प्रतिभूतियों को खरीदा और बेचा जा सकता है।
- यह महत्वपूर्ण है कि वित्तीय बाजारों के भीतर चिकनी प्रतिभूति व्यापार संचालन को बनाए रखने के लिए एक मजबूत समाशोधन और निपटान प्रणाली निर्धारित की जाती है।
- क्लियरिंग अन्य वित्तीय संस्थानों के दावों के खिलाफ वित्तीय संस्थानों के एक समूह के दावों के निपटारे की प्रक्रिया है।

- समाशोधन बहीखाता पद्धति के समान है, जहां क्लियरिंग हाउस खरीदार और लेनदेन के विक्रेता से मिलान करके डेटाबेस को अपडेट करता है जिससे इस बात की पुष्टि की जाती है कि दोनों पक्ष व्यापार की शर्तों के साथ समझौते में हैं।

- निपटारे के दौरान, खरीदार विक्रेता और विक्रेता को आवश्यक भुगतान करके लेनदेन के अपने पक्ष को पूरा करता है, बदले में, खरीदार को खरीदी गई प्रतिभूतियों को स्थानांतरित करता है।

शेयर बाजार में ऑनलाइन व्यापार करने में कुछ समस्याएं सामने आ सकती हैं, जिसमें से एक समस्या खास रूप से यह आती है कि ब्रोकर व्यापार के लिए अलग-अलग सॉफ्टवेयर प्रस्तावित करते हैं। ऐसे में जब भी आप अपना ब्रोकर बदलते हैं तो हर बार नया सॉफ्टवेयर प्रयोग करना मुश्किल सा हो जाता है। हालांकि ब्रोकर के ऑनलाइन पोर्टल ने व्यापार में परेशानी कम कर दी है, इसे अपेक्षाकृत सरल बना दिया है क्योंकि इससे आपको व्यापार तंत्र का एक नमूना मिल जाता है जो आपके लिए सहायक होता है।

यहां ऑनलाइन शेयर बाजार में व्यापार के कुछ खास चरण हम आपको बताने जा रहे हैं:

1) लॉग इन करना सबसे पहले आपको लॉगिन करना होता है, हालांकि इस प्रक्रिया में अलग-अलग ब्रोकर ऑनलाइंस शेयर के व्यापार के लिए अलग-अलग प्लेटफॉर्म देते हैं। अपनी आईडी से लॉगिन करने के बाद, कुछ ब्रोकिंग प्लेटफॉर्म आपसे कुछ पसंददीदा सवाल भी कर सकते हैं, जिसे आप पहली बार अपनी लॉगिन आईडी में संग्रहित करके रखते हैं। कुछ ब्रोकर जैसे शेयरखान का सीधा लॉगिन, ट्रेडिंग पासवर्ड और अकाउंट पासवर्ड है।

2) मार्केट वॉच इसके बाद आप एक मार्केट वॉच सेट कर सकते हैं, अगर आप किसी चयनित शेयर के सेट को बेचने का सोच रहे हैं तो आपको इसके लिए एक मॉर्केट वॉच बनाना होगा। कई ब्रोकिंग टर्मिनल पर आप देखते होंगे कि उनकी मॉर्केट वॉच सबसे ऊपर रहती है। इस पर क्लिक कीजिए तो आपको कुछ कंपनियों के नाम दिखाई देंगे, यहां से आप अपनी पसंद के अनुसार कम्पनी चुन सकते हैं। इस तरह से आप शेयर की चालु कीमतों का पता भी लगा सकते हैं।

3) फंड का ट्रांसफर ऑनलाइन शेयर खरीदने के लिए आपके बैंक अकाउंट में पैसा होना चाहिए। आप ट्रेडिंग सॉफ्टवेयर पर फंड ट्रांसफर देख सकते हैं, जिसपर कि आप लॉगऑन हैं। ट्रांसफर फंड पर क्लिक करें, जिस बैंक से आपने अपना अकाउंट लिंक किया है उसका चयन करें और इससे आप आप अपने बैंक से लॉगिन रहेंगे। अपनी लॉगिन आईडी से और ट्रांजेक्शन पासवर्ड से लॉगिन करें और फंड ट्रांसफर करें। जब फंड ट्रांसफर की प्रक्रिया पूरी

हो जाए, उसके तुरंत बाद ही आपके ब्रोकर के अकाउंट में फंड क्रेडिट हो जाता है। अब आप स्टॉक बाजार से ऑनलाइन शेयर खरीद सकते हैं।

4) शेयर का क्रय-विक्रय अगर आपने एक मार्केट वॉच बनाया है, तो इस पर क्लिक करने का और शेयर खरीदने का विकल्प मौजूद रहता है। एक पॉपअप अंतिम कीमतों को, मात्राओं को, सीमित मूल्यों को दर्शाता है। अगर आप एक मार्केट ऑर्डर करते हैं, तो शेयर का क्रय तुरंत होता है। अगर आप सीमित ऑर्डर करते हैं तो आप देख सकते हैं कि अगर आपका ऑर्डर ट्रैक कर सकते हैं या नहीं।

5) टर्नओवर रिपोर्ट को चेक करें जब शेयर खरीद लिया जाता है तो यह टर्नओवर रिपोर्ट में अंकित हो जाएगा। आप यहां क्रयमूल्य और लाभ और हानि देख सकते हैं।

6) डीपी रिपोर्ट से चेक करें बैलेंस 3 दिन के बाद डीपी रिपोर्ट से आप अपने शेयर अकाउंट में बैलेंस चेक कर सकते।

7) कैश बैलेंस को चेक करें माई अकाउंट पर क्लिक कर के ब्रोकर के साथ अपने अकाउंट में कैश बैलेंस को चेक करें।

जैसा कि पहले ही बताया गया है कि अलग-अलग ब्रोकर के हिसाब से सॉफ्टवेयर भी अलग-अलग होता है ऐसे में इससे परिचित होने में थोड़ा समय लग सकता है। अच्छा होगा कि आप कुछ घंटों के लिए ब्रोकर के ऑफिस में बैठें जिससे आप आसानी से सॉफ्टवेयर से परिचित हो सकते हैं। निष्कर्ष: ऑनलाइन व्यापार से पहले ब्रोकर के सॉफ्टवेयर से परिचित होना बहुत जरूरी है। अन्यथा आप द्वारा गलत ऑर्डर होने की आशंका हो सकती है जिससे आप को नुकसान झेलना पड़ सकता है। यह कोई बहुत जटिल तंत्र नहीं लेकिन इतना आसान भी नहीं है।

सट्टा लेनदेन, मार्जिन ट्रेडिंग, शेयर बाजार कोटेशन (Speculative Transactions, Margin Trading, Stock Market Quotations)

(1) किसी भी निर्धारित धारा 6 में उल्लेख सिर से किसी के अधीन किसी भी वर्ष में मुनाफा या लाभ का नुकसान सम्हालता कहां, वह बंद सेट नुकसान की राशि की हकदार होंगी उस वर्ष में उसकी आय, मुनाफा या किसी अन्य मद में लाभ के खिलाफ:

3 *****

4 [परंतु 3 छोड़कर खाते में नहीं लिया जाएगा सिर "मुनाफा और व्यापार, व्यवसाय या पेशे के लाभ" के अंतर्गत प्रभार्य लाभ और लाभ कंप्यूटिंग में है कि, किसी भी नुकसान के लिए एक व्यापार की प्रकृति में जो कर रहे हैं सट्टा लेनदेन में निरंतर ** सट्टा लेनदेन से मिलकर किसी अन्य व्यवसाय में लाभ और लाभ की राशि, यदि कोई हो, की सीमा तक:]

5 [परंतु 6 [आगे] कि निर्धारित की धारा के प्रावधानों (ख) के तहत मूल्यांकन किया नहीं किया गया है जो एक अपंजीकृत फर्म है जहां उप - धारा (5) धारा 23 के, 7 ** किसी भी तरह के नुकसान ही बंद स्थापित किया जाएगा आय, मुनाफे और फर्म की बढ़त के खिलाफ नहीं है और आय, मुनाफे और फर्म के भागीदारों में से किसी की बढ़त के खिलाफ; निर्धारित एक पंजीकृत फर्म, अन्य आय के खिलाफ बंद सेट नहीं किया जा सकता है जो किसी भी नुकसान हुआ है और कहाँ, मुनाफे और फर्म के लाभ फर्म के भागीदारों के बीच विभाजित किया जाएगा और अकेले वे बंद सेट नुकसान की राशि की हकदार होंगी इस धारा के तहत.]

8 [एक व्यापार का गठन करने के रूप में एक ऐसी प्रकृति के हैं पर किए सट्टा लेनदेन, व्यापार किसी अन्य व्यवसाय से अलग और अलग होने के लिए समझा जाएगा. कहाँ स्पष्टीकरण 1.

. एक स्पष्टीकरण 2 सट्टा लेनदेन स्टॉक और शेयरों सहित किसी भी वस्तु की खरीद और बिक्री के लिए एक अनुबंध पर समय - समय या अंततः वस्तु या शेयरों की वास्तविक सुपुर्दगी या अंतरण द्वारा अन्यथा की तुलना में बसा हुआ है, जिसमें एक लेन - देन का अर्थ है:

इस खंड के प्रयोजनों के लिए प्रदान की है कि -

उसे या माल बेचा द्वारा निर्मित वस्तुओं की वास्तविक डिलीवरी के लिए अपने अनुबंध के संबंध में भविष्य के मूल्य में उतार चढ़ाव के माध्यम से नुकसान के खिलाफ की रक्षा करने के लिए अपनी विनिर्माण या merchanting कारोबार के दौरान एक व्यक्ति द्वारा किए गए कच्चे माल या माल के संबंध में (एक) एक अनुबंध उसके द्वारा; या

(ख) की कीमत में उतार चढ़ाव के माध्यम से स्टॉक और शेयरों की अपनी हिस्सेदारी में नुकसान के खिलाफ की रक्षा करने के लिए उसमें एक व्यापारी या निवेशक द्वारा प्रवेश स्टॉक और शेयरों के संबंध में एक अनुबंध; या

(ग) एक अनुबंध एक आगे बाजार के एक सदस्य या ऐसे सदस्य के रूप में अपने व्यापार के सामान्य पाठ्यक्रम में पैदा हो सकता है जो नुकसान के खिलाफ की रक्षा करने के लिए भ्रष्टाचार या आर्बिट्राज की प्रकृति में किसी भी लेन - देन के पाठ्यक्रम में एक शेयर बाजार में प्रवेश किया;

एक सट्टा लेन - देन होने के लिए नहीं माना जाएगा.]

9 [(2) 10 [किसी भी निर्धारित किसी भी व्यवसाय में, मार्च, 1940 के 31 वें दिन समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आकलन के लिए पिछले वर्ष की तुलना में पहले नहीं पिछले एक वर्ष किया जा रहा है, किसी भी वर्ष में मुनाफा या लाभ का नुकसान सम्हालता कहां पेशे या व्यवसाय, और हानि पूर्ण (1) के रूप में नुकसान का इतना तो बंद सेट नहीं है या निर्धारित आय का कोई अन्य सिर था जहां पूरे नुकसान को आगे ले जाया जाएगा उपधारा के तहत बंद सेट नहीं किया जा सकता अगले वर्ष, और

किसी भी अगर नुकसान सट्टा लेनदेन से मिलकर एक व्यवसाय में उसके द्वारा निरंतर था जहाँ (मैं), यह है कि साल में उसके द्वारा पर ले सट्टा लेनदेन में किसी भी व्यवसाय की, केवल लाभ और लाभ के खिलाफ बंद सेट किया जाएगा;

नुकसान किसी अन्य व्यवसाय, पेशे या व्यवसाय में उसके द्वारा निरंतर था जहां (द्वितीय), यह, यदि कोई हो, लाभ और लाभ के खिलाफ बंद सेट किया जाएगा कि वर्ष में उसके द्वारा पर किए गए किसी भी व्यापार, व्यवसाय या पेशे की: बशर्ते कि हानि मूल रूप से निरंतर था जिसमें व्यापार, व्यवसाय या पेशा है कि वर्ष में उसके द्वारा पर ले जाने के लिए जारी रखा; और

या तो मामले में नुकसान पूर्ण इतनी दूर स्थापित नहीं किया जा सकता है अगर (तीन), तो बंद सेट नहीं नुकसान की राशि अगले वर्ष के लिए आगे किया जाएगा और इतने पर 11 [, लेकिन कोई नुकसान तो आठ से अधिक वर्षों के लिए आगे ले जाया जाएगा]:]

12 [बशर्ते कि -

(एक) 13 *****

(ख) मूल्यहास भत्ता खंड (ख) (2) धारा 10 की, यह भी आगे ले जाने की उपधारा के खंड (vi) के परन्तुक के, प्रभाव पहले इस के प्रावधानों को दी जाएगी उप तहत, जहां खंड;]

14 के साथ साथ होता [(ग) कुछ भी नहीं (1), या किसी भी टाइटिल आगे बढ़ाया और उप - धारा के परन्तुक के तहत, भागीदारों के बीच विभाजित किया गया है जो किसी भी नुकसान से दूर स्थापित किया है के लिए एक पंजीकृत फर्म, किया जा रहा है, किसी भी निर्धारित समर्थ बनाना होगा निर्धारित, उप खंड के खंड (ख) के प्रावधानों के तहत मूल्यांकन किया नहीं किया गया है जो एक अपंजीकृत फर्म में भागीदार होने के नाते (5) धारा 23 की 15 **, आगे बढ़ाया और अपने ही आय के खिलाफ बंद सेट है करने के लिए किसी भी नुकसान निरंतर फर्म द्वारा;

16 एक अपंजीकृत फर्म का आकलन किया जाता है, जहां [(घ)] 17 ** खंड के अधीन (बी) की उपधारा (5) धारा 23 की किसी भी वर्ष के दौरान अपने घाटे को भी आगे ले जाया जाएगा और इस धारा के तहत बंद सेट के रूप में अगर यह एक पंजीकृत फर्म थे;

18 एक परिवर्तन एक फर्म के संविधान में हुआ है, जहां [(ई)], इस खंड में कुछ भी नहीं फर्म के शेयर के अनुपात में नुकसान का इतना दूर स्थापित किया है करने के लिए समर्थ बनाना समझा जाएगा एक अनुसार सेवानिवृत्त या मृतक साथी का अभिकलन खंड के प्रावधानों (बी) के साथ उप - धारा (1) के खंड 16 की फर्म में पिछले साल के मुनाफे के अपने हिस्से, यदि कोई हो, से अधिक है, या कहा के किसी भी हिस्से के लाभ के लिए किसी भी साथी टाइल के रूप में उक्त खंड के अधीन उसे apportionable नहीं है जो नुकसान (ख), और किसी भी व्यवसाय, पेशे या व्यवसाय पर ले जाने के लिए किसी भी व्यक्ति अन्यथा विरासत द्वारा की तुलना में किसी अन्य व्यक्ति द्वारा इस तरह की क्षमता में सफल रहा है, जहां इस खंड में कुछ भी नहीं समझा जाएगा यह उसकी आमदनी, मुनाफा या लाभ के खिलाफ बंद सेट है करने के लिए नुकसान उठाने व्यक्ति के अलावा अन्य किसी भी व्यक्ति समर्थ बनाना;]

19 [(च) वर्ष 1940, 1941, 1942, 1943 और 1944 एक, दो, तीन, चार के लिए आगे किया जाएगा के मार्च के 31 वें दिन समाप्त होने वाले साल के लिए मूल्यांकन के लिए पिछले वर्षों में उत्पन्न होने वाले नुकसान और पांच क्रमशः साल, और साल 1945, 1946, 1947, 1948 और 1949 में छह साल के लिए आगे बढ़ाया जाएगा, और इस तरह के नुकसान की मार्च के 31 वें दिन समाप्त होने वाले साल के लिए मूल्यांकन के लिए पिछले वर्षों में उत्पन्न होने वाली एक हानि होगी केवल एक ही व्यापार, व्यवसाय या पेशे से निर्धारित के किसी भी अगर लाभ और लाभ, के खिलाफ बंद सेट.]

20 निरंतर हानि सिर "पूंजीगत लाभ" के अंतर्गत आने वाले एक नुकसान है जहां उप - धारा में किसी बात के होते हुए भी [(2) (1)], इस तरह के नुकसान है कि सिर के नीचे गिरने कोई लाभ और लाभ के खिलाफ छोड़कर बंद सेट नहीं की जाएगी.

(2 बी) एक निर्धारित उप - धारा (2) में निर्दिष्ट है और नुकसान पूर्ण कि उपधारा के प्रावधानों के अनुसार बंद सेट नहीं किया जा सकता है इस तरह के रूप में एक नुकसान को बनाए कहाँ है, तो बंद सेट नहीं भाग को आगे ले जाया जाएगा अगले वर्ष और उस वर्ष के लिए पूंजीगत लाभ के खिलाफ बंद सेट, और यह बहुत दूर स्थापित नहीं किया जा सकता है, तो राशि उसके ताकि इतने पर अगले वर्ष के लिए आगे बढ़ाया और किया जाएगा बंद सेट नहीं, 21 [हालांकि ऐसी कोई हानि होगी आठ से अधिक वर्षों के लिए आगे बढ़ाया]:

22 [जहां किसी भी पिछले एक साल में, एक कंपनी होने के नाते नहीं, एक निर्धारित द्वारा निरंतर हानि पांच हजार रूप से अधिक नहीं है, बशर्ते कि इसे आगे बढ़ाया नहीं किया जाएगा.]

(3), किसी भी निर्धारित की कुल आय के आकलन के पाठ्यक्रम में, यह लाभ या लाभ का नुकसान वह इस धारा के प्रावधानों के तहत निर्धारित किया है करने के हकदार है जो जगह, आय ले लिया है कि स्थापित है कर अधिकारी इस खंड के प्रयोजनों के लिए उसके द्वारा अभिकलन के रूप में नुकसान की राशि लिखित आदेश द्वारा निर्धारित को सूचित करेगा.

मार्जिन ट्रेडिंग

विदेशी मुद्रा बाजार सबसे बड़ा विकासीकृत बाजार जहां अरबों डॉलर के लिए दैनिक लेनदेन की मात्रा बराबर होती है। इंटरबैंक बाजार में लेन-देन की न्यूनतम मात्रा बहुत अधिक है और विश्वासपूर्वक छोटे का मतलब है मालिक निजी निवेशकों के लिए पहुँच योग्य नहीं है। व्यक्तिगत निवेशकों के व्यापार मार्जिन के कारण विभिन्न मुद्रा जोड़े के साथ ऑनलाइन लेनदेन करने के लिए एक मौका पास है।

मार्जिन ट्रेडिंग क्या है

तो क्या मार्जिन ट्रेडिंग है? यह निवेशक के फंड के स्तर जो की मात्रा से अधिक है बस लेन देन, है। प्रक्रिया निम्नलिखित है: ग्राहक धन \$100 केवल, उदाहरण के लिए किया जा सकता है कि निवेश और ऋण (उत्तोलन) ब्रोकरेज कंपनी है जो उसे बड़े खंडों का लेन-देन निष्पादित करने के लिए और उच्च मुनाफा बनाने के लिए सक्षम बनाता है से प्राप्त करता है। एक का लाभ उठाने लेने के बिना व्यापारी या तो अतिरिक्त धन का निवेश या बस छोटी मात्रा के साथ व्यापार करने के लिए होगा।

परिभाषा मार्जिन ट्रेडिंग, काफी सरल है। शब्द "मार्जिन" आम तौर पर निश्चित मात्रा के पदों को खोलने के लिए ग्राहक की जमा से प्रतिज्ञा है कि दलाल अस्थायी रूप से धारण करने के लिए संदर्भित किया जाता है। मार्जिन जमा है कि क्रेडिट (उत्तोलन) की एक निश्चित राशि प्राप्त करने के लिए एक आवश्यक पूर्व शर्त है कभी कभी कहा जाता है। मार्जिन पर ट्रेडिंग खोलने और एक व्यापार की स्थिति बंद दो विपरीत लेन-देन – के लगातार प्रदर्शन का अर्था विदेशी मुद्रा बाजार व्यापारियों रहे हैं वास्तव में खरीद नहीं मुद्राओं, वे सिर्फ वे कयासबाजी कर रहे हैं जिस पर दर में अंतर, रुचि रखते हैं और या तो एक लाभ या नुकसान में यह परिणाम।

मार्जिन ट्रेडिंग उदाहरण

एक बेहतर समझने के लिए हमें एक उदाहरण लाने कैसे सभी यह लेता दो जगह.

हमें लगता है कि आप 10.000 वॉल्यूम के साथ EURUSD मुद्रा जोड़ी के साथ एक स्थिति खोलने का फैसला किया है। बाजार में मौजूदा कीमत 1.0911/1.0912 है। इसका मतलब यह है कि तुम लगभग \$11.000 ऐसी स्थिति खोलने के लिए है करने के लिए की जरूरत है। मार्जिन ट्रेडिंग के कारण तुम सिर्फ \$200 की राजधानी है, 1: 100 उत्तोलन विदेशी मुद्रा ले और खोल सकते हैं क्योंकि आप इस मामले में अपने ट्रेडिंग खाते पर \$20,000 संतुलन की कुल होगा इस स्थिति। मार्जिन ट्रेडिंग की अनुमति देता है अपनी दिशा की परवाह किए बिना बाजार पर अटकलें के बाद से आप स्थिति दोनों लंबी और छोटी, खोल सकते हैं।

उदाहरण ऊपर लाया से यह कैसे व्यापार मार्जिन ट्रेडिंग की प्रमुख विशेषता है जो में विदेशी मुद्रा का लाभ उठाने के कारण हर किसी के लिए आसान है और उपलब्ध हो जाता है स्पष्ट हो जाता है। का लाभ उठाने के दलाल के क्रेडिट का आकार करने के लिए ग्राहक की धन के अनुपात के रूप में परिभाषित किया गया है। यह चालाकी का उपयोग करके यह सकारात्मक व्यापार परिणाम पर, और प्रतिकूल प्रभावित कर सकते हैं। यह कभी के बाद से बाजार एक अलग दिशा में चला जाता है के मामले में यह एक क्षण में पूरे धन खोने में परिणाम हो सकता है एक एकल खाता खोलने में पूरे संतुलन का उपयोग करने के लिए अनुशंसा की जाती है।

शेयर क्या है और शेयर बाजार क्या है के शब्दों के प्रयोग से Google पर शेयर व शेयर बाजार के बारे में जानना चाहते हैं और हम भारतीय करोड़पति बनने का सपना देखते हैं ! यह तो जानते हैं कमाने के बहुत सारे तरीके हैं उनमें से शेयर भी एक बहुत अच्छा विकल्प हो सकता है ! आपको सबसे पहले शेयर क्या होता है यह बताऊंगा उसके बाद शेयर बाजार क्या होता है !

शेयर क्या है, आसान शब्दों में कह दूँ कि कंपनी में हिस्सेदारी खरीदने जैसा है ! शेयर अंग्रेजी का शब्द है जिसका मतलब हिस्सा होता है और इसे कुछ लोग स्टॉक भी कहते हैं ! हर कंपनी को शुरू करने के लिए बड़ी धन की आवश्यकता होती है ! उसके लिए कंपनी बैंकों से कर्ज नहीं लेकर उसकी जगह मार्केट में शेयर जारी करता है ! अगर किसी कंपनी ने अपने 100 शेयरों को मार्केट में जारी करता है और आप उनमें से 10 शेयरों को खरीद लेते हैं ! इसका सीधा मतलब यह हुआ कि कंपनी का 10% हिस्सेदारी आपके पास आ गया ! कंपनी द्वारा कमाया गया कुल मुनाफे और घाटे में आपकी 10% का हिस्सेदारी रहेगा !

अगर कंपनी ₹100 कमाता है तो उसमें से आप का हिस्सा ₹10 का होगा और इस तरह से आप के शेयर का दाम ₹10 बढ़ जाएगा ! अगर कंपनी को ₹100 का घाटा होता है तो कंपनी आपके शेयर का दाम ₹10 कम कर देगा !

शेयर बाजार कोटेशन क्या होते हैं

शेयर बाजार कोटेशन क्या होते हैं, बताने से पहले मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि बाजार क्या होता है ! हम आम भाषा में यह कर सकते हैं कि बाजार वह स्थान है जहां पर निर्माता अपने सामान को ग्राहकों को बेच देता है ! शेयर बाजार भी उसी तरह का एक बाजार है जहां पर कंपनियां अपनी शेयरों को बेचता है ! जहां पर ग्राहक या निवेशक अपनी सुविधा अनुसार शेयरों की खरीद और बिक्री कर सकते हैं उसे शेयर बाजार कहते हैं !

शेयर बाजार कैसे काम करता है ?

शेयर बाजार को व्यवस्थित रखने के लिए भारत में BSE यानी मुंबई स्टॉक एक्सचेंज और NSE यानी नेशनल स्टॉक एक्सचेंज है ! भारत के BSE और NSE रजिस्टर कंपनियाँ निवेशकों के लिए शेयर मार्केट में उतार सकता है ! कोई भी निवेशक जिसके पास डीमैट अकाउंट को वह मुंबई स्टॉक एक्सचेंज या नेशनल स्टॉक एक्सचेंज या दोनों से शेयरों की खरीद फरोख्त ऑनलाइन कर सकता है!

इकाई – IV: भारतीय शेयर बाजार (Indian Stock Exchanges)

शेयर बाजार क्या है और शेयर बाजार कैसे काम करता है, शेयर कैसे खरीदें हिंदी में विस्तार से जानिए आसान भाषा में शेयर मार्किट गाईड. जब भी हम किसी बाजार की कल्पना करते हैं तो हमारे दिमाग में किसी ऐसी जगह की इमेज बनती है जहाँ बहुत-सी दुकानें होंगी या कोई मॉल जहां जाकर आप खरीदारी कर सकते हैं मगर शेयर बाजार ऐसा बाजार नहीं है. शेयर बाजार में खरीदने और बेचने का काम पूरी तरह से कंप्यूटर द्वारा ऑटोमेटिक तरीके से होता है. कोई भी शेयर खरीदने या बेचने वाला अपने ब्रोकर के द्वारा एक्सचेंज पर अपना आर्डर देता है और पलक झपकते ही पेंडिंग आर्डरों के अनुसार ऑटोमेटिकली सौदे का मिलान हो जाता है.

शेयर बाजार में काम के घंटों में ब्रोकर अपने ग्राहकों के लिए उनके द्वारा दिए गए आर्डर टर्मिनल में डाल देते हैं. इसके बदले में ब्रोकर को ब्रोकरेज या दलाली मिलती है. हम कह सकते हैं कि मुख्यतः शेयर बाजार की तीन कड़ियाँ हैं स्टॉक एक्सचेंज, ब्रोकर और निवेशक. ब्रोकर स्टॉक एक्सचेंज के सदस्य होते हैं और केवल वे ही उस स्टॉक एक्सचेंज में ट्रेडिंग कर सकते हैं. ग्राहक सीधे जाकर शेयर खरीद या बेच नहीं सकते उन्हें केवल ब्रोकर के जरिए ही जाना पड़ता है.

देश में मुख्यतः BSE यानी मुंबई स्टॉक एक्सचेंज और NSE यानी नेशनल स्टॉक एक्सचेंज हैं जिन पर शेयरों का कारोबार होता है. BSE और NSE दुनिया के बड़े स्टॉक एक्सचेंज हैं. अधिकतर कंपनियां जिनके शेयर मार्केट में ट्रेड होते हैं इन दोनों स्टॉक एक्सचेंज पर लिस्टेड हैं मगर यह भी हो सकता है की कोई कंपनी इन दोनों में से किसी एक ही एक्सचेंज पर लिस्टेड हों.

देश के मुख्यता सभी बड़े बैंक या उनकी सबसिडी कंपनियां और अन्य बड़ी वित्तीय कंपनियां इन एक्सचेंजों में ब्रोकर के तौर पर काम करती हैं. ग्राहक इन ब्रोकर कंपनियों के पास जाकर अपने डीमैट अकाउंट की जानकारी देकर अपना खाता ब्रोकर के पास खुलवा सकता है. इस प्रकार ग्राहक का डीमैट अकाउंट ब्रोकर के अकाउंट से जुड़ जाता है और खरीदी अथवा बेची गई शेयरस ग्राहक के डीमैट अकाउंट से ट्रांसफर हो जाती हैं. इसी प्रकार ग्राहक अपना बैंक खाता भी ब्रोकर के खाते के साथ जोड़ सकता है जिससे खरीदे अथवा बेचे गए शेयरों की धनराशि ग्राहक के खाते में ट्रांसफर की जाती है. ग्राहक द्वारा खरीदे गए शेयर इलेक्ट्रॉनिक रूप में उसके डीमैट

एकाउंट में पड़े रहते हैं जब भी कोई कंपनी डिविडेंड की घोषणा करती है तो डीमैट अकाउंट से जुड़े बैंक खाते में डिविडेंड की राशि पहुंच जाती है। इसी प्रकार यदि कंपनी बोनस शेयरों की घोषणा करती है तो बोनस शेयर भी शेयरहोल्डर के डीमैट अकाउंट में पहुंच जाते हैं। ग्राहक जब शेयर बेचता है तो उसी डीमैट अकाउंट से वह शेयर ट्रांसफर हो जाता है।

शेयरों में कारोबार करने के लिए एक निवेशक के पास डीमैट अकाउंट, ब्रोकर के पास ट्रेडिंग अकाउंट और उससे जुड़ा एक बैंक खाता होना जरूरी है। कई बैंक इसके लिए श्रुति इन वन खाता खोलने की सुविधा भी देते हैं। अधिकतर ब्रोकर हाउस आपको ऑनलाइन शेयर ट्रेडिंग की सुविधा भी प्रदान करते हैं इसके अलावा आप फोन करके भी अपने ऑर्डर दे सकते हैं।

NSE: सुविधाएँ, एनएसई का कॉर्पोरेट ढांचा, एनएसई का शेयर सूचकांक

(NSE: Features, Corporate Structure of NSE, Stock Indices of NSE)

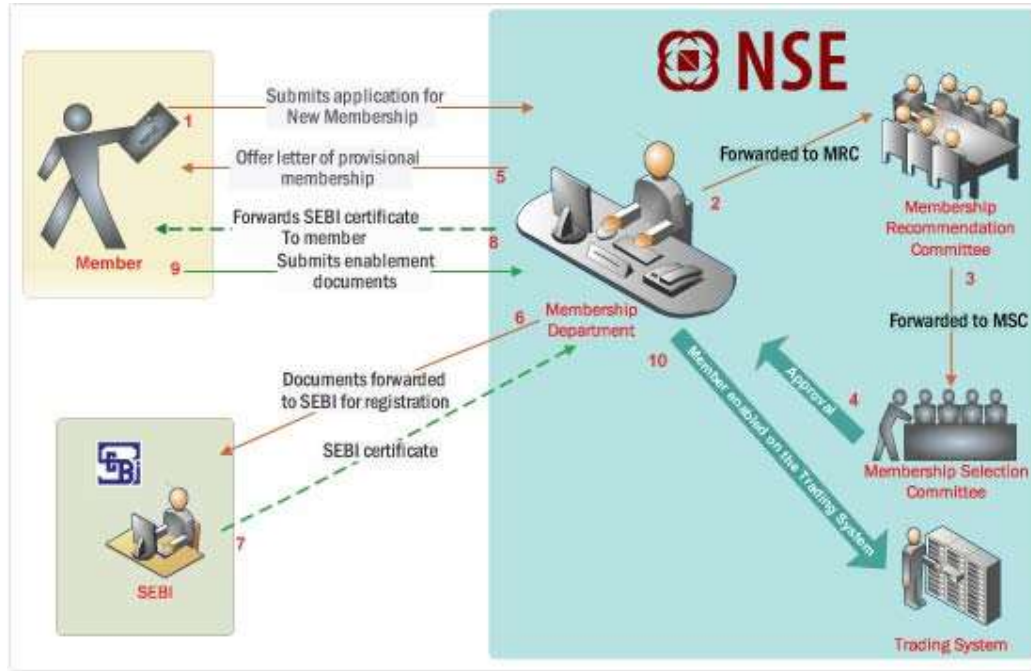
स्टॉक मार्केट का परिचय (Introduction to Stock Markets)

जिस तरह से हम अपने दैनिक ज़रूरतों के लिए खरीदारी करने के लिए पड़ोस किराना स्टोर या सुपर मार्केट में जाते हैं, उसी तरह हम शेयर बाजार में इक्विटी निवेश के लिए दुकान (ट्रांसैक्चर के रूप में पढ़ते हैं) पर जाते हैं। शेयर बाजार है जहां सभी शेयरों में लेनदेन करना चाहते हैं सरल शब्दों में लेनदेन का मतलब है खरीद और बिक्री। सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए, आप शेयर बाजारों के माध्यम से लेनदेन किए बिना इंफोसिस जैसी किसी सार्वजनिक कंपनी के शेयर खरीद / बेच नहीं सकते। शेयर बाजार का मुख्य उद्देश्य आपको अपने लेनदेन को सुविधाजनक बनाने में मदद करना है। इसलिए यदि आप शेयर के खरीदार हैं, शेयर बाजार आपको विक्रेता से मिलने में मदद करता है और इसके विपरीत। अब एक सुपर मार्केट के विपरीत, शेयर बाजार एक ईंट और मोटार फॉर्म में मौजूद नहीं है। यह इलेक्ट्रॉनिक रूप में मौजूद है आप अपने कंप्यूटर से इलेक्ट्रॉनिक रूप से बाजार तक पहुंच सकते हैं और अपने लेनदेन (शेयरों की खिड़की के अलावा, यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि आप स्टॉक ब्रोकर नामक पंजीकृत मध्यस्थ के माध्यम से शेयर बाजार तक पहुंच सकते हैं। हम बाद के बिंदु पर स्टॉक ब्रोकरों के बारे में अधिक चर्चा करेंगे। भारत में दो मुख्य स्टॉक एक्सचेंज हैं जो स्टॉक मार्केट बनाते हैं। वे बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) हैं। इन दोनों एक्सचेंजों के अलावा बेंगलूर स्टॉक एक्सचेंज, मद्रास स्टॉक एक्सचेंज जैसे अन्य क्षेत्रीय स्टॉक एक्सचेंजों का एक हिस्सा है, जो अधिक या कम चरणबद्ध हो रहे हैं और वास्तव में अब कोई अर्थपूर्ण भूमिका नहीं निभाते हैं।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई)

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज भारत का सबसे बड़ा और तकनीकी रूप से अग्रणी स्टॉक एक्सचेंज है। यह मुंबई में स्थित है। इसकी स्थापना 1992 में हुई थी। कारोबार के लिहाज से यह विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टॉक एक्सचेंज है। इसके वीसैट (VSAT) टर्मिनल भारत के 320 शहरों तक फैले हुए हैं। एनएसई की इंडेक्स- निफ्टी 50 का उपयोग भारतीय पूंजी बाजारों के बैरोमीटर के रूप में भारत और दुनिया भर के निवेशकों द्वारा बड़े पैमाने पर किया जाता है।

एनएसई का कॉर्पोरेट ढांचा



एनएसई का शेयर सूचकांक

निफ्टी नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक है। निफ्टी क्या है और इसे कैसे गिनते हैं इस बारे में हिंदी में लेख। NIFTY in Hindi, निफ्टी क्या है और इसे कैसे गिनते हैं? निफ्टी नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध 50 प्रमुख शेयरों का सूचकांक है। निफ्टी दो शब्दों को मिला कर बना है NATIONAL और FIFTY। इससे यह प्रतीत होता है कि निफ्टी शब्द नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर सूचीबद्ध सर्वोच्च पचास शेयरों पर आधारित है। निफ्टी की चाल से आपको बाजार की चाल का हाल मालूम हो जाता है। यदि निफ्टी में तेजी है तो आप मान सकते हैं कि बाजार में भी तेजी है। यदि निफ्टी में गिरावट है तो आप मान सकते हैं कि बाजार में भी गिरावट है। हालांकि निफ्टी केवल पचास शेयरों की कीमत के आधार पर ही गिना जाता है फिर भी निफ्टी की दिशा बाजार की दिशा का भी संकेत देती है।

शेयर या स्टॉक एक्सचेंज

किसी कंपनी के एक निश्चित हिस्से पर मालिकाना हक का प्रमाणित दस्तावेज शेयर कहलाता है। शेयर बाजार (स्टॉक एक्सचेंज) वह जगह होती है जहां सूचीबद्ध कंपनियों के शेयरों की खरीद-फरोख्त होती है। इसे सेकेंडरी मार्केट भी कहा जाता है क्योंकि यहां कंपनी और ग्राहकों के बजाये निवेशकों के बीच ही कारोबार होता है। कोई भी कंपनी इसमें अपनी सीधी भागीदारी नहीं निभाती। कंपनी पूंजी जुटाने के लिए आईपीओ के जरिये अपने शेयर को प्राइमरी मार्केट में उतारती है। प्राइमरी मार्केट में आने के बाद ही ये शेयर स्टॉक एक्सचेंजों में निवेशकों के आपसी कारोबार के लिए उपलब्ध हो पाते हैं। स्टॉक एक्सचेंज में शेयरों के कारोबार से ही पता चलता है कि किसी कंपनी के प्रदर्शन और संभावना को बाजार किस तरह आंक रहा है। देश में अभी शेयर बाजारों पर नियंत्रण रखने वाली संस्था भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी) से मान्यता प्राप्त कुल 23 शेयर बाजार हैं। लेकिन इनमें सबसे महत्वपूर्ण बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज हैं। देश का 90 प्रतिशत से ज्यादा शेयर कारोबार इन दो बाजारों में ही हो रहा है। देश के शेयर बाजारों में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण मूल्य दो लाख करोड़ डॉलर से भी ऊपर पहुंच चुका है। भारत में शेयर बाजार में निवेश अभी तक बहुत लोकप्रिय नहीं है। एक अनुमान के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था का केवल चार फीसदी हिस्सा ही शेयर कारोबार में शामिल है। कई विकसित देशों में आधी से ज्यादा अर्थव्यवस्था शेयर बाजार का हिस्सा होती है। वहीं ऑनलाइन

शेयर कारोबार के लिए जरूरी डीमैट अकाउंट अभी भारत में केवल 2.7 करोड़ हैं। पहले देश के शेयर बाजारों में सिर्फ भारतीय ही कारोबार कर सकते थे, लेकिन 2012 से विदेशी नागरिकों को भी इसकी इजाजत दे दी गई। इससे अब दुनिया के किसी भी हिस्से से इन स्टॉक एक्सचेंजों में ऑनलाइन कारोबार किया जा सकता है।

नेशनल स्टॉक एक्सचेंज और निफ्टी

नब्बे के आर्थिक संकट के बाद देश के शेयर बाजार में सुधार के लिए मनोहर फेरवानी समिति का गठन किया गया था। सितंबर 1991 में तत्कालीन नरसिम्हा राव सरकार को सौंपी अपनी रिपोर्ट में समिति ने एनएसई के गठन की सिफारिश की। समिति ने शेयर बाजार को ज्यादा पारदर्शी, आधुनिक और प्रतिस्पर्द्धी बनाने के लिए भी सुझाव दिए। इसके बाद सरकार ने 1992 में नेशनल स्टॉक एक्सचेंज बनाने का निर्णय लिया। यह देश का पहला इलेक्ट्रॉनिक एक्सचेंज बना, जहां बिना किसी ब्रोकर की सहायता के शेयरों की खरीद-बिक्री करना संभव हो पाया। इसे पूर्णतः स्वचालित और स्क्रीन-बेस्ड इलेक्ट्रॉनिक कारोबार के लिए ही बनाया गया था। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में भी यह सुविधा बाद में आई। आज एनएसई बीएसई से भी बड़ा स्टॉक एक्सचेंज बन चुका है। लेन-देन की संख्या के लिहाज से एनएसई में अब बीएसई की तुलना में करीब पांच गुना ज्यादा कारोबार हो रहा है। एनएसई की स्थापना के बाद देश के दूसरे स्टॉक एक्सचेंज असरहीन होते चले गए। कई तो एनएसई का ही हिस्सा बन गए। सरकार ने एनएसई को अप्रैल 1993 में प्रतिभूति अनुबंध अधिनियम, 1956 के तहत मान्यता दी थी। वैसे एनएसई के लगभग आधे शेयर एलआईसी, एसबीआई, आईएफसीआई, आईडीबीआई जैसी सरकारी कंपनियों के पास हैं। लेकिन बीएसई की तरह यह भी एक निजी कंपनी है। एनएसई के सभी 11 सूचकांकों में सबसे महत्वपूर्ण निफ्टी-50 या निफ्टी है। यह अंग्रेजी के दो शब्दों नेशनल और फिफ्टी से मिलकर बना है। इसका अस्तित्व 22 अप्रैल 1996 से है। जैसा की नाम से भी जाहिर है, निफ्टी एनएसई की 50 चुनिंदा कंपनियों (अब 51) का प्रतिनिधित्व करता है। निफ्टी में वित्तीय सेवा, एनर्जी, आईटी, ऑटोमोबाइल, उपभोक्ता उत्पाद, फार्मा और निर्माण क्षेत्र की प्रमुख कंपनियों की हिस्सेदारी है।

सेंसेक्स और निफ्टी का निर्धारण

सेंसेक्स और निफ्टी दोनों ही सूचकांकों में होने वाले परिवर्तन को मापने के लिए हमारे देश में फ्री फ्लोट मार्केट कैपिटलाइजेशन (एफएफएमसी) नाम का तरीका अपनाया जाता है। इसके तहत सभी कंपनियों के बाजार में उपलब्ध शेयरों (कुल शेयरों के आधार पर नहीं) की कुल कीमत के आधार पर गणना की जाती है। हालांकि 2003 तक सेंसेक्स का निर्धारण इसकी 30 कंपनियों के सभी शेयरों के कुल बाजार मूल्य के आधार पर किया जाता था। इस पद्धति से सूचकांक में परिवर्तन को हम एक उदाहरण से समझते हैं। माना कि किसी कंपनी के कुल एक लाख शेयर हैं, जिनमें 30 हजार उसके मालिक और 70 हजार आम लोगों के पास हैं। अब यह मानते हैं कि एक जुलाई 2017 को इस कंपनी के एक शेयर का मूल्य 1,000 रुपए है। एफएफएमसी पद्धति में आम लोगों वाले 70 हजार शेयरों का ही ध्यान रखा जाता है। यानी इस पद्धति के अनुसार उस कंपनी के बाजार में उपलब्ध कुल शेयरों की कीमत सात करोड़ रुपए होगी। यही तरीका सेंसेक्स की सभी 30 और निफ्टी के 50 प्रतिनिधि कंपनियों के शेयरों पर लागू किया जाता है। इस तरह एक जुलाई, 2017 को सूचकांक के सभी प्रतिनिधि कंपनियों के बाजार में उपलब्ध शेयरों का कुल मूल्य प्राप्त हो जाएगा।

माना कि यह योग 320 करोड़ रुपए है। इसके बाद पता करना होगा कि एक अप्रैल, 1979 (सेंसेक्स की आधार तिथि) या 3 नवंबर, 1995 (निफ्टी की आधार तिथि) के दिन ऐसी सभी कंपनियों के बाजार में उपलब्ध शेयरों का बाजार मूल्य कितना था। माना कि वह राशि उस समय एक करोड़ रुपए थी। तो आज का सूचकांक प्राप्त करने के लिए हमें 320 करोड़ (नया मूल्य) में एक करोड़ (पुराना मूल्य) से भाग देकर प्राप्त हुई राशि में 100 या 1,000 (सूचकांक का आधार मूल्य) से गुणा करना होगा। यही यानी 32,000 आज की तारीख में बाजार के सूचकांक का स्तर कहा जाएगा।

BSE तथा NSE भारत के प्रमुख शेयर बाजार हैं जहां शेयरों की ट्रेडिंग होती है.सेंसेक्स तथा निफ्टी इनके प्रमुख सूचकांक हैं.

सेंसेक्स की ही तरह निफ्टी नेशनल स्टॉक एक्सचेंज पर मुक्त फ्लोट बाजार भारित शेयर बाजार सूचकांक (free-float market-weighted stock market index) है. किसी भी कंपनी के बाजार पूंजीकरण Market Capitalization का वह हिस्सा जो बिकने के लिए बाजार में उपलब्ध हो सकता है वह फ्री फ्लोट बाजार पूंजी होगी और उसी के आधार पर निफ्टी की भी गणना की जाती है. पचास शेयरों के इसी इंडेक्स को निफ्टी कहते हैं.

मुक्त फ्लोट बाजार भारित शेयर बाजार सूचकांक (free-float market-weighted stock market index) में इंडेक्स की कैसे गणना की जाती है. निफ्टी का आधार वर्ष 1995 है और आधार अंक 1000 है. इस सूचकांक की गणना 3 नवम्बर 1995 से की जाती है और इस दिन सूचकांक का आधार 1000 माना गया है. आज यदि निफ्टी का मूल्य 8000 के करीब है, तो इसका मतलब यह है कि निफ्टी के शेयरों की कीमत 1995 के मुकाबले अब तक 800% तक बढ़ चुकी है.

एनएसई में ट्रेडिंग: थोक ऋण बाजार (डब्ल्यूडीएम), पब्लिक इश्यू ऑफरिंग (पीआईओ), समयबद्ध पीआईओ प्रणाली, स्क्रीन आधारित ट्रेडिंग सिस्टम (SBTS) (Trading at NSE: Wholesale Debt Market (WDM), Public Issue Offerings (PIO), Time Bound PIO System, Screen Based Trading System (SBTS)

एनएसई ने सिडबी के साथ मिलकर छोटी कंपनियों के लिए एक ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म TReDS लॉन्च किया है इसमें ट्रेड रिसीट की ट्रेडिंग होगी यानी छोटी कंपनियों को मिलने वाले भुगतान की रसीद ट्रेड की जा सकेगी, इससे छोटी कंपनियों के लिए पूंजी की दिक्कत कम होगी। TReDS प्लेटफॉर्म एमएसएमई के लिए है। देश की जीडीपी में एमएसएमई की हिस्सेदारी 30 फीसदी है। इससे कंपनियों की वर्किंग कैपिटल की किल्लत कम होगी। कंपनियों की क्रेडिट रेटिंग के आधार पर फाइनेंसिंग की जाएगी। बड़ी कंपनियों के बिल की एवज में जल्द पैसा मिलेगा। इससे कंपनियों की फाइनेंस कॉस्ट भी कम होगी।

थोक ऋण बाजार (डब्ल्यूडीएम) ऋण बाजार वह बाजार है जहां निश्चित आय की विभिन्न प्रकार और गुणों वाली प्रतिभूतियां जारी की जाती हैं और खरीदी व बेची जाती है। अतः ऋण बाजार निश्चित आय वाली प्रतिभूतियों का वह बाजार है जिसमें केन्द्र व राज्य सरकार, नगर निगम अन्य सरकारी निकायों व वाणिज्यिक इकाइयों, जैसे वित्तीय संस्थाओं, बैंकों, सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों, पब्लिक लिमिटेड कंपनियों और संरक्षित वित्तीय प्रपत्रों की खरीद बिक्री की जाती है।

थोक ऋण बाजार- इसमें निवेशक मुख्य बैंक, भारतीय रिजर्व बैंक, प्राथमिक व्यापारी, बीमा कंपनियां, वित्तीय संस्थाओं, निगमित इकाइयों, एम एफ और एफ आई आई वगैरह के रूप में होते हैं। खुदरा ऋण बाजार में व्यक्तिगत निवेशक, प्रोविडेंट फंड, पेंशन फंड, प्राइवेट प्राइवेट ट्रस्ट, एनबीएफसी और दूसरी वैध इकाइयां होती हैं।

ऋण बाजार की वर्तमान प्रकृति सौदा बाजार की है जहां ज्यादातर सौदे टेलीफोन के द्वारा होते हैं और पुष्टि के लिए उसकी जानकारी एक्सचेंज को दे दी जाती है। अतः इसकी प्रकृति थोक बाजार की है।

निवेशकों में सर्वप्रमुख हैं वाणिज्यिक बैंक और वित्तीय संस्थाएं। पिछले कुछ वर्षों में निवेशक आधार बढ़ा है। इसमें सहकारी बैंक निवेशक संस्थाएं, बड़े कॉर्पोरेट घराने, गैर बैंकिंग वित्तीय कंपनियां, म्यूचुअल फंड और धनकुबेर भी शामिल हुए हैं। एफआईआई को भी अपने फंड का 100 प्रतिशत ऋण बाजार में निवेश की अनुमति प्रदान कर दी गई है। पहले यह सीमा 30 प्रतिशत थी। 1988-1989 में सरकार ने एफ आई आई को ट्रेजरी बिल में भी निवेश की अनुमति दे दी। इसकी वजह भी निवेशक आधार को बढ़ाना था। सरकारी प्रतिभूतियां रिजर्व बैंक द्वारा प्रतिफल या मूल्य आधार पर नीलामी द्वारा जारी की जाती है। नीलामी बहुमूल्यीय या एकल मूल्य वाला होता है।

रिजर्व बैंक ने फुटकर निवेशकों के लिए गैर प्रतिस्पर्धात्मक नीलामी सुविधा की घोषणा की है। इसके तहत घोषित रकम को 5 प्रतिशत हिस्से के लिए गैर प्रतिस्पर्धात्मक नीलामी के तहत बोली लगाई जाएगी।

इसके मुख्यतः दो तरीके हैं:-

पूर्ण खरीद और बिक्री वह सौदा है जिसमें उत्क्रमण की गुंजाइश सौदे निपटाने के समय नहीं रहती है। खरीद या बिक्री स्वतंत्र होता है यह सौदे के समय या बाद में किसी अन्य सौदे के साथ नहीं जुड़ा होता है।

रेडी फॉरवर्ड ट्रेड (इसे सामान्यतः पुनः खरीद करार या रेपो ट्रेड के रूप में जाना जात है) वैसा सौदा है जिसमें उस सौदे के पीछे कालांतर में उत्क्रमण की मंशा होती है, लेकिन उस दर पर जिसमें ब्याज भी शामिल होता है। यह सौदे के दो विपरीत चरणों के समयांतराल पर आधारित होता है। इसलिए उस तरह के सौदे में एक भागीदार प्रतिभूतियां बेचता है और उससे बाद में खरीद का करार करता है यह सौदा रेपो ट्रेड कहलाता है। लेकिन विक्रेता की नजरों से और यही सौदा खरीददार के लिए रिवर्स रेपो ट्रांजेक्शन कहलाता है।

रेपोज इस प्रकार विक्रेता को विशिष्ट रकम उपलब्ध करा तरलता उपलब्ध कराते हैं। यह सौदा रेपो सौदा कहलाता है विक्रेता की दृष्टि से और खरीददार की दृष्टि में यह रिवर्स रेपो सौदा होता है। रेपोज और रिवर्स रेपोज का

इस्तेमाल बाजार में सामान्यतः अल्पावधि तरलता प्रबंधन के लिए किया जाता है। इन्हें उधार तंत्र के समानांतर परिभाषित किया जा सकता है। बैंक या वित्तीय संस्थाएं अक्सर अपने रिजर्व की आवश्यकताओं और तरलता प्रबंधक के लिए रिवर्स रेपो की सहायता लेती हैं। प्रतिफल से आशय मिलने वाली राशि के उस प्रतिशत से है जो स्टॉक पर डिविडेंड (लाभांश) के रूप में मिलता है या फिर बांड या नोट पर। प्रतिफल निवेश के प्रकार और उनके गुणों पर निर्भर करता है।

परिपक्वता पर प्रतिफल (वाईटीएम) ऋण बाजार में प्रतिफल का सर्वाधिक बड़ा मापक है। यह बांड, नोट या निश्चित आय वाली प्रतिभूतियों पर मिलने वाला प्रतिशत होता है, अगर आप उसे परिपक्वता तक अपने पास रखते हैं।

वर्तमान प्रतिफल कूपन को बाजार दर से भाग देकर निकाला जाता है।

अतः वर्तमान प्रतिफल प्रतिभूति का कूपन (%में) प्रतिभूति का अंकित मूल्य (सरकारी प्रतिभूति में 100 रुपये) या प्रतिभूति का बाजार मूल्य

उदाहरण: मान लें कि 10.18% सरकारी प्रतिभूति 2012 का बाजार मूल्य 120 रूपए है। इस पर वर्तमान प्रतिफल $0.1018 \times 100 / 120 = 8.48\%$ है।

सरकारी प्रतिभूतियों का प्रतिफल विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है। यह अर्थव्यवस्था में मुद्रा आपूर्ति, मुद्रास्फीति, भविष्य में ब्याज दर की उम्मीद, सरकारी उधार कार्यक्रम और सरकार की मौद्रिक नीतियों द्वारा प्रभावित होती हैं।

परिपक्वता पर प्रतिफल (वाईटीएम) का आकलन दर, परिपक्वता की समयावधि और बाजार मूल्यों द्वारा होता है। यह बांड पर प्रतिफल का अंतरिम दर है जिसका निर्धारण बांड की आयु के दौरान नगदी आगम के आकलन द्वारा होता है। वाईटी-एम से संबंधित महत्वपूर्ण धारणा यह है कि बांड की आयु के दौरान उस पर मिले कूपन ब्याज को उसी दर पर पुनः निवेश किया जाता है।

वाईटीएम का आकलन मूलतः 'ट्रायल एंड एरर' विधि द्वारा वाईटीएम के लिए सभी संभावित नगद आगम का आकलन कर किया जाता है ताकि नगद आगम की शून्य तक दर पर प्राप्ति हो सके।

बाजार में बाण्ड के मूल्यों का निर्धारण मांग और पूर्ति के द्वारा होता है, जैसा कि अन्य बाजार में होता है। बाण्ड का मूल्य बाजार में अन्य बहुत सारे कारकों पर निर्भर होता है, और नीचे दिये गये निम्नलिखित कारकों में बदलाव के अनुसार चढ़ेगा और उतरेगा।

आर्थिक परिस्थिति

सामान्य मुद्रा बाजार की स्थितियाँ, उसमें राज्य द्वारा अर्थव्यवस्था में मुद्रा पूर्ति भी शामिल है। ब्याज की दर जो कि बाजार में मौजूद है और नये निर्गम की दर आकलित भविष्य ब्याज दर जारीकर्ता की साख गुणवत्ता यहां यद्यपि बाजार में मूल्य निर्धारण के लिए उसके प्रतिफल के आधार पर मापन को मजबूती देने वाला एक सिद्धांत भी है। बांड की कीमत और प्रतिफल प्रतिलोमत: जुड़े होते हैं। यानी अगर कीमत बढ़ेगी तो प्रतिफल घटेगा। इसी तरह कीमत घटने पर प्रतिफल बढ़ेगा।

ब्याज दर के स्तर में होने वाले उतार-चढ़ाव का तुरंत और संभाव्य असर बांड की कीमतों पर पड़ता है। जब बाजार में व्याज दर बढ़ती है, गैर समाशोधित बांडों की कीमतें ऊंचे ब्याज दर वाले नए बांडों के समतुल्य गिरती हैं। कीमत में गिरावट इसलिए होती है कि निम्न कूपन वाले बांड को खरीदने वाले कम होते हैं। कीमत में गिरावट उस हद तक होगी जहां पुराने बांड पर समान प्रतिफल प्राप्त हो सके जोकि नए बांड पर उपलब्ध है।

बाजार में ब्याज दर के गिरने का विपरीत असर होता है। इससे गैर-समाशोधित बांड की कीमतें बढ़ती हैं। उस हद तक बढ़ती हैं जब तक कि पुराने बांड का प्रतिफल गिर कर जारी किए गये नए बांड के ब्याज दर के बराबर न आ जाए। ये उतार-चढ़ाव यह सुनिश्चित करते हैं कि बांड की पूरी जीवन अवधि में उसका मूल्य समान नहीं रहेगा और यह यह बाजार में ब्याज दर, परिपक्वता और कूपन दर वगैरह के आधार पर वास्तविक अंकित मूल्य से ज्यादा या कम हो सकता है।

बाजार संरचना और डब्लूसीएस की खरीद-बिक्री

ब्रोकर पीरियड इंस्ट्रूमेंट या बढ़ते ब्याज की अवधारणा से आशय बांड पर एक निश्चित अवधि पर होल्डर (बांड धारक) जो कि उस समय बांड का मालिकाना हक भी रखता है, को मिलने वाले ब्याज से है। इस प्रकार अगर कोई निवेशक ऐसा बांड बेचता है जिस पर हर 6 महीने पर अदायगी होती है, लेकिन ब्याज अदायगी की तिथि के तीन महीने बाद। इस स्थिति में विक्रेता को उन तीन महीनों का ब्याज नहीं मिलेगा। वह ब्याज खरीदार को मिलेगा यद्यपि उससे तीन पहले ही बांड खरीदा था, वजह यह है कि ब्याज की अदायगी के वक्त वह मालिकाना हक रखता है। इसलिए बांड के वैसे सौदों के दौरान जो ब्याज अदायगी की दो तिथियों के बीच होता है, क्रेता-विक्रेता को उस अवधि का ब्याज अदा करेगा। इसकी गणना ब्याज अदायगी की तिथि से सौदे की तिथि के अनुसार होता है। इस प्रकार जब ब्याज की गणना होगी तो उसमें ब्याज अदायगी की तिथि तो शामिल होगी, लेकिन सौदे की तिथि नहीं शामिल होगी।

सरकारी प्रतिभूतियों में लेन-देन के मामले में बढ़ते ब्याज की गणना के लिए प्रतिदिन गणना का तरीका 30/360 है। उदाहरणतः प्रत्येक महीना में 30 दिन लिया जाता है, इस बात से फर्क नहीं पड़ता है कि महीने में वास्तविक कितने दिन होते हैं। इसलिए महीना जो भी हो चाहे फरवरी, मार्च, जनवरी, मई जुलाई, अगस्त, अक्टूबर और दिसम्बर, हर महीना 30 दिन का ही लिया जाता है।

सरकारी प्रतिभूतियों का लेन देन स्पष्ट कीमत पर किया जाता है, लेकिन अस्पष्ट कीमत पर निपटारा होता है। (लेन-देन कीमत + बढ़ते ब्याज) ऐसा तब होता है, जब कूपन पेमेंट पर कीमत में कोई छूट नहीं दी जाती है। जैसा कि दूसरे गैर सरकारी ऋण प्रपत्रों के मामले में होता है।

उत्तर- लेन-देन में प्रतिभूतियों का संचयी अंकित मूल्य लेन देन का अंकित मूल्य है और यह समान्यतः प्रत्येक लेन-देन का पहचाने जाने योग्य विशेषता है।

मान लें की 5,000 सरकारी प्रतिभूतिया जिनका कि पर प्रतिभूति कीमत 100 रुपये है, और कुल कीमत 5,00,000 रुपये है, का लेन देन होता है।

सरकारी प्रतिभूतियों के लेन देन का संचयी कीमत कारोबारी मूल्य है। (उदाहरणतः प्रतिभूतियों में कीमत से गुणा करना।)

मान लें उपर दिये गये 5000 सरकारी प्रतिभूतियों के लेन-देन पर प्रतिभूति 102 रुपये किया गया है, ताकि कारोबारी 5,10,000 रुपये हो।

लेन-देन कीमत और बढ़ते ब्याज का योग निपटारा कीमत होगा।

बाण्ड इकाइयों के बढ़ते ब्याज का आकलन इस तरह होता है।

= बाण्ड का कूपन X सरकारी प्रतिभूतियों का अंकित मूल्य (100) X (ब्याज भुगतान की तारीख से निपटारे की तारीख से निपटारे की तारीख तक के दिनों की संख्या)/36

लेन देन की ब्याज भुगतान की तारीख और निपटारे की तारीख में बीच के दिनों की संख्या के आंकलन में सिर्फ उन दिनों में दो दिनों को समाहित किया जाता है।

सरकारी प्रतिभूतियों निम्नलिखित रूपों में रखी जा सकती है:

भौतिक प्रतिभूतियों (जो कि ज्यादातर चलन से बाहर हो चुका है और ज्यादा उपयोग में नहीं आता है।)

भारतीय रिजर्व बैंक में जन ऋण कार्यालय के साथ एस जी एल (सबसिडियरी जेनरल लेजर) खाता। एस जी एल खाता जबकि कुछ अस्ती जैसे बैंक और संस्था के लिए प्रतिबन्धित है।

वैसे बैंक और पी डी एस की अंगीकृत एस जी एल खाता जो निवेशकों की तरफ से सरकारी प्रतिभूतियों को अपने भारतीय रिजर्व बैंक की एम जी एल-II खाता में रखते है, वो सिर्फ ग्राहकों के लिए होता है।

वैसे ही डीमैट खाता का उपयोग इक्यूटिस के लिए जमाकर्ता के द्वारा होता है। एन एस डी एल और सी डी एस एल उनको अपने भारतीय रिजर्व बैंक की एस जी एल-II खाता में रखते है, जो सिर्फ ग्राहकों के लिए होता है।

लेन-देन के दो निम्नलिखित प्रकार है, जो भारतीय बाजार में लागू होते हैं :

बैंक और वैसा दूसरा थोक बाजार का भागीदार जिसका खाता पूरे थोक बाजार के आकार के लगभग 25% हो के बीच प्रत्यक्ष लेन-देन : यहाँ बैंक और संस्था खुद के बीच प्रत्यक्षत : लेन-देन करती है चाहे टेलीफोन के द्वारा या भारतीय रिजर्व बैंक के एन डी एस सिस्टम के द्वारा।

बाजार में होने वाले लगभग 70-75% सौदे ब्रोकरों के द्वारा करवाए जाते है। वे ब्रोकर ही बैंक, प्राथमिक व्यापारी और संस्थाओं के साथ सौदा का लेन-देन कर सकते है, जिन्हें भारतीय रिजर्व बैंक के मान्य स्टॉक एक्सचेंज की सदस्यता प्राप्त हो।

बी एस ई और दूसरे एक्सचेंज सरकारी प्रतिभूतियों के लिए आर्डर आ स्क्रीन आधारित सौदा सुविधा उपलब्ध कराते हैं। ज्यादातर सौदों के लिए आज के दिन बी एस ई के सिस्टम पर सौदे बाजी ब्रोकरों के कार्यालयों और उनके इलक्ट्रॉनिक प्रणाली से एक्सचेंज को मिलने वाली सूचनाओं द्वारा नियंत्रित है। ये सूचनाएं-निगोशियेटेड डीलस और क्रॉस डीलस से संबंधित होती हैं।

पब्लिक इश्यू ऑफरिंग (पीआईओ)

जब एक कंपनी अपने सामान्य स्टॉक (common stock) या शेयर पहली बार जनता के लिए जारी करती है तो उसे आइपीओ अथवा " सार्वजनिक प्रस्ताव " कहा जाता है यह अधिकतर छोटी, नई कंपनियों द्वारा जारी किए जाते हैं जो अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए पूँजी (capital) चाहती हैं, पर यह बड़ी निजी-स्वामित्व वाली कंपनियों (privately-owned companies) द्वारा भी जारी किए जा सकते हैं जो सार्वजनिक बाजार में कारोबार करना चाहती हैं (publicly traded).

आइपीओ जारी करने वाली कंपनी किसी हामिदार (underwriting) कंपनी से मदद ले सकती है जो उसे जो यह निर्धारित करने में मदद करती है की किस प्रकार जमानत (security)(सामान्य या अधिमान्य (preferred)) जारी करनी चाहिये, आइपीओ का सर्वोत्तम मूल्य और उसे बाजार में जारी करने का सही समय क्या है।

आइपीओ एक जोखिम भरा निवेश (investment) हो सकते हैं व्यक्तिगत निवेशकों के लिए, यह भविष्यवाणी करना कठिन है कि शेयर अपने प्रारंभिक दिन के व्यापार और निकट भविष्य में कैसा प्रदर्शन करेंगे क्यूंकि उनके

पास कंपनी का विश्लेषण करने के लिए पर्याप्त आंकड़े नहीं होते हैं साथ ही अधिकतर आईपीओ उन कंपनियों के हैं जो एक अस्थायी विकास के दौर से गुजर रही हैं, इसलिए उनके भविष्यगत मूल्य के सन्दर्भ में अनिश्चितता बनी रहती है

सूचीकरण करने की वजह

जब एक कंपनी अपने शेयर को public exchange (public exchange), पर सूचीबद्ध करती है तब लगभग हमेशा ही वह अतिरिक्त नए शेयर निर्गम करना चाहती है ताकि वह और ज़्यादा पूँजी एकत्रित कर सके निवेशकों को नए जारी किए शेयर से जो पूँजी एकत्रित होती है वह सीधे कंपनी को जाती है (यह बाज़ार में शेयर के बाद के कारोबार के विपरीत होता है जब पूँजी निवेशकों के बीच बांटी जाती है). आईपीओ कंपनी को एक विस्तृत शेयर बाज़ार निवेशकों के समूह की मदद से भविष्य के विकास के लिए बड़ी मात्रा में पूँजी उपलब्ध करता है। कंपनी को पूँजी वापस नहीं करनी होती है पर नए शेयरधारक कंपनी को भविष्य में होने वाले लाभ पर और कम्पनी के विघटन की दशा में पूँजी के बंटवारे का अधिकार होता है

मौजूदा शेयरधारकों (shareholder) का कंपनी के शेयरों का अनुपात कम हो जायेगा पर उन्हें यह आशा रहती है की उनके द्वारा निवेश की गई पूँजी में बढ़ोतरी ही होगी

इसके अलावा, एक बार एक कंपनी सूचीबद्ध हो जाती है तो वह और इस तरह वह अधिकारिक इश्यू (rights issue) के द्वारा विस्तार के लिए पूँजी बग्यारे ऋण लिए इकट्ठा कर सकती है व्यक्तिगत निवेशकों को ढूँढने और उनसे परक्रामण करने की बजाये बाज़ार से ही नियमित रूप से बड़ी मात्रा में पूँजी एकत्रित कर पाने की सुविधा कई कंपनियों को सूचीबद्ध होने के लिए प्रोत्साहित करती है

प्रक्रिया

आईपीओ में आमतौर पर एक अथवा एक से अधिक निवेश बैंक (investment bank) पैर हामीदार (underwriter) होते हैं शरेस जारी करने वाली कंपनी "जारीकर्ता", किसी प्रमुख हामीदार से अपने शरेस जनता को बेचने के लिए अनुबन्ध करती है वह हामीदार इन शेयरों को बेचने का प्रस्ताव ले कर निवेशकों के पास जाता है

आईपीओ का यह सौदा (आवंटन और मूल्य निर्धारण) कई रूपों में हो सकता है आम उदाहरणों में शामिल हैं:

- डच नीलामी (Dutch auction)
- पक्की प्रतिबद्धता (Firm commitment)
- सर्वश्रेष्ठ प्रयास (Best efforts)
- खरीदा सौदा (Bought deal)
- शेयरों का स्वयं वितरण (Self Distribution of Stock)

आमतौर पर एक बड़े आईपीओ की हामीदारी निवेश बैंकों के किसी संगठन (syndicate) के द्वारा की जाती है, जिसका नेतृत्व एक या अधिक बड़े निवेश बैंक कर रहे होते हैं शेयरों की बिक्री पर हामीदारों को आदत (commission) मिलती है जो बेचे गए शेयरों के मूल्य पर आधारित होती है आमतौर पर, प्रमुख हामीदार यानी वह हामीदार जिन्होंने आईपीओ के सबसे बड़े हिस्से बेचे हैं, सबसे ज्यादा कमीशन पाते हैं - कुछ मामलों में 8 % तक.

बहुराष्ट्रीय आईपीओ में जारीकर्ता कंपनी के घरेलू अवंम अन्य बाजारों के अनुरूप भिन्न- भिन्न कानूनी आवश्यकताओं से निपटने के लिए हामीदारों के तीन संगठन तक हो सकते हैं उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ की एक जारीकर्ता कंपनी का प्रतिनिधित्व उसकी घरेलू बाज़ार, यूरोप, में वहां का प्रमुख हामीदार संगठन कर सकता है। अन्य बाजारों जैसे अमरीका / कनाडा और एशिया के लिए अलग हामीदार संगठन हो सकते हैं आमतौर पर, प्रमुख बाज़ार का प्रमुख हामीदार बैंक अन्य बाजारों में भी कंपनी का प्रमुख हामीदार होता है।

इस तरह की व्यापक कानूनी आवश्यकताओं की वजह से आईपीओ आमतौर पर एक या एक से अधिक कानूनी फर्म (law firm) के साथ काम करते हैं, जैसे की लन्दन की मैजिक सर्कल (Magic Circle) फर्म और न्यूयार्क सिटी की वाइट शू फर्म (white shoe firm)

आमतौर पर, पेशकश में नई पूँजी एकत्रित करने के लिए नए शेयरों का निर्गम एवं मौजूदा शेयरों की अनुषंगी बिक्री शामिल होती है। लेकिन, अधिकतर मौजूदा शेयरों की बिक्री पर कुछ नियामक प्रतिबंध एवं प्रमुख हामिदारों द्वारा लगाये गए प्रतिबन्ध लागू होते हैं

सार्वजनिक पेशकशें मुख्यतः तौर पर संस्थागत निवेशकों द्वारा बसची जाती हैं, लेकिन कुछ शेयरों हामिदारों को भी बिक्री के लिए आवंटित किए जाते हैं। एक सार्वजनिक पेशकश के शेयरों बेचने वाले दलाल को आदत के बजाए बिक्री प्रत्यय से किया जाता है। ग्राहक को सार्वजनिक पेशकश के शेयरों खरीदने पर कोई आदत नहीं देनी होती, बिक्री प्रत्यय खरीद मूल्य में ही शामिल होता है।

जारीकर्ता हामिदारों को कुछ परिस्थितियों में उनकी पेशकश १५% तक बढ़ाने का विकल्प देता है, इसे ग्रीन शू (greenshoe) या अधिक आवंटन विकल्प कहते हैं।

व्यापार चक्र

संयुक्त राज्य अमेरिका में 1990 के दशक के अंत में डॉट कॉम bubble (dot-com bubble) के दौरान कई उद्यम पूँजी (venture capital) द्वारा चालित कंपनियां शुरू हुईं जिन्होंने तेजड़िया बाजार (bull market) में पूनी के लिए आईपीओ पेश किए। आमतौर पर कंपनी के सार्वजनिक होते ही उसके शेर्स का भाव ऊपर चढ़ जाता है अगले संभाव्य माइक्रोसॉफ्ट और नेटस्केप (Netscape) की तलाश में निवेशक आधार स्तर पर ही निवेश करने लगे।

उदार स्टॉक (stock option) से प्रारंभिक संस्थापक रातोंरात करोड़पति (millionaire) बन सकते हैं, कर्मचारी भी काफी पैसे बना सकते हैं अधिकांश आईपीओ नैसडैक (Nasdaq) शेयर बाजार, जो कंप्यूटर और सूचना प्रौद्योगिकी संबंधित कंपनियों को सूचीबद्ध करता है, पर पाये जा सकते हैं लेकिन, अपेक्षाकृत नई और untested फर्मों को (कई दौर के वित्तपोषण के बाद) बड़ी मात्रा में वित्तीय संसाधन उबलबुल होने के बावजूद बड़ी मात्रा में फर्म नगदी संकट में फसने लगीं। संकट विशेषकर उन मामलों में था जहाँ संस्थापक दल ने आईपीओ जारी होते हे athav उसके तुरंत बाद ही अपनी हिस्सेदारी के एक महत्वपूर्ण भाग बेच दिया था (मुदाम्बी और त्रेइचेल, 2005) यह घटना थी संयुक्त राज्य तक सीमित नहीं थी। उदाहरण के लिए, जापान में, इसी तरह की स्थिति प्रस्तुत हुई थी। कुछ कंपनियों इस तरह हो रहा था जैसे आईपीओ जारी करना ही उनका एकमात्र लक्ष्य हो कुछ शेयर बाजार ऐसी ही कंपनियों के लिए स्थापित किए गए थे, जैसे की नैसडैक जापान (Nasdaq Japan)।

शायद गर्म आईपीओ बाजार के इतिहास में सबसे स्पष्ट बुलबुले १९२९ और १९८९ में थे, जब सीमित अवधि निधि के आईपीओ अत्यन्त बड़े प्रीमियम पर बेचे गये अगर हम सीमित अवधि निधियों के बाजार मूल्य की तुलना निधि में शामिल शेयरों के मान से करें तो यह बुलबुले स्पष्ट दिखते हैं जब बाजार मूल्य अन्तर्निहित मान के गुणजों में हो तब बुलबुले बन रहे होते हैं

नीलामी

बिल हम्ब्रेच्ट (Bill Hambrecht) नामक एक उद्यम पूँजीदार ने इस अक्षम प्रक्रिया को कम करने के लिए एक युक्ति निकलने का प्रयास किया है। उसने हामिदारों द्वारा बढ़ावा दिए जा रहे अत्यधिक अवमूल्यन को कम करने के लिए शेयरों को डच नीलामी (Dutch auction) के द्वारा जारी करने का तरीका निकला बहरहाल, हामिदार इस नीति से प्रसन्न नहीं हुए गूगल एक ऐसे स्थापित कंपनी है जिसने सार्वजनिक होने के लिए डच नीलामी के तरीके का उपयोग किया हालांकि वह ऐसा करने वाली पहली कंपनी नहीं थी डच नीलामी तरीका अपनाते के बावजूद गूगल का शेयर मूल्य पहले दिन के कारोबार में ही १७% चढ़ गया आईपीओ के बारे में लोगों की धारणा

विवादास्पद हो सकती है आईपीओ उन लोगों के लिए पूरी तरह से विफल था जो उसे ज्यादा से ज्यादा पूँजी एकत्रित करने का जरिया मान रहे थे आईपीओ उन लोगों के लिए पूरी तरह से सफल थे जो आईपीओ को निवेशकर्ताओं को अवमूल्यन से हुए फायदे से माप रहे थे यह नोट करना महत्वपूर्ण है की एक नीलामी और खुले बाजार में अलग तरह के निवेशक होते हैं-नीलामी में संस्थाएं बोली लगाती हैं और खुले बाजार में व्यक्तिगत निवेशक गूगल एक विशेष मामला हो सकता है पर क्योंकि कई व्यक्तिगत निवेशक हाल में ही जारी आईपीओ को स्टॉक की लम्बी अवधि के मान को ध्यान में रख कर खरीदते हैं, इस वजह से वह आईपीओ का मान सन्स्थागत मान से ऊपर पहुँचा देते हैं

मूल्य निर्धारण

ऐतिहासिक तौर पर देखें तो अमेरिका और वैश्विक दोनों ही स्टारों पर आईपीओ अवमूल्यित रहे हैं आईपीओ का प्रारंभिक अवमूल्यन (initial underpricing), स्टॉक के पहली बार कारोबार में आते समय उसमें अतिरिक्त रूचि पैदा करने का काम करता है यह उन निवेशकों के लिए उल्लेखनीय लाभ का स्रोत हो सकता है जिन्हें 'मांगी कीमत' पर शेयर मिले हों (significant gains for investors who have been allocated shares of the IPO at the offering price) हालांकि, आईपीओ का अवमूल्यन करने पर कंपनी को उस पूँजी को त्यागना होता है जिसे वह स्टॉक को ऊँचे मूल्य पर विक्रय कर प्राप्त कर सकती थी

अधिमूल्यन का खतरा भी एक महत्वपूर्ण विचार है। जब एक स्टॉक जनता को बाजार मूल्य से ऊँचे दाम पर प्रस्तुत किया जाता है तब हामिदारों को शेयर बेचने की अपनी प्रतिबद्धता को निभाएं में मुश्किल हो सकती है अगर वह सारे शेयर बेच भी लेते हैं तब भी अगर पहले दिन के कारोबार में स्टॉक गिरता है तो वह विक्रय क्षमता और मान खो सकता है

इसीकारण निवेश बैंक बहुत सारे कारकों को ध्यान में रख कर एक आईपीओ का मूल्य निर्धारण करते हैं और एक ऐसे प्रस्ताव मूल्य तक पहुंचना चाहते हैं जो स्टॉक में दिलचस्पी जगाने के लिए पर्याप्त रूप से नीचा हो पर कंपनी के लिए पर्याप्त पूँजी इकट्ठा करने के लिए पर्याप्त रूप से ऊँचा भी हो सामान्यतः इष्टतम मूल्य निर्धारित करने की प्रक्रिया में हामिदार (underwriters) (व्यवसाय-संघ) प्रमुख सन्स्थागत निवेशकों से shayaron को खरीदने की प्रतिबद्धता की व्यवस्था करते हैं

निर्गम मूल्य

आईपीओ नियुक्ति की योजना बनने वाली कंपनी प्रमुख प्रबंधकों को नियुक्त करती है जो उसे shayaron का उचित मूल्य निर्धारित करने में मदद करते हैं आईपीओ के मूल्य निर्धारण के दो तरीके हो सकते हैं: या तो कम्पनी प्रमुख प्रबंधकों की मदद से मूल्य निर्धारित करती है अथवा बुक बिल्डिंग द्वारा मूल्य निर्धारण होता है

नोट: सभी आईपीओ डिलीवरी निपटान के लिए डीटीसी प्रणाली (DTC system) के माध्यम के पात्र नहीं होते हैं, जिसमें या तो स्टॉक प्रमाण पत्र समाशोधन बैंक के अभिरक्षक को सौपा जाना होता है अथवा विक्रयकर्ता समूह दलाली फर्म के साथ सुपुर्दगी बनाम भुगतान (delivery versus payment) ("DVP") का तरीका अपनाना होता है यह जानकारी पर्याप्त नहीं है।

शांत अवधि

IPO के इतिहास के दौरान दो सामान्य समय गवाह हैं जिन्हें "शांत अवधियाँ" कहा गया है। पहली और ऊपर लिंक किया हुई अवधि, कंपनी द्वारा S-1 (S-1) दाखिल करने पर SEC स्टाफ के द्वारा पंजीकरण विवरण प्रभावी होने की घोषणा के पहले की होती है इस दौरान, निर्गमकर्ता, कंपनी के अंदरूनी स्रोत, विश्लेषक और अन्य पार्टियाँ को आने वाले आईपीओ के बारे में चर्चा करने और उसे बढ़ावा देने पर कानूनी रूप से रोक होती है।

दूसरी "शांत अवधि" एक आईपीओ के पहले दिन के सार्वजनिक व्यापार के 40 कैलेंडर दिनों बाद की अवधि को सन्दर्भित करता है। इस अवधि के दौरान आईपीओ में शामिल अंदरूनी सूत्रों और हामिदारों द्वारा आय के

पूर्वानुमान या अनुसंधान रिपोर्ट जारी करने पर प्रतिबन्ध होता है SEC (SEC) द्वारा लागू किए गए विनियामक परिवर्तनों ने, जो वैश्विक निपटान (Global Settlement) का हिस्सा थे, के कारण 9 जुलाई (July 9), 2002 से "शांत अवधि" 25 से 40 दिनों की कर दी गई शांत अवधि समाप्त होते पर आमतौर पर प्रमुख हामिदार अनुसन्धान व्याप्ति आरम्भ करते हैं इसके अलावा, NASD और NYSE द्वारा जारी किए एक नियम के अनुसार द्वितीयक प्रस्ताव के लिए 10 दिन की "शांत अवधि" तथा प्रतिभूति प्रस्ताव की निश्चित अवरुद्धता अवधि के समाप्त होने के पहले और बाद 15 दिन की "शांत अवधि" निर्धारित की गई है

समयबद्ध पीआईओ प्रणाली

कोई भी व्यक्ति जिसके पास वर्तमान में गैर-भारतीय पासपोर्ट है, जो तीन पीढ़ी पहले तक अपनी भारतीयता को प्रमाणित कर सकता है। यही नियम एक भारतीय नागरिक के जीवन साथी पर और भारतीय मूल के व्यक्तियों पर लागू होता है। जैसा कि केन्द्रीय सरकार के द्वारा निर्दिष्ट किया गया है पकिस्तान, बांग्लादेश और अन्य देशों के नागरिक भारतीय मूल का कार्ड प्राप्त करने के पात्र नहीं हैं।

एक पीआईओ कार्ड आम तौर पर जारी होने की तिथि से पंद्रह वर्ष की अवधि तक वैध होता है। इससे धारक को निम्नलिखित फायदे होते हैं।

- 180 दिन से कम की स्टे अवधि के लिए विदेशी क्षेत्रीय पंजीकरण कार्यालय पर पंजीकरण से छूट.
- आर्थिक, वित्तीय और शैक्षिक क्षेत्रों में अनिवासी भारतीयों के साथ समता का लाभ.
- भारत में कृषि सम्पत्ति के अलावा, किसी भी अचल संपत्ति को रखने, प्राप्त करने, स्थानांतरित करने, या निपटान करने की छूट.
- खुला रुपया बैंक खाते, भारतीय निवासियों को उधार दे पाना और भारत में निवेश करना आदि.
- भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) या केन्द्रीय अथवा राज्य सरकारों के तहत विभिन्न आवास योजनाओं के लिए पात्र होना.
- उनके बच्चे भारत के शिक्षा संस्थानों में अनिवासी भारतीयों के लिए सामान्य श्रेणी कोटा में प्रवेश पा सकते हैं।

एक पीआईओ कार्ड धारक:

- किसी भी राजनीतिक अधिकारों के उपयोग का पात्र नहीं होगा.
- बिना अनुमति के प्रतिबंधित या संरक्षित क्षेत्रों का दौरा नहीं कर पायेगा.
- बिना अनुमति के पर्वतारोहण, शोध और मिशनरी कार्य नहीं कर पायेगा.

स्क्रीन आधारित ट्रेडिंग सिस्टम

ट्रेडिंग : एक्सचेंज के पास एक ऑनलाइन स्क्रीन आधारित ऑर्डर मैचिंग सिस्टम है जो पूरी तरह से फॉल्ट टॉलरेंट (एफटी) स्ट्रेटस सर्वर पर होस्ट किया गया है। यह स्ट्रेटस सर्वर में लगातार प्रॉसेसिंग होती है जिससे उसकी उपलब्धता लगातार बनी रहती है। स्ट्रेटस सिस्टम की अतिरिक्त विशेषताओं में लॉकस्टेप तकनीक, फेलसेफ सॉफ्टवेयर और सर्विस आर्किटेक्चर शामिल है। एमएसइआई फ्रेमवर्क के अन्य घटक हाइ-एंड इंटेल पर होस्ट किए गए हैं। नेटवर्क को ज्यादा ग्राह्य बनाने के लिए कनेक्टिविटी के कई माध्यम उपलब्ध कराए गए हैं जैसे लीज्ड लाइन, वीसैट, आईएसडीएन और इंटरनेट (एसएसएल वीपीएन के माध्यम)। मजबूत तकनीकी इंफ्रास्ट्रक्चर से एक्सचेंज की संचालन क्षमता बढ़ती है और इससे त्वरित गति से ऑर्डर रूटिंग, तत्काल कारोबार का एक्जिक्यूशन, ट्रेड रिपोर्टिंग, बाजार की सूचनाओं को भेजने और जोखिम प्रबंधन में सुविधा होती है।

ट्रेडिंग सिस्टम: एमएसइआई का ट्रेडिंग सिस्टम ऑर्डर पर आधारित सिस्टम है। इसमें खरीदार और बिकवाल की पहचान बताई नहीं जाती क्योंकि यह गुमनाम ऑर्डर मैचिंग सिस्टम है। ट्रेडिंग सिस्टम में दर्ज हुए ऑर्डर विभिन्न वैलिडेशन जरूरतों यानी अलग अलग मानकों के होते हैं जिसमें ट्रेडिंग पैरामीटर, टर्नओवर की सीमा जैसी कई

सीमाएं भी जरूरत के अनुरूप लागू की जाती हैं। जो ऑर्डर इस वैलिडेशन चेक में खरे नहीं उतरते उन्हें ट्रेडिंग सिस्टम स्वीकार नहीं करता।

फ्यूचर्स (वायदा) और विकल्प (ऑप्शंस) ट्रेडिंग प्रणाली, एक राष्ट्रव्यापी आधार पर स्क्रीन आधारित फ्लोर-लेस ट्रेडिंग के लिए पूर्णतया स्वचालित ट्रेडिंग वातावरण और ऑनलाइन निगरानी और चौकसी (सर्विलांस) मैकेनिज्म प्रदान करती है। यह प्रणाली, ऑर्डर संचालित बाजार का समर्थन करती है और ट्रेडिंग संचालनों की पूर्ण पारदर्शिता प्रदान करती है।

बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज

बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज भारत और एशिया का सबसे पुराना स्टॉक एक्सचेंज है। इसकी स्थापना 1875 में हुई थी। इस एक्सचेंज की पहुंच 417 शहरों तक है। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज भारतीय शेयर बाजार के दो प्रमुख स्टॉक एक्सचेंजों में से एक है। दूसरा एक्सचेंज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज है। भारत को अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय बाजार में अपना श्रेष्ठ स्थान दिलाने में बीएसई की अहम भूमिका है।

एशिया के सबसे प्राचीन और देश के प्रथम स्टॉक एक्सचेंज को - बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज सिक्युरिटीज कांट्रेक्ट रेग्युलेशन एक्ट 1956 के तहत स्थाई मान्यता मिली है।

इसका लक्ष्य है - 'वैश्विक कीर्ति की पताका फहराकर प्रमुख भारतीय स्टॉक एक्सचेंज के रूप में उभरना'।

परिचय

एशिया के सबसे प्राचीन शेयर बाजार 'बीएसई' की स्थापना 1875 में लोकप्रिय 'बाम्बे स्टॉक एक्सचेंज' के रूप में हुई थी। भारतीय पूंजी बाजार के विकास में इस एक्सचेंज की व्यापक भूमिका रही है और इसका सूचकांक विश्वविख्यात है। मैनेजिंग डायरेक्टर के नेतृत्व में डायरेक्टर्स बोर्ड द्वारा एक्सचेंज का संचालन होता है। इस बोर्ड में प्रतिष्ठित प्रोफेशनल्स, ट्रेडिंग सदस्यों के प्रतिनिधियों और सार्वजनिक प्रतिनिधियों का समावेश है। एक्सचेंज भारत के छोटे - बड़े शहरों में अपनी उपस्थिति के साथ राष्ट्रीय स्तर पर फैला हुआ है। बीएसई की सिस्टम और प्रक्रिया ऐसी है कि बाजार की पारदर्शिता और सुरक्षा बनी रहे। वैश्विक कीर्तिमान स्थापित कर, सर्वोच्च स्टॉक एक्सचेंज के रूप में उभरने वाले इस एक्सचेंज के पास सवा सौ से अधिक वर्षों के भव्य इतिहास की समृद्ध विरासत है।

एक्सचेंज में 'ट्रेडिंग राइट' और 'ओनरशिप राइट' एक दूसरे से अलग है। ऐसी परिस्थिती में निवेशकों के हितों पर विशेष सावधानी बरती जाती है। एक्सचेंज इक्विटी, डेब्ट तथा प्युचर्स और ऑप्शन के व्यापार के लिए ढांचा एवं पारदर्शक ट्रेडिंग सिस्टम सुनिश्चित करता है। बीएसई की आनलाइन ट्रेडिंग प्रणाली बेहतरीन गुणवत्तावाली है। वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त इन्फार्मेशन सिक्युरिटी मैनेजमेंट सिस्टम का दर्जा BS 7799-2:2002 सर्टिफिकेट वाला है। BS 7799 ऑडिट डीएनवी (Det Norske Veritas) द्वारा किया गया था। यह प्रमाणपत्र प्राप्त करनेवाला बीएसई भारत का एकमात्र और विश्व का दूसरा एक्सचेंज है। जानकारी एकत्रित करने, जोखिम को नियंत्रित करने तथा तकनीकी प्रणाली और लोगों की सम्पत्ती की सुरक्षा के लिए BS 7799 अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत मानक है।

इतिहास

इस एक्सचेंज का गौरवपूर्ण भव्य इतिहास सवा सौ वर्षों से अधिक पुराना है।

महत्व

भारतीय पूंजी बाजार की घटनाएं बहुत ही रोचक हैं। भारत का यह स्टॉक एक्सचेंज सूचीबद्ध कंपनियों की संख्या तथा बाजार पूंजीकरण के संदर्भ में विशाल है। बीएसई ने भारतीय पूंजी बाजारमें प्रणेतता की भूमिका निभाई है। वास्तविक कानून बनने के पूर्व ही बीएसई ने भारतीय पूंजी बाजार के लिए अपना व्यापक नियम और नियमन इजाद कर लिया था। भारत स्वतंत्र होने के बाद इस एक्सचेंज ने भारतीय पूंजी बाजार के लिए श्रेष्ठ प्रथाएं स्थापित की थी।

भारत में शायद ही ऐसी कोई कंपनी होगी जिसने पूंजी सर्जन के लिए बीएसई की सेवा नहीं ली हो। बीएसई भारत में कैपिटल मार्केट का प्रतीक माना जाता है। बीएसई सेंसेक्स देश के अर्थतंत्र और वित्त बाजार की गतिविधियों को प्रतिबिम्बित करता बेंचमार्क इक्विटी इंडेक्स है। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर समकक्ष रहकर बीएसई अनेक क्षेत्रों में प्रणेता रहा है। तीव्र प्रतिस्पर्धा के युग में बीएसई ने अनेक क्षेत्रों में अग्रणी भूमिका निभा कर अपनी यश कीर्ति गाथा में चार चांद लगाए हैं।

- इक्विटी डेरीवेटिव्स शुरू करनेवाला भारत का पहला एक्सचेंज
- फ्री प्लोट इंडेक्स शुरू करनेवाला भारत में पहला एक्सचेंज
- यूएस डॉलर आधारित सेन्सेक्स प्रस्तुत करनेवाला भारत का पहला एक्सचेंज
- सेंसेक्स (बीएसई 30) बीएसई बाजार सूचकांक है जिसमें बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) में सूचीबद्ध 30 अच्छी तरह से स्थापित और वित्तीय रूप से अच्छी कंपनियां शामिल हैं।
- एक्सचेंज आधारित इंटरनेट ट्रेडिंग प्लेटफार्म स्थापित करनेवाला भारत का पहला एक्सचेंज
- सर्वेलंस, क्लियरिंग और सेटलमेंट के वास्ते आईएसओ प्रमाणपत्र हासिल करनेवाला देश का पहला एक्सचेंज
- बीएसई आनलाइन ट्रेडिंग सिस्टम (बोल्ड) को वैश्विक स्तर पर मान्य इन्फार्मेशन सिक्युरिटी मैनेजमेंट सिस्टम स्टैंडर्ड बीएसई बीएस 7799-2-2002 प्राप्त करने वाला
- फाइनेंशियल ट्रेडिंग के लिए अलग विशेष सुविधा की व्यवस्था करने वाला पहला एक्सचेंज
- ट्रेडिंग रिंग सिस्टम से इलेक्ट्रॉनिक ट्रेडिंग की तरफ प्रयाण सिर्फ 50 दिनों में

बीएसई ने समान महत्त्व की अन्य परियोजनाओं के एक भाग के रूप में देश भर में निवेशकों की जागरूकता के लिए अभियान छेड़ा है। इसके लिए प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का व्यापक उपयोग कर के जानकारी, मार्गदर्शन और जनजागृति का प्रचार किया जाता है। सिक्युरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया (सेबी) के पूंजी बाजार जागृति कार्यक्रमों को फैलाने में बीएसई ने सक्रिय भूमिका निभाई है।

वर्ष 2002 में स्टॉक एक्सचेंज, मुंबई का नाम बदल कर बीएसई कर दिया गया। बीएसई ने भारत में सिक्युरिटीज (प्रतिभूति) ट्रेडिंग प्रस्तुत की, ट्रेडिंग रिंग की परम्परागत शेयर क्रय विक्रय पद्धति के स्थान पर बीएसई आनलाइन ट्रेडिंग (बोल्ड) के माध्यम से 1995 में ऑटोमेटेड ट्रेडिंग सिस्टम का श्री गणेश किया। 1997 में यह "बोल्ड" नेटवर्क राष्ट्रीय स्तर पर फैल गया। बीएसई के इंटरनेशनल कन्वेंशन हाल में भारत का प्रथम बेल रिंगिंग समारोह (शेयर सूचीबद्धता का उत्सव घंटा बजाकर मनाने का कार्यक्रम) के साथ 2002 से नए इतिहास की शुरुआत की, जब 18 फरवरी 2002 को भारती टेलीवेंचर्स लि. के शेयर लिस्टिंग का पहला समारोह सम्पन्न हुआ और आज यह नए आधुनिक युग की प्रथा बन गई है।

इस तरह देश के पूंजी बाजारके विकास में बीएसई का हमेशा महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है और बीएसई इस दिशा में सुसज्ज रहता है।

बी एस ई का संगठनात्मक संरचना

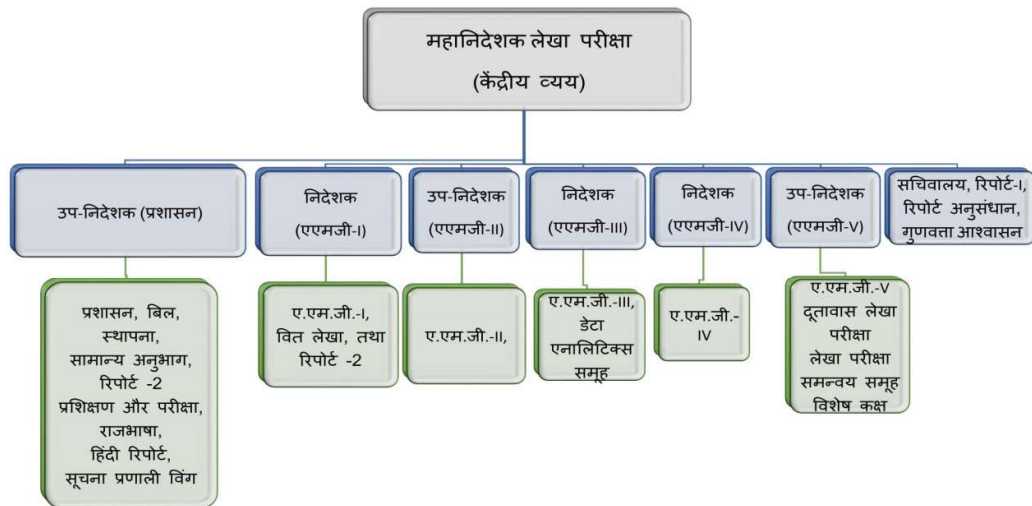
संगठन (organisation) वह सामाजिक व्यवस्था या युक्ति है जिसका लक्ष्य एक होता है, जो अपने कार्यों की समीक्षा करते हुए स्वयं का नियन्त्रण करती है, तथा अपने पर्यावरण से जिसकी अलग सीमा होती है। संगठन तरह-तरह के हो सकते हैं - सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सैनिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक आदि।

किसी भी उपक्रम के संगठन का निर्माण करने के लिए जो आवश्यक कदम उठाये जाते हैं, वे निम्न प्रकार से हैं -

(1) **उद्देश्यों का निर्धारण करना** -संगठन प्रक्रिया का प्रथम कदम संस्था के उद्देश्यों का निर्धारण करना है। संस्था के उद्देश्यों के निर्धारण के अभाव में संगठन का कोई महत्त्व नहीं रहता। वास्तव में संगठन का अपने आप में कोई उद्देश्य नहीं होता, यह तो उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है।

- (2) **कार्यों को परिभाषित करना** - कार्यों को परिभाषित करते समय संस्था द्वारा किये जाने वाले समस्त कार्यों को परिभाषित किया जाता है। कार्यों को परिभाषित करते समय संस्था के उद्देश्यों को ध्यान में रखना आवश्यक होता है। प्रत्येक कार्य को उपकार्यों में विभाजित किया जाता है जिससे कि उने कर्मचारियों में बाँटा जा सके और उनका दायित्व निर्धारित किया जा सके।
- (3) **कर्मचारियों के मध्य कार्य का विभाजन** - क्रियाओं को श्रेणीबद्ध करने के उपरान्त अगला कदम है, कार्यों का कर्मचारियों के मध्य विभाजन करना। कार्य विभाजन में कर्मचारियों की रूचि, शारीरिक क्षमता, शैक्षणिक योग्यता, कार्य अनुभव आदि को ध्यान में रखना आवश्यक होता है।
- (4) **समन्वय** - संगठन संरचना की अन्तिम प्रक्रिया है। विभिन्न विभागों के बीच समन्वय स्थापित करना, जिससे कि उपक्रम के समस्त विभाग एकजुट होकर संस्था के उद्देश्यों की प्राप्ति में प्रयत्नशील हो सकें। विभिन्न विभागों के बीच सम्बन्धों को परिभाषित करना ही संगठन प्रक्रिया की अन्तिम कड़ी होती है।
- (5) **क्रियाओं को श्रेणीबद्ध करना** - समान प्रकृति अथवा सम्बन्धित क्रियाओं को श्रेणीबद्ध किया जाता है। क्रियाओं के श्रेणीबद्ध करने से विभागों तथा उपविभागों का निर्माण होता है।
- (6) व्युत्पन्न उद्देश्यों, नीतियों तथा योजनाओं का निर्माण
- (7) क्रियाओं का उपलब्ध मानवीय एवं भौतिक साधनों की दृष्टि से श्रेणीबद्ध करना जिससे कि साधनों का अधिकतम उपयोग हो सके।
- (8) क्रियाओं की विभिन्न श्रेणियों का परस्पर गठबन्धन। इस प्रकार का गठबन्धन क्षितिजीत तथा ऊर्ध्वधिर हो सकता है।
- (9) **अधिकारों का प्रत्यायोजन** - कर्मचारियों के मध्य कार्य वितरण द्वारा उन्हें कार्य सम्पादन व उत्तरदायित्व सौंप दिया जाता है। उत्तरदायित्व की पूर्ति के लिए उत्तरदायित्व के अनुरूप अधिकार भी कर्मचारियों को सौंपे जाने चाहिए।

कार्यालय की संगठनात्मक स्थापना



बीएसई के अनुभाग परिचय

बीएसई लिमिटेड अपने "इक्विटी एंड इक्विटी डेरिवेटिव्स सेगमेंट" पर जमा आधारित सदस्यता (ट्रेडिंग सदस्यता) स्वीकार कर रहा है। बीएसई पूरे देश से आवेदन रु 10,00,000 (केवल दस लाख रुपए)।

बीएसई की संभावनाओं के "इक्विटी एंड इक्विटी डेरिवेटिव्स सेगमेंट" की ट्रेडिंग सदस्यता के लिए आवेदन करने के लिए अपने आवेदन लिखित रूप में एक सीलबंद लिफाफे में "जमा आधारित सदस्यता के लिए प्रस्ताव" में लिखे जा सकते हैं और मुख्य महाप्रबंधक, सदस्य / संस्थागत बिक्री विभाग को संबोधित किया जा सकता है, निर्धारित प्रारूप में आवेदन पत्र, सभी मामलों में पूर्ण रूप से रुपये के लिए डिमांड ड्राफ्ट / वेतन आदेश के साथ होना चाहिए। "बीएसई लिमिटेड" के पक्ष में नकद धन जमा की ओर 1 लाख रुपये (केवल एक लाख रुपए) तैयार किए गए हैं, जिन पर कोई ब्याज देय नहीं होगा।

बीएसई द्वारा स्वीकार किए जाने वाले आवेदकों को जल्द से जल्द दस्तावेजों को पूरा करने की आवश्यकता होगी। सेबी पंजीकरण प्रमाण पत्र प्राप्त करने के बाद आवेदक को शेष राशि का भुगतान करना पड़ता है लेकिन व्यवसाय शुरू होने से पहले।

इक्विटी और व्युत्पन्न खंडों में सेबी पंजीकरण प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए पूर्ण आवेदन पत्र (आवेदकों के लिए जो किसी भी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज / क्लियरिंग कॉर्पोरेशन के सदस्य नहीं हैं) को लिंक बुक आवेदन पुस्तिका से डाउनलोड किया जा सकता है

बीएसई में सदस्यता प्राप्त करने के लिए पूर्ण आवेदन पत्र (आवेदकों के लिए जो किसी भी मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंज / क्लियरिंग कॉर्पोरेशन के सदस्य हैं) को स्टॉक ब्रोकर्स और मान्यता प्राप्त स्टॉक एक्सचेंजों के क्लियरिंग सदस्यों के लिए आवेदन फॉर्म के साथ डाउनलोड किया जा सकता है

एक बार दस्तावेज सेबी को भेजे जाने के बाद, सदस्य एक साथ प्रारंभिक औपचारिकताओं को पूरा करने पर काम करना शुरू कर सकता है। प्रारंभिक पुस्तिका डाउनलोड करने के लिए आप यहां लिंक के माध्यम से जा सकते हैं: प्रारंभ मैनुअल।

महत्वपूर्ण बिंदु

- BSE, एशिया का सबसे पुराना स्टॉक एक्सचेंज है।
- इससे पहले कुछ ही स्टॉक एक्सचेंज को वैश्विक स्तर पर DOSM के रूप में पहचान मिली है, जिनमें लंदन स्टॉक एक्सचेंज, बोर्स डी लक्जमबर्ग, टोक्यो स्टॉक एक्सचेंज और टोरंटो स्टॉक एक्सचेंज उल्लेखनीय हैं।
- DOSM का दर्जा, U.S. SEC के साथ ऐसी प्रतिभूतियों के पंजीकरण के बिना BSE के व्यापार स्थल के माध्यम से अमेरिकी निवेशकों को प्रतिभूतियों की बिक्री करने की अनुमति देता है और इस प्रकार भारत में अमेरिकी निवेशकों द्वारा व्यापार को आसान बनाता है।
- एक्सचेंज के अनुसार, यह मान्यता उन कंपनियों, जिनकी प्रतिभूतियों का व्यापार अमेरिका तथा BSE दोनों में किया जाता है, को अतिरिक्त लाभ प्रदान करने के साथ-साथ अमेरिकी निवेशकों के बीच भारतीय डिपाजिटरी रसीदों (IDRs) के आकर्षण को भी बढ़ाएगी।
- जून 2010 में भारतीय बाजारों में सूचीबद्ध स्टैंडर्ड चार्टर्ड PLC के IDRs के बाद, किसी अन्य विदेशी कंपनी ने IDR (Indian Depository Receipts) जारी नहीं किए हैं।
- अमेरिकी प्रतिभूति कानूनों के तहत, लागू होने वाले किसी भी प्रतिबंध या जमा पूंजी अवधि के बावजूद, दोहरी सूचीबद्ध कंपनियों के कुछ निदेशकों और अधिकारियों को BSE पर अपनी प्रतिभूतियों को दोबारा बेचने की अनुमति दी जाएगी।

- फिनसेक लॉ एडवाइजर्स ने BSE के लिये DOSM की मान्यता दिलाने के लिये SEC के समक्ष BSE का प्रतिनिधित्व किया।

पूंजी बाजार और शेयर बाजार

पूंजी बाजार भारतीय वित्तीय प्रणाली का सर्वाधिक महत्वपूर्ण खण्ड है। यह कंपनियों को उपलब्ध एक ऐसा बाजार है जो उनकी दीर्घावधिक निधियों की जरूरतों को पूरा करता है। यह निधियां उधार लेने और उधार देने की सभी सुविधाओं और संस्थागत व्यवस्थाओं से संबंधित है। अन्य शब्दों में, यह दीर्घावधि निवेश करने के प्रयोजनों के लिए मुद्रा पूंजी जुटाने के कार्य से जुड़ा है। इस बाजार में कई व्यक्ति और संस्थाएं (सरकार सहित) शामिल हैं जो दीर्घावधि पूंजी की मांग और आपूर्ति को सारणीबद्ध करते हैं और उसकी मांग करते हैं। दीर्घावधि पूंजी की मांग मुख्य रूप से निजी क्षेत्र विनिर्माण उद्योगों, कृषि क्षेत्र, व्यापार और सरकारी एजेंसियों की तरफ से होती है। जबकि पूंजी बाजार के लिए निधियों की आपूर्ति अधिकतर व्यक्तिगत और कॉर्पोरेट बचतों, बैंकों, बीमा कंपनियों, विशिष्ट वित्त पोषण एजेंसियों और सरकार के अधिशेषों से होती है।

भारतीय पूंजी बाजार स्थूल रूप से गिल्ट एज्ड बाजार और औद्योगिक प्रतिभूति बाजार में विभाजित है -

उत्कृष्ट बाजार सरकार और अर्द्ध-सरकारी प्रतिभूतियों से संबंधित है जिसे **भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई)** का समर्थन प्राप्त है। सरकारी प्रतिभूतियां सरकार द्वारा जारी की गई बिक्री योग्य ऋण लिखते हैं, जो इसकी वित्तीय जरूरतों को पूरा करती हैं। 'उत्कृष्ट' शब्द का अर्थ है 'सर्वोत्तम क्वालिटी'। इसी कारण सरकारी प्रतिभूतियों को बाकीदारी का कोई जोखिम नहीं उठाना पड़ता और इनसे काफी मात्रा में नकदी प्राप्त होती है (क्योंकि इसे बाजार में चालू मूल्यों पर बड़ी आसानी से बेचा जा सकता है)। भारतीय रिजर्व बैंक के खुले बाजार संचालन की ऐसी प्रतिभूतियों में किए जाते हैं।

औद्योगिक प्रतिभूति बाजार ऐसा बाजार है जो कंपनियों की इक्विटियों और ऋण-पत्रों (डिबेंचरों) का लेन-देन करता है। इसे आगे प्राथमिक बाजार और द्वितीयक बाजार में विभाजित किया गया है।

- प्राथमिक बाजार (नया निर्गम बाजार):-** यह बाजार नई प्रतिभूतियों अर्थात् ऐसी प्रतिभूतियां जो पहले उपलब्ध नहीं थी और निवेश करने वाली जनता को पहली बार पेश की गई हैं, का लेन-देन करता है। यह बाजार शेयरों और डिबेंचरों के रूप में नए सिरे से पूंजी जुटाने के लिए है। यह निर्गमकर्ता कंपनी को नया उद्यम शुरू करने अथवा मौजूदा उद्यम का विस्तार करने अथवा उसमें विविधता लाने के लिए अतिरिक्त धनराशि प्रदान करता है, और इस प्रकार कंपनी के वित्त पोषण में इसका योगदान प्रत्यक्ष है। कंपनियों द्वारा नई पेशकश या तो प्रारम्भिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) अथवा राइट्स इश्यु के रूप में की जाती हैं।
- द्वितीयक बाजार/शेयर बाजार (पुराना निर्गम बाजार अथवा शेयर बाजार):-** यह वर्तमान कंपनियों की प्रतिभूतियों की खरीद और बिक्री का बाजार है। इसके तहत प्रतिभूतियों का लेन-देन प्राथमिक बाजार में जनता को पहले इनकी पेशकश करने और/अथवा शेयर बाजार में सूचीबद्ध करने के बाद ही किया जाता है। यह एक संवेदी बेरोमीटर है और विभिन्न प्रतिभूतियों के मूल्यों में उतार-चढ़ाव के माध्यम से अर्थव्यवस्था की प्रवृत्तियों को परिलक्षित करता है। इसे "व्यक्तियों को एक निकाय, चाहे निगमित हो अथवा नहीं, जो प्रतिभूतियों की खरीद बिक्री और लेन-देन के व्यवसाय में सहायता देना, उसे विनियमित अथवा नियमित करने के लिए गठित किया गया है" के रूप में परिभाषित किया गया है। शेयर बाजार में सूचीबद्धता शेयर धारकों को शेयर की कीमतों में घट-बढ़ की कारगर ढंग से निगरानी करने में समर्थ बनाती है। इससे उन्हें इस संबंध में विवेकपूर्ण निर्णय लेने में मदद मिलती है कि क्या वे अपनी धारिताओं को बनाए रखें अथवा बेच दे अथवा आगे और भी संचित कर लें। लेकिन शेयर बाजार प्रतिभूतियों को

सूचीबद्ध कराने के लिए निर्गमकर्ता कंपनियों को कई निर्धारित मानदण्डों और प्रक्रियाओं से गुजरना पड़ता है।

विनियामक ढांचा

भारत में, पूंजी बाजार **आर्थिक कार्य विभाग वित्त मंत्रालय** के **पूंजी बाजार प्रभाग** द्वारा विनियमित किया जाता है। यह प्रभाग प्रतिभूति बाजारों (अर्थात् शेयर, ऋण और व्युत्पन्न) की सुव्यवस्थित संबद्धि और विकास और साथ ही साथ निवेशकों के हितों की सुरक्षा से संबंधित नीतियां तैयार करने के लिए जिम्मेदार है। विशेष रूप से, यह निम्नलिखित के लिए जिम्मेदार है (i) प्रतिभूति बाजारों में संस्थागत सुधार, (ii) विनियामक और बाजार संस्थाओं की स्थापना, (iii) निवेशक सुरक्षा तंत्र को मजबूत बनाना, और (iv) प्रतिभूति बाजारों के लिए सक्षम विधायी ढांचा प्रदान करना, जैसे कि भारतीय **प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड अधिनियम, 1992** (सेबी अधिनियम 1992); **प्रतिभूति संविदा (विनियमन) अधिनियम, 1956**; और **निक्षेपागार (डिपोजिटरी) अधिनियम, 1996**। यह प्रभाग इन विधानों और इनके तहत बनाए गए नियमों की प्रशासित करता है।

भारतीय **प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी)** एक विनियामक प्राधिकरण है जिसकी स्थापना प्रतिभूतियों में निवेशकों के हितों की सुरक्षा करने एवं पूंजी बाजार के विकास को बढ़ावा देने के लिए सेबी अधिनियम, 1992 के अधीन की गई थी। इसके कार्यों में शेयर बाजारों के व्यापार को विनियमित करना; शेयर दलालों, शेयर हस्तांतरण एजेंटों, व्यापारी बैंकरों, हामीदारों आदि का निरीक्षण करना; तथा प्रतिभूति बाजारों की अनुचित व्यापार प्रणालियों का निषेध करना शामिल है। सेबी के निम्नलिखित विभाग द्वितीयक बाजार के कार्यकलापों की निगरानी करते हैं:-

- बाजार मध्यवर्ती पंजीकरण एवं पर्यवेक्षण (एम आई आर एस डी) – बाजारों के सभी खण्डों जैसे कि इक्विटी, इक्विटी व्युत्पन्न, ऋण और ऋण से संबंधित व्युत्पन्न के संबंध में सभी बाजार मध्यवर्तियों के पंजीकरण, पर्यवेक्षण, अनुपालना निगरानी और निरीक्षण से संबंधित हैं।
- बाजार विनियमन विभाग (एन आर डी) – यह नई नीतियां तैयार करने, प्रतिभूति बाजारों, उनके सहायक बाजारों और बाजार संस्थाओं जैसे कि समशोधन और निपटान संगठन और निक्षेपागार की कार्यप्रणाली और संचालनों (व्युत्पन्न से संबंधित संचालनों को छोड़कर) को निरीक्षण से संबंधित है।
- व्युत्पन्न और नए उत्पाद विभाग (डी एन पी डी) – यह विभाग शेयर बाजारों के व्युत्पन्न खंडों में लेन-देन का निरीक्षण करने, लेन-देन किए जाने वाले नए उत्पादों को शुरू करने और परिणामी नीतिगत परिवर्तन करने के कार्य से संबंधित है।

नीतिगत उपाय और पहलें

पूंजी बाजार के प्राथमिक और द्वितीयक खंडों में वित्तीय और विनियामक सुधार करने के लिए सरकार ने, समय-समय पर, कई पहलें शुरू की हैं। मुख्य तौर पर इन उपायों का उद्देश्य देश के पूंजी बाजार में निवेशकों (घरेलू और विदेशी दोनों) का विश्वास कायम रखना है।

वर्ष 2006-07 के दौरान प्राथमिक बाजार में शुरू की गई नीतिगत पहलें निम्नलिखित हैं:-

- सेबी ने भारत में जमाकर्ताओं को रसीदें जारी करने की इच्छुक कंपनियों के प्रकटीकरणों और अन्य संबंधित अपेक्षाओं की अधिसूचित किया है। इसे यह अधिदेश दिया गया है कि:- (i) निर्गमकर्ता अपने देश में सूचीबद्ध होना चाहिए; (ii) यह किसी भी विनियामक निकाय द्वारा वर्जित नहीं किया गया होना चाहिए; और (iii) उनका प्रतिभूति बाजार विनियमों का अनुपालन करने का अच्छा ट्रैक रिकॉर्ड होना चाहिए।
- निरन्तर सूचीबद्ध रहने की एक शर्त के तौर पर सूचीबद्ध कंपनियों को, जारी किए गए कुल शेयरों के 25 प्रतिशत की सार्वजनिक शेयरधारिता न्यूनतम स्तर पर बनाए रखना होगी। इसके कुछ अपवाद हैं:- (i) वे कंपनियां जिन्हें प्रतिभूति संविदा (विनियम) नियमावली, 1957 के अनुसार 10 प्रतिशत से अधिक

- लेकिन 25 प्रतिशत से कम का सूत्र बनाए रखना अपेक्षित है; और (ii) वे कंपनियां जिनके दो करोड़ अथवा इससे अधिक सूचीबद्ध शेयर और 1,000 करोड़ रुपए अथवा उससे अधिक और बाजार पूंजी है।
- सेबी द्वारा जारी किए गए दिशा-निर्देशों के अनुसार निर्गमकर्ताओं से अपेक्षा की जाती है कि वे अपने पेशकश प्रलेख के आवरण पृष्ठ पर इस बात का उल्लेख करें कि क्या उन्होंने रेटिंग एजेंसियों से आईपीओ (आरम्भिक सार्वजनिक पेशकश) ग्रेडिंग के लिए विकल्प दिया है। यदि निर्गमकर्ता ग्रेडिंग का विकल्प देते हैं तो उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे विवरण पत्रिका में अस्वीकृत ग्रेडों सहित ग्रेडों का प्रकटीकरण करें।
 - सेबी ने निधियां जुटाने की एक त्वरित और किफायती प्रणाली जिसे 'पात्र संस्थागत नियोजन (क्युआईपी)' कहा जाता है, की सुविधा प्रदान की है, जिसमें भारतीय प्रतिभूति बाजार से प्रतिभूतियों के निजी नियोजन अथवा पात्र संस्थागत विक्रेता के परिवर्तनीय बॉण्डों के जरिए निधियां जुटाई जाती हैं।
 - सेबी ने यह विनिर्दिष्ट किया है कि आरम्भिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) करने वाली गैर-सूचीबद्ध कंपनियों के निर्गम-पूर्व शेयरों पर 'लॉक इन अवधि' न होने के लाभ को, जो इस समय उद्यम पूंजी निधियों (वीसीएफ)/विदेशी उद्यम पूंजी निवेशकों (एफवीसीआई) द्वारा धारित शेयरों के लिए उपलब्ध हैं, निम्नलिखित तक सीमित कर दिया जाएगा:- (i) सेबी को प्रारूप विवरणिका प्रस्तुत करने की तारीख को सेबी में कम से कम एक वर्ष से पंजीकृत वीसीएफ अथवा एफवीसीआई के द्वारा धारित शेयर; और (ii) सेबी में पंजीकृत वीसीएफ/एफवीसीआई को सेबी में प्रारूप विवरणिका प्रस्तुत करने की तारीख से पूर्व एक वर्ष की अवधि के दौरान परिवर्तनीय लिखतों के रूपांतरण पर जारी शेयर।
 - सेबी ने, प्रतिभूतियों के निर्गम की आयोजना करने वाली कंपनियों द्वारा निर्गम-पूर्व प्रचार को नियंत्रित करने के लिए 'प्रकटीकरण और निवेशक सुरक्षा संबंधी दिशा-निर्देशों' में संशोधन करके निर्गम – पूर्व प्रचार पर प्रतिबंध को लागू किया है। प्रतिबंधों में, अन्य बातों के साथ-साथ निर्गमकर्ता कंपनी से यह अपेक्षा की जाती है कि वह इस बात को सुनिश्चित करे कि इसका प्रचार विगत प्रणालियों के सुसंगत है, उसमें कोई ऐसे पूर्वानुमान/ अनुमान/सूचना निहित नहीं है जो सेबी में प्रस्तुत किए गए पेशकश प्रलेख से अलग हो।

इसी प्रकार वर्ष 2006-07 के दौरान द्वितीयक बाजार में शुरू की गई नीतिगत पहले निम्नलिखित हैं:-

- वर्ष 2005 से नकदी बाजार के टी+2 चल निपटान परिदृश्य में लागू व्यापक जोखिम प्रबंधन प्रणाली के भ्रम में, शेयर बाजारों को सलाह दी गई है कि वे व्यापार शुरू करने के पिछले दिवस के समापन मूल्य और प्रातः 11 बजे, दोपहर 12.30 बजे, 2.00 बजे के मूल्यों और व्यापारी सत्र की समाप्ति पर मूल्य को हिसाब में लेते हुए, लागू जोखिम पर मूल्य (वीएआर) के मार्जिन को एक दिन में कम से कम 5 बार अद्यतन करें। ऐसा, जोखिम प्रबंधन ढांचे को नकदी और व्युत्पन्न बाजारों के साथ जोड़ने के लिए किया गया है।
- 'अपने ग्राहक को पहचानें' संबंधी मानदंडों को सुदृढ़ बनाने और प्रतिभूति बाजार में लेन-देन की एक ठोस लेखा-परीक्षा प्रणाली स्थापित करने के लिए दृष्टि से लाभानुभोगी मालिक का खाता खोलने और नकदी खंड में लेन-देन करने के लिए 1 जनवरी, 2007 से 'स्थाई लेखा संख्या (पैन) को अनिवार्य बना दिया गया है।
- सेबी ने, कॉर्पोरेट बाण्डों के लेन-देन के लिए एक सम्मिलित मंच का निर्माण करने के प्रस्ताव को कार्यान्वित करने की दृष्टि से यह विनिर्दिष्ट किया है कि बीएसई लिमिटेड कॉर्पोरेट बाण्ड सूचना मंच की स्थापना करेगा और उसका रखरखाव करेगा। सभी संस्थाओं जैसे कि बैंकों, सरकारी क्षेत्र उद्यमों, नगर

निगमों, निगमित (कॉर्पोरेट) निकायों और कंपनियों द्वारा जारी की गई सूचीबद्ध ऋण प्रतिभूतियों के सभी लेन-देन की सूचना दी जाएगी।

- भारतीय प्रतिभूति बाजार की आधारभूत ढांचा कंपनियों में विदेशी निवेश संबंधी भारत सरकार की नीति के अनुरूप शेयर बाजारों, निक्षेपगार और समाशोधन निगमों में विदेशी निवेश की सीमाएं इस प्रकार विनिर्दिष्ट की गई है:- (i) इन कंपनियों में 26 प्रतिशत की पृथक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) सीमा और 23 प्रतिशत विदेशी संस्थागत निवेश (एफआईआई) सीमा के साथ 49 प्रतिशत तक विदेशी निवेश की अनुमति दी जाएगी। (ii) एफडीआई की अनुमति विदेशी निवेश संवर्धन बोर्ड (एफआईपीबी) के विशेष पूर्वानुमोदन पर दी जाएगी; (iii) एफडीआई की अनुमति केवल द्वितीयक बाजार में खरीदों के माध्यम से दी जाएगी; और (iv) एफआईआई निदेशक मंडल में प्रतिनिधित्व की मांग नहीं करेगा और न ही उसे प्रतिनिधित्व प्राप्त होगा।
- एफआईआई निवेश के आवेदन की प्रक्रिया को सरल बना दिया गया है और एचआईआई के तहत निवेश की नई श्रेणियों (बीमा और पुनर्बीमा कंपनियां, विदेशी सेंट्रल बैंक, निवेश प्रबंधक, अंतरराष्ट्रीय संगठन) को शामिल किया गया है।
- म्युचुअल फंडों की प्रारम्भिक निर्गम खर्च और लाभांश वितरण प्रक्रिया को युक्तिसंगत कर दिया गया है।
- म्युचुअल फंडों को स्वर्ण विनिमय व्यापारिक निधियां लागू करने की अनुमति दी गई है।
- सरकारी प्रतिभूति बाजार में, भारतीय रिजर्व बैंक ने राजकोषीय उत्तरदायित्व एवं बजट प्रबंधन अधिनियम (एचआरबीएम)के उपबंधों के अनुसार केंद्र सरकार नके प्राथमिक निर्गमों में भाग लेना छोड़ दिया है।
- विदेशी संस्थागत निवेशकों को प्रतिभूति प्राप्तियों में निवेश की अनुमति दी गई है।

इस प्रकार, पूंजी बाजार देश के आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है जैसा कि यह वास्तविक बचतों की मात्रा बढ़ाता है; निवेश की जाने योग्य निधियों का आबंटन बढ़ाकर निवेशों की क्षमता को बढ़ाता है; और अर्थव्यवस्था में पूंजी की लागत को कम करता है।

शेयर बाजार

मानव अपने लिए वर्तमान के साथ-साथ भविष्य को भी कुछ सिमा तक सुरक्षित रखना चाहता है। इसी स्वभाव के कारण वह भावी मौद्रिक अवश्यताओं के लिये कुछ सीमा तक वर्तमान आय में थोड़ी-थोड़ी बचते करता है। इन बचतों को वह कहीं न कहीं विनियोग करता है।

इन बचतों को विनियोग करने के विभिन्न तरीके निम्न हो सकते हैं-

- ◆ बैंक में जमा करना
- ◆ बहुमूल्य धातुएं, जमीन आदि में विनियोग करना
- ◆ सरकारी व गैर-सरकारी प्रतिभूतियों (अंशों, ऋण पत्रों एवं बॉन्ड्स) में निवेश करना प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय जिस बाजार में किया जाता है, उसे “**शेयर बाजार**” कहते हैं। अन्य शब्दों में जिस बाजार में सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रतिभूतियों (अंश, ऋण पत्र, बॉण्ड्स आदि) का क्रय-विक्रय बिचौलियों (Brokers) के माध्यम से निर्धारित नियमों के तहत किया जाता है एवं जहां अंशों एवं ऋणपत्रों के बाजार मूल्यों का नियमित रूप से खुलासा किया जाता है, उसे **शेयर बाजार** कहते हैं।

पाइले के अनुसार शेयर बाजार ऐसे स्थान हैं, जहाँ इन बाजारों में सूचीबद्ध प्रतिभूतियों का निवेश या सट्टे के लिए क्रय-विक्रय किया जाता है।

शेयर बाजार की विशेषताएं (Stock market features):-

- शेयर बाजार में विभिन्न प्रकार की सरकारी एवं गैर-सरकारी प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय होता है।
- शेयर बाजार में यह क्रय-विक्रय पंजीकृत दलालों के माध्यम से निवेशकों एवं सट्टेबाजों द्वारा किया जाता है।
- शेयर बाजार व्यक्तियों के पंजीकृत संघ होते हैं।
- शेयर बाजार के कार्यों पर सेबी का पूर्ण नियंत्रण होता है।

शेयर बाजार के कार्य (Stock market work)

- शेयर बाजार की सबसे महत्वपूर्ण कार्य विभिन्न प्रतिभूतियों के लेन-देन की व्यवस्था करना।
- यह निवेशकर्ताओं एवं कम्पनियों को प्रतिभूतियों के क्रय-विक्रय करने की सुविधा एवं प्लेटफार्म प्रदान करना है।
- शेयर बाजार दैनिक आधार पर विभिन्न प्रतिभूतियों की कीमतों से अवगत कराता है ताकि विभिन्न निवेशकर्ताओं को मुल्यों की सही जानकारी रहे।
- इसके अलावा यह विभिन्न प्रकाशनों द्वारा विभिन्न इच्छुक पक्षकारों को अन्य कई महत्वपूर्ण सूचनाएं उपलब्ध कराता है।
- शेयर बाजार विभिन्न प्रतिभूतियों के लेन-देन के विभिन्न नियमों, उपनियमों आदि का निर्धारण करते हैं।
- ताकि प्रतिभूति व्यवहार उचित प्रकार से एवं सुरक्षित तरीके से हो सकें।
- ये बाजार विभिन्न प्रतिभूतियों में क्रय-विक्रय की सुविधा प्रदान कर निवेशकों एवं कम्पनियों को तरलता प्रदान करने का कार्य करते हैं।
- शेयर बाजार सूचिबद्ध कम्पनियों के अंतिम लेखों का निरीक्षण भी करते हैं, ताकि उसके अंशों के निर्गमन के समय निवेशकों के हितों की अनदेखी न हो।

अंश बाजार के प्रकार या अंग (types of Share market or Parts)

शेयर बाजार का वर्गीकरण इस बात पर निर्भर करता है कि उसमें किस प्रकार की प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय किया जाता है। कंपनियों एवं सरकार की प्रतिभूतियों के नए निर्गमन "प्राथमिक बाजार" के माध्यम से खरीदे-बेचे जाते हैं अथवा नए निर्गमन में निवेश प्राथमिक बाजार के माध्यम से किए जा सकते हैं, जबकि पहले से ही उपलब्ध प्रतिभूतियों में निवेश "सहायक बाजार" के माध्यम से किया जा सकता है।

स्टॉक बाजार उन समस्त लोगों के लिए सहायक है जो प्रतिभूतियों में व्यवहार करते हैं—जैसे- प्रतिभूतियों के निर्गमनकर्ता, सरकार, निवेशक, मध्यस्थ इत्यादि।

पूंजी बाजार का वह अंग जिसमें पहले से निर्गमित प्रतिभूतियों का क्रय-विक्रय किया जाता है, द्वितीय अंश बाजार कहलाता है। हम शेयर बाजार वास्तव में इसी को कहते हैं।

सेबी की भूमिका

सेबी का फुल फॉर्म क्या है:

सेबी का फुल फॉर्म भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड है।

सेबी की स्थापना कब हुई:

१९८८ में भारत सरकार ने सेबी का गठन किया था। लेकिन सेबी को संवैधानिक दर्जा १९९२ में मिला, सेबी अधिनियम १९९२ के पारित होने के बाद। सेबी का मुख्यालय मुंबई में है और इसके क्षेत्रीय कार्यालय दूसरे बड़े शहर जैसे की दिल्ली, कोलकाता, चेन्नई और अहमदाबाद में है।

वर्तमान सेबी प्रमुख : सेबी के वर्तमान प्रमुख अजय त्यागी है, इन्होंने १० जनवरी २०१७ में उपेंद्र सिन्हा से प्रभार संभाला था।

सेबी का उद्देश्य: सेबी के स्थापना के पीछे निम्नलिखित उद्देश्य हैं

आम निवेशकों का हितों की रक्षा करना:

सेबी की स्थापना के पीछे एक मुख्य कारण यह था की छोटे और आम निवेशकों का हितो की रक्षा हो। कई बार बड़े निवेशक जैसे की बैंक, हाई नेटवर्थ इंडिविडुअल्स या फिर घरेलू संस्थागत निवेशक बड़ा पैसा बनाने के लिए कई बार गलत रास्ता चुनते है। ऐसे में आम निवेशकों का हित आहत होता है इसको मदेनजर रखते हुए सरकार ने सेबी का गठन किया। निवेशक सेबी के पास अपनी निवेश से जुड़ी शिकायत ले के भी जा सकते है।

पूँजी बाजार को विकसित करना में मदद करना:

किसी भी औद्योगिक क्रिया को सामान्य रूप से चलाने के लिए कंपनियां और उद्योग को पूँजी की जरूरत पड़ती है। पूँजी का इंतजाम लोन के रूप में किया जाता है। यह लोन कम अवधि या फिर ज्यादा अवधि के लिए होते है। सेबी का एक काम यह भी है कि पूँजी बाजार को ऐसे विकसित करना जिससे किसी भी कंपनी को आसानी से लोन या पूँजी मिल जाएं।

शेयर बाजार के सभी जरूरी अंगों सुचारु रूप से सेबी के अधीन लाना:

शेयर बाजार को चलने के लिए कई सारे संस्थानों एवं लोगो की जरूरत पड़ती है। इनमें से प्रमुख हैं – कंपनियां, निवेशक, ब्रोकर, दलाल, कंपनियों के निवेशक इतियादी। सेबी की कोशिश होती है की ऐसे संस्थानों को और लोगो को सेबी की नियम के दायरे में लाना ताकि किसी भी निवेशक के हितो की रक्षा हो सके।

शेयर बाजार में कोई भी अनैतिक व्यापार या गति-विधि को रोकना

सेबी शेयर बाजार में किसी भी तरह के अनैतिक व्यापार को पता लगता है और अनैतिक व्यापार के रोकथाम के लिए नियम बनता है। यदि कोई कंपनी किसी भी गलत गतिविधि में लीन है तो सेबी उसमें में भी हस्तक्षेप करता है।

इनसाइडर ट्रेडिंग की रोकथाम:

इनसाइडर ट्रेडिंग एक ऐसा अनैतिक शेयर मार्किट गतिविधि जहाँ पे किसी कंपनी का अधिकारी अपने जान पहचान के व्यक्ति को ऐसी कोई कंपनी से सम्बंधित खबर दे देता है, जो अगले कुछ दिन में मार्किट में आएगा। ऐसी स्थिति में जान पहचान का व्यक्ति पहले से ही कंपनी का शेयर्स खरीद कर सकता है और फिर ठीक समय में बेच सकता है ताकि काफी मुनाफ़ा बना सके। इस तरह के गतिविधि की रोकथाम में सेबी का काफी बड़ा रोले है।

म्यूच्यूअल फण्ड और एस.आई.पी जैसे अन्य वित्त रत्नो का पंजीकरण:

भारत कई सारे फंड हाउस हैं, जो नए नए म्यूच्यूअल फंड्स और उसके प्रकार लाते है। ऐसे में यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि ऐसे सरे फंड्स का पंजीकरण हो और वह सारे फंड्स पहले से परिभाषित मानकों पे खरे उतरे।

प्रतिभूति बाजार से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित करना:

सेबी का एक और प्रमुख काम है की प्रतिभूति बाजार से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित करना इसके लिए सेबी समय समय पे कई सारे प्रोग्राम्स का आयोजन करता है।

सेबी का ढाँचा:

सेबी में कुल ६५० से ज्यादा लोग कार्यरत है जबकि सेबी का बोर्ड में कुल ७ लोग कार्यरत है। सेबी का बोर्ड में कुल ७ लोग कार्यरत है।

- एक चेयरमैन
- ३ फुल टाइम मेंबर्स
- ३ पार्ट टाइम मेंबर्स

१० जनवरी २०१७ को अजय त्यागी को सेबी का चेयरमैन नियुक्त किया गया।

SEBI, स्टॉक एक्सचेंज में शामिल तीन Groups के लिए जवाबदेह यानी Responsible है,

1- स्टॉक या SECURITIES ISSUE करने वाली कमपनी

2- स्टॉक या SECURITIES खरीदने वाले STOCK MARKET PARTICIPANTS

3- Stock Market में शामिल Intermediaries, जैसे स्टॉक ब्रोकर, बैंक, अन्य संस्थाएँ

SEBI का क्या काम है ?

SEBI एक POWERFUL संस्था है, और वो स्टॉक EXCHANGE के कार्यों को पूरी तरह CONTROL करती है, जहा तक SEBI द्वारा किये जाने वाले कार्यों की बात है, तो सेबी द्वारा किये जाने वाले कुछ प्रमुख कार्य है

1. Stock Exchange के लिए नियम और कानून बनाना,
2. स्टॉक मार्केट संबंधित कानून में संशोधन करना
3. सेक्योरिटीज मार्केट में निवेशको के हितों का संरक्षण,
4. स्टॉक एक्सचेंजो तथा किसी भी अन्य प्रतिभूति बाजार के व्यवसाय का नियमन करना।
5. स्टॉक ब्रोकर्स, सब-ब्रोकर्स, शेयर ट्रान्सफर एजेंट्स, ट्रस्टीज, मर्चेन्ट बैंकर्स, अंडर-रायटर्स, पोर्टफोलियो मैनेजर आदि के कार्यों का नियमन करना एवं उन्हें Registered करना।
6. Mutual Funds की सामूहिक निवेश योजनाओ को Registered करना तथा उनका नियमन करना।
7. प्रतिभूतियों बाजार से सम्बंधित अनुचित व्यापार व्यवहारों (Unfair Trade Practices) को समाप्त करना।
8. प्रतिभूति बाजार से जुड़े लोगों को प्रशिक्षित करना तथा निवेशकों की शिक्षा को प्रोत्साहित करना।
9. Stocks की Insiders Trading पर रोक लगाना,

स्टॉक मार्केट में SEBI की भूमिका (ROLE OF SEBI)

आइये अब देखते है, स्टॉक मार्केट में SEBI की भूमिका , स्टॉक मार्केट को नियमित रूप से चलाने में SEBI की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका है, आज अगर स्टॉक मार्केट सही तरह से काम कर रहा है, तो इसके पीछे SEBI की सबसे प्रमुख भूमिका है, जो स्टॉक एक्सचेंज के कार्यों का नियमन और नियंत्रण करती है, SEBI के कारण ही एक छोटा निवेशक भी STOCK EXCHANGE पर अपना भरोसा कर सकता है, क्योंकि SEBI का प्रमुख उद्देश्य निवेशकों के हितों की सुरक्षा करना है,

सभी STOCK MARKET PARTICIPANTS का एक ही मकसद होता है- स्टॉक निवेश से लाभ कमाना और पैसा बनाना, और जहाँ पैसा होता है, वहाँ लालच, बुराई, डर, सभी तरह की भावनाएं शामिल हो जाती है, और ज्यादा पैसे के लालच में लोग गलत तरीके से पैसा बनाने की कोशिश करते है, जैसे – हर्षद मेहता SCAM इन्ही सब बातों को देखते हुए, स्टॉक मार्केट से अलग एक ऐसे संस्था की जरूरत महसूस होती है, जो कि ये तय और सुनिश्चित कर सके कि स्टॉक मार्केट में सभी शामिल प्रतिभागी सही काम कर रहे है, और किसी तरह का कोई गलत काम नहीं हो रहा है, और ऐसे महे SEBI इसी जरूरत को पूरा करती है,

SEBI इस बात को सुनिश्चित करती है, स्टॉक मार्केट के अंदर और बाहर सब सही तरह से अपना काम करते रहे, SEBI द्वारा नियंत्रित की जाने वाली संस्थाएँ-

SEBI ने सेक्युरिटीज मार्केट को बेहतर तरीके से नियंत्रित करने के लिए आगे बताये गए संस्थाओ को Control करती है, और उनको कुछ set of rules देती है जिसके द्वारा वो सेक्युरिटीज से जुड़े अलग अलग सौदों को नियंत्रित करते है-

1. CREDIT Rating Agency

ये संस्थाएँ कॉर्पोरेट और गवर्नमेंट की लोन लेने की क्षमता का आंकलन करती है, जैसे- CRISIL, ICRA, CARE

2. Debentures Trustees

इसमें लगभग सभी भारतीय बैंक आ जाते हैं, जो कॉर्पोरेट/कंपनियों को डिबेंचर्स बॉन्ड के बदले loan देती हैं, और ये डिबेंचर आम जनता द्वारा भी बैंक के माध्यम से खरीदे जा सकते हैं,

3. Depositories.

Depositories यानी वे संस्थाएँ जो शेयर सेक्युरिटीज़ को डिजिटल फॉर्म में सभी छोटे बड़े इन्वेस्टर का अलग अलग एकाउंट ओपन करके उनके एकाउंट में खरीदे गए शेयर्स को जमा करती हैं, जैसे NSDL और CDSL, जो DEMAT ACCOUNT की सर्विसेज़ देते हैं,

4. Depositories Participant

हम में से कोई भी DIRECTLY किसी DEPOSITORIES के पास अपना ACCOUNT नहीं खोल सकता है, हमें डिमैट एकाउंट ओपन करने के लिए DEPOSITORIES PARTICIPANTS के पास जाना होता है, जैसे- तमाम बैंक्स, और STOCK BROKERS

5. FII -FOREGIN INSTITUTIONAL INVESTORS

FII द्वारा किये जाने वाले TRANSACTION को भी SEBI नियंत्रित करती है,

6. MERCHANT BANKERS

MERCHANT BANKER कंपनी को IPO लाने में HELP करते हैं, जैसे- KARVY, AXIS BANK, ICICI BANK

इनके कार्यों का भी SEBI नियंत्रण करती है,

7. AMC (ASSET MANAGEMENT COMPANIES) – इसमें सभी MUTUAL FUND कंपनियाँ आ जाती हैं, जो लोगों से पैसे collect करके उन्हें स्टॉक मार्केट में निवेश करती हैं, इन सभी को SEBI का पास से लाइसेंस लेना होता है, और SEBI द्वारा बनाये गए नियमों के अनुसार काम करना होता है,

8. PMS- (Portfolio Management Services.)

PMS बिल्कुल MUTUAL FUND की तरह ही होता है, लेकिन इसमें कम से कम 25 लाख रुपये की निवेश की न्यूनतम सीमा है, जैसे- RELIGARE WEALTH, पराग पारिख, आदि,

9. STOCK BROKER AND SUB BROKERS

STOCK BROKER एक मुख्य कड़ी है, जिसके माध्यम से हम STOCK EXCHANGE पर स्टॉक खरीदने या बेचने का आर्डर देते हैं, SEBI सभी स्टॉक एक्सचेंज को लाइसेंस देने के साथ साथ उनके द्वारा किये जाने वाले कार्यों के लिए अलग अलग नियम और कानून बनाकर, उनका नियंत्रण करती है,

उद्यम पूंजी

उद्यम पूंजी' इन लघु और मध्यम आकार के फार्मों के लिए महत्वपूर्ण वित्त पोषण के स्रोत हैं, जिनके पास निधियाँ जुटाने के बहुत ही कम मार्ग हैं। यद्यपि, ऐसे व्यापार फार्मों के पास भविष्य में लाभ अर्जन की अपार क्षमता होती है और अपने आप को बड़े उद्यम के रूप में स्थापित करने की क्षमता होती है परन्तु आम निवेशक इस प्रकार के निवेशों में जोखिम शामिल होने के कारण उनमें अपनी निधियाँ निवेश करना नहीं चाहते हैं। ऐसे उद्यमी क्षमता और व्यापार कौशल को वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए उद्यम पूंजी की अभिकल्पना उभर कर सामने आयी। एक तरह से उद्यम पूंजी की वचनबद्धता है, या शेयर धारिता है जो उनके जीवन के आरम्भिक अवस्था में लघु उद्यमों के गठन और स्थापना के लिए है।

उद्यमी पूंजी पति विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों से आते हैं। वे परियोजना की सावधानी पूर्वक जांच करने के बाद इन फार्मों के लिए निधियाँ (जो उद्यम पूंजी निधि के रूप में जाना जाता है) प्रदान करते हैं। उनका मुख्य लक्ष्य अपने

निवेशों पर अधिक प्रतिफल प्राप्त करना है परंतु उनकी अभिकल्पनाएं पारम्परिक उधारदाताओं से बिल्कुल भिन्न होते हैं। वे अच्छी तरह से जानते हैं परन्तु अधिक प्रतिफल के कारण दूसरे से उनकी हानि की प्रतिपूर्ति हो सकती है। वे कंपनी के प्रबंधन में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं तथा विशेषज्ञता की सेवा और अच्छे बैंकर, प्रौद्योगिकियों, योजनाकर्ता एवं प्रबंधक की अच्छी गुणवत्तापूर्ण सेवा देते हैं। इस प्रकार से उद्यम पूंजीपति और उद्यमी साक्षरशः साझेदार के रूप में कार्य करते हैं।

उद्यम पूंजी विभिन्न अवस्थाओं के वित्त पोषण को मान्यता देता है:-

- **आरम्भिक अवस्था का वित्तपोषण** – यह प्रथम अवस्था का वित्त पोषण है जब फार्म उत्पादन शुरू करता है और अपने उत्पाद को बेचने के लिए इसे अतिरिक्त निधि की आवश्यकता होती है। इनमें बीज/उद्यमी की अभिकल्पना, विचारों की सहायता करने के लिए आरंभिक वित्तीय सहायता निहित है। पूंजी उत्पाद विकास, अनुसंधान और विकास और आरंभिक विपणन के लिए दी जाती है।
- **विस्तार के लिए वित्त पोषण** – यह कार्यशील पूंजी और व्यापार विस्तार के लिए द्वितीय अवस्था का वित्त पोषण है। इसमें सार्वजनिक निर्गम सुकर बनाने के लिए विकास वित्त पोषण शामिल है।
- **अधिप्राप्ति/ खरीद वित्त पोषण** – इस बाद की अवस्था में निम्नलिखित शामिल होते हैं:-
 - i. और अधिक वृद्धि के लिए दूसरे फर्म को प्राप्त करने के निमित्त अधिग्रहण वित्त पोषण
 - ii. प्रबंधन खरीद वित्त पोषण ताकि कार्यचालन समूहों/निवेशकों को मौजूदा उत्पाद या व्यापार का अधिग्रहण करने में समर्थ बनाया जा सके।
 - iii. रुग्ण उद्यमों को पुनर्जीवित और पुनःबहाल करने के लिए संपूर्ण कायाकल्प वित्त पोषण।

भारत में उद्यम पूंजी निधि (वीसीएफ) को निम्नलिखित समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है:-

वे जिनका संवर्धन केंद्रीय सरकार नियंत्रित विकास वित्तपोषण संस्थाओं द्वारा किया जाता है, उदाहरण के लिए

- आईसीआईसीआई वेंचर फंड्स लि.
- आईएफसीआई वेंचर पूंजी फंड्स लिमिटेड (आईवीसीएफ)
- एसआईडीबीआई वेंचर पूंजी लिमिटेड (एसवीसीएल)

वे जिनका संवर्धन राज्य सरकार नियंत्रित विकास वित्तपोषण संस्थाओं द्वारा किया जाता है, उदाहरण के लिए:-

- गुजरात वेंचर फायनेंस लिमिटेड (जीवीएफएल)
- केरल वेंचर कैपिटल फंड प्रा.लि.
- पंजाब इनफोटिक वेंचर फंड
- हैदराबाद इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी वेंचर एंटरप्राइजेज लिमिटेड (एचआईटीवीईएल)

जिनका संवर्धन सार्वजनिक बैंकों द्वारा किया जाता है, उदाहरण के लिए:-

- कैनबैंक वेंचर कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड
- एसबीआई कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड

आईएल एंड एफ एस ट्रस्ट कंपनी लिमिटेड

- इनफिनिटी वेंचर इंडिया फंड
- जिनकी स्थापना विदेशी उद्यम पूंजी निधि के रूप में की गई है, उदाहरण के लिए:-

वालडेन इंटरनेशनल इन्वेस्टमेंट ग्रुप

- वालडेन इंटरनेशनल इन्वेस्टमेंट ग्रुप
- सी एफ इंडिया इन्वेस्टमेंट एंड ग्रोथ फंड
- बी टी एस इंडिया प्राइवेट इक्विटी फंड लिमिटेड

ये सभी उद्यम पूंजी निधियां **भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (सेबी)** द्वारा अभिशासित होते हैं। सेबी देशीय और विदेशी दोनों प्रकार की उद्यम पूंजी निधियों के पंजीकरण और विनियमन हेतु नोडल एजेंसी हैं। तदुसार इसने निम्नलिखित विनियमन बनाए हैं अर्थात्, **भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (उद्यम पूंजी निधि) विनियमन 1996** और **भारतीय प्रतिभूति और विनियम बोर्ड (विदेशी उद्यम पूंजी निवेशक) विनियमन 2000**। ये विनियमन भारत में और इसके बाहर दोनों में उद्यम पूंजी निधियों की स्थापना के लिए व्यापक दिशानिर्देश और प्रक्रियाएं मुहैया कराते हैं, उनका प्रबंधन मूल संरचना और संरचना तथा फंड के आकार और निवेश मानदंड प्रदान करते हैं।

इकाई 5

डेरीवेटिव बाजार

(Derivatives Market)

डेरीवेटिव्स

'डेरीवेटिव' शब्द का तात्पर्य उस कंट्रैक्ट से है जिसकी कीमत या तो एक अंतर्निहित परिसंपत्ति से व्युत्पन्न होती है या उस पर निर्भर होती है। अंतर्निहित परिसंपत्ति मुद्रा, स्टॉक और बाजार सूचकांक, एक ब्याज धारण सुरक्षा या एक भौतिक पदार्थ जैसी एक वित्तीय परिसंपत्ति हो सकती है।

डेरीवेटिव कंट्रैक्ट के प्रकार:

डेरीवेटिव्स में चार बुनियादी कंट्रैक्ट यानी फ़ॉरवार्ड (अग्रिम) , फ़्यूचर्स (वायदा), विकल्प-संविदा (ऑप्शंस) और स्वैप शामिल होते हैं।

फ़ॉरवार्ड (अग्रिम) कंट्रैक्ट:

ये एक पूर्व निर्धारित मूल्य पर भविष्य में एक पूर्व निर्धारित तिथि पर एक परिसंपत्ति डिलीवर करने के वादे होते हैं। कंट्रैक्ट को काउंटर (यानी स्टॉक एक्सचेंजों के बाहर, सीधे दो पक्षों के बीच) पर ट्रेड किया जाता है और पक्षों की जरूरतों के अनुसार कस्टमाइज़ किया जाता है।

फ़्यूचर्स (वायदा) कंट्रैक्ट:

एक फ़्यूचर्स (वायदा) कंट्रैक्ट, दो पक्षों के बीच भविष्य में एक निश्चित समय पर एक निश्चित मूल्य पर एक संपत्ति को खरीदने या बेचने का समझौता है। यह मूलतः विनिमय कारोबारित, मानकीकृत कंट्रैक्ट होते हैं।

फ़्यूचर्स (वायदा) और फ़ॉरवार्ड (अग्रिम) के बीच अंतर।

फ़्यूचर्स (वायदा)	फ़ॉरवार्ड (अग्रिम)
एक व्यवस्थित एक्सचेंज पर ट्रेड	स्वभावतः ओटीसी
मानकीकृत कंट्रैक्ट शर्तें	मानकीकृत कंट्रैक्ट शर्तें
अधिक नकदी (लिक्विड)	कम नकदी (लिक्विड)
मार्जिन भुगतान की आवश्यकता है	कोई मार्जिन भुगतान नहीं
दैनिक सेटलमेंट का अनुपालन करता है	सेटलमेंट अवधि के अंत में होता है

विकल्प (ऑप्शंस) कंट्रैक्ट:

विकल्प (ऑप्शंस), खरीदार (धारक) को भविष्य में एक परिसंपत्ति को बेचने या खरीदने के लिए अधिकार प्रदान करते हैं किन्तु दायित्व नहीं।

विकल्प (ऑप्शंस) दो प्रकार के होते हैं- कॉल्स एवं पुट्स।

कॉल्स: खरीदार को एक दी गई भविष्य की तारीख से पहले दिए गए मूल्य पर, अंतर्निहित परिसंपत्ति की दी गई मात्रा को खरीदने के लिए अधिकार प्रदान करता है किन्तु दायित्व नहीं।

पुट्स : खरीदार को एक दी गई भविष्य की तारीख से पहले दिए गए मूल्य पर, अंतर्निहित परिसंपत्ति की दी गई मात्रा को बेचने का अधिकार प्रदान करता है किन्तु दायित्व नहीं।

स्वैप: स्वैप, दो पक्षों के बीच एक पूर्वव्यवस्थित सूत्र के अनुसार भविष्य में नकदी प्रवाहों के विनिमय के लिए किए गये निजी अनुबंध होते हैं।

एक डेरिवेटिव बाजार में सहभागी

डेरिवेटिव बाजार किसी भी अन्य वित्तीय बाजार के समान होता है और इसमें सहभागियों की निम्नलिखित तीन व्यापक श्रेणियां होती हैं:

हेजर्स:

ये अंतर्निहित परिसंपत्ति के एक वर्तमान या प्रत्याशित जोखिम वाले निवेशक होते हैं जो मूल्य जोखिम के अधीन हैं। हेजर्स मुख्य रूप से संपत्ति और पोर्टफोलियो के मूल्य जोखिम प्रबंधन के लिए डेरिवेटिव बाजारों का उपयोग करते हैं।

सटोरिया:

ये वे व्यक्ति हैं, जो बाजार के भावी दिशा पर नजर रखते हैं। वे नजर रखते हैं कि भविष्य में मूल्य बढ़ेंगे या गिरेंगे और तदनुसार फ्यूचर्स (वायदा) और विकल्प खरीदते या बेचते हैं और अंतर्निहित संपत्ति के भावी मूल्य के उतार-चढ़ाव से लाभ प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

आर्बिट्रिजर्स:

वे जोखिम-रहित मुनाफा कमाने के लिए वित्तीय बाजारों में स्थान प्राप्त करते हैं। आर्बिट्रिजर्स, एक ही समय में एक या अलग कंट्रैक्ट में वह स्थिति प्राप्त करने के लिए छोटी और लंबी स्थिति लेते हैं जो एक जोखिमरहित लाभ उत्पन्न कर सकता है।

भारत में डेरिवेटिव बाजार

डेरिवेटिव मार्केट

डेरिवेटिव की सहायता से आप इक्विटी या कमोडिटी या मुद्रा के वायदा में आज तय कीमत पर व्यापार कर सकते हैं। डेरिवेटिव भविष्य के बाजार जोखिमों के बचाव के लिए काम में लिए जाते हैं क्योंकि उनके पास शेयर की कीमतों के विपरीत भविष्य की तारीख के लिए निश्चित मूल्य होता है जो हर दिन में उतार-चढ़ाव करते रहते हैं।

बैंक बचत और नियमित आय (income) आपकी संपत्ति बढ़ाने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती। बैंक बचत और नियमित आय (income) आपकी संपत्ति बढ़ाने के लिए पर्याप्त नहीं हो सकती। शेर बाजार में निवेश, ऋण बाजार (Debt Instruments) और यहाँ तक कि commodities मार्केट आपकी संपत्ति बढ़ाने में मदद कर सकता है और यहाँ तक कि वह आय का एक अतिरिक्त स्रोत साबित हो सकता है। और सबसे महत्वपूर्ण बात, निश्चित आय जैसे bank fixed deposits और संपत्तियों के विपरीत इक्विटी निवेश हमें मुद्रास्फीति को हराने में मदद कर सकता है।

भारत के वित्तीय बाजारों में निवेश करने के कई तरीके हैं।

Secondary Market: Secondary Market वह बाजार है जहां पहले से ही जारी किए गए वित्तीय साधनों जैसे बांड, शेयर, आदि खरीदे जाते हैं और बेचे जाते हैं।

Primary Market: Primary Market वह बाजार है जहाँ एक कंपनी या सरकार पहली बार खरीदारों के लिए शेयर जारी कराती हैं। इसे Initial Public offerings और IPO कहते हैं।

बॉन्ड

कंपनियों को परियोजनाएं शुरू करने के लिए धन की आवश्यकता है यदि वे इस पैसे को बैंकों से उधार लेते हैं, उन्हें ऋण कहा जाता है, जिसके लिए उन्हें नियमित ब्याज भुगतान करना पड़ता है हालांकि, अगर कंपनी समय पर ब्याज भुगतान की शर्त पर कई निवेशकों से पैसे जुटाती है, तो उसे बॉन्ड कहा जाता है। बॉन्ड्स पर मिलने वाले

ब्याज/इंटरेस्ट (interest) को कूपन (coupon) भी कहा जाता है. बॉन्ड्स एक निश्चित समय सीमा के लिए जारी किये जाते हैं, जिसके बाद बॉन्ड के धारक को उसका धन वापस मिलता है. जैसे की 1 साल, 2 साल, 5 साल, 10 साल या 30 साल आदि. बॉन्ड्स की समाप्ति की तारीख को उसकी मेचुरिटी डेट (maturity date) भी कहते हैं।

म्यूचुअल फंड्स

म्यूचुअल फंड्स के जरिए कोई भी व्यक्ति अप्रत्यक्ष रूप से बॉन्ड या इक्विटी में निवेश कर सकता है। म्यूचुअल फंड विभिन्न निवेशकों से पैसा जमा करते हैं और फिर उन्हें विभिन्न वित्तीय साधनों जैसे स्टॉक, बॉन्ड और सोने में निवेश करते हैं। म्यूचुअल फंडों के माध्यम से निवेश करने का लाभ यह है कि फण्ड मैनेजर इस पैसे को विभिन्न वित्तीय साधनों में निवेश करने के लिए अपने निवेश प्रबंधन कौशल का उपयोग करता है. म्यूचुअल फंड कई तरह से निवेश करता है जिससे उसका रिस्क और रिटर्न निर्धारित होता है।

इसके अलावा म्यूचुअल फंड का सबसे बड़ा फायदा यह है की एक निवेशक जिसे बाजार की अधिक जानकारी नहीं है वह अपना निवेश विशेषज्ञों के हाथ में छोड़ देता है. कहाँ, कैसे और कब निवेश करना है यह विशेषज्ञ निर्धारित करते हैं।

फॉरवर्ड अनुबंध: विदेशी मुद्रा में हेजिंग, मुद्रा फॉरवर्ड के माध्यम से जोखिम, फॉरवर्ड का लाभ और नुकसान

(Forward Contract: Hedging of Foreign Exchange, Risk through Currency Forwards, Advantages and Disadvantages of Forwards)

फॉरवर्ड अनुबंध

फॉरवर्ड्स सभी डेरिवेटिव्स के सबसे पुराना और पहला है। एक फॉरवर्ड अनुबंध दो पक्षों के बीच एक समझौता पर एक पूर्व निर्धारित कीमत पर भविष्य में एक निश्चित तिथि पर नकदी के लिए एक परिसंपत्ति के एक सहमति मात्रा का आदान प्रदान करने के लिए संदर्भित करता है। वादा किया परिसंपत्ति मुद्रा, वस्तु, उपकरणों, आदि हो सकता है।

उदाहरण:- १ जून को X एक समझौते पर कपास की ५० गांठे को Y, एक कपास व्यापारी से गठरी प्रति १००० रुपये के स्तर पर १ दिसंबर को खरीदता है। यह एक अनुबंध है जहा X, Y के लिए १ दिसंबर को ५०००० रुपये का भुगतान करता है और Y कपास की ५० गांठे X को बेचता है।

एक फॉरवर्ड अनुबंध में, एक उपयोगकर्ता (धारक), जो एक निश्चित भविष्य की तारीख में एक सहमति मूल्य पर निर्दिष्ट संपत्ति खरीदने के लिए वादा करता है वो 'लंबे स्थिति' में होना कहा जाता है। दूसरी ओर, उपयोगकर्ता (धारक), जो एक भविष्य की तारीख में एक सहमति मूल्य पर बेचने के लिए वादा करता है वो 'छोटी स्थिति' में होना कहा जाता है।

विदेशी मुद्रा में हेजिंग

जब कोई मुद्रा व्यापारी विदेशी मुद्रा विनिमय दरों में एक अवांछित चाल से मौजूदा या अनुमानित स्थिति की सुरक्षा के इरादे से एक व्यापार में प्रवेश करता है, तो ये कहा जा सकता है कि वह विदेशी मुद्रा बचाव। एक विदेशी मुद्रा बचाव का उपयोग करके ठीक से, एक व्यापारी जो लंबे समय से एक विदेशी मुद्रा जोड़ी है, खुद को नकारात्मक जोखिम से बचा सकता है; जबकि एक विदेशी मुद्रा जोड़ी कम है व्यापारी, उल्टा जोखिम के खिलाफ की रक्षा कर सकते हैं

खुदरा विदेशी मुद्रा व्यापारी के लिए हेजिंग मुद्रा व्यापार के प्राथमिक तरीकों के माध्यम से है:

- स्पॉट कॉन्ट्रैक्ट्स, और

- विदेशी मुद्रा विकल्प

स्पॉट कॉन्ट्रैक्ट अनिवार्य रूप से नियमित प्रकार के व्यापार हैं जो एक खुदरा विदेशी मुद्रा व्यापारी द्वारा किया जाता है। क्योंकि स्पॉट कॉन्ट्रैक्ट्स की एक छोटी अवधि की डिलीवरी डेट (दो दिन) होती है, वे सबसे प्रभावी मुद्रा हेजिंग वाहन नहीं हैं। नियमित रूप से हाजिर अनुबंध आमतौर पर हेज की आवश्यकता के मुकाबले बचाव की आवश्यकता के मुकाबले एक हेज की आवश्यकता होती है। विदेशी मुद्रा विकल्प, हालांकि मुद्रा हेजिंग के सबसे लोकप्रिय तरीकों में से एक हैं। अन्य प्रकार की प्रतिभूतियों पर विकल्पों के साथ, विदेशी मुद्रा विकल्प खरीददार को सही देता है, लेकिन भविष्य में कुछ समय पर किसी विशेष विनिमय दर पर मुद्रा जोड़ी खरीदने या बेचने का दायित्व नहीं देता है। किसी भी व्यापार की हानि की क्षमता को सीमित करने के लिए, नियमित विकल्प रणनीतियों को नियोजित किया जा सकता है, जैसे कि लंबे समय तक टकराकर, लंबे समय तक संघर्ष और बैल या भालू फैलता है। (अधिक जानकारी के लिए, हेजिंग के लिए एक शुरुआती गाइड देखें।)

विदेशी मुद्रा हेजिंग रणनीति

विदेशी मुद्रा हेजिंग रणनीति चार भागों में विकसित होती है, जिसमें विदेशी मुद्रा व्यापारी के जोखिम जोखिम, जोखिम सहिष्णुता के विश्लेषण और रणनीति की वरीयता ये घटक विदेशी मुद्रा बचाव बनाते हैं:

1. **जोखिम का विश्लेषण:** व्यापारी को यह पता होना चाहिए कि मौजूदा या प्रस्तावित स्थिति में वह किस प्रकार के जोखिम (जोखिम) ले रहा है। वहां से, व्यापारी को यह अवश्य पहचानना चाहिए कि इस खतरे को अनफिट करने पर क्या प्रभाव पड़ सकता है, और यह निर्धारित करें कि मौजूदा विदेशी मुद्रा मुद्रा बाजार में जोखिम उच्च या निम्न है या नहीं।
2. **जोखिम सहिष्णुता निर्धारित करें:** इस कदम में, व्यापारी अपने जोखिम जोखिम स्तर का उपयोग करता है, यह निर्धारित करने के लिए कि स्थिति के जोखिम को कितना ढीला होना चाहिए। कोई भी व्यापार कभी शून्य जोखिम नहीं होगा; यह जोखिम लेने वाले जोखिम के स्तर को निर्धारित करने के लिए व्यापारी पर निर्भर है, और अधिक जोखिम को हटाने के लिए वे कितना भुगतान करने के इच्छुक हैं।
3. **विदेशी मुद्रा हेजिंग रणनीति निर्धारित करें:** यदि विदेशी मुद्रा विकल्पों का उपयोग मुद्रा व्यापार के जोखिम को सुरक्षित रखने के लिए करता है, तो व्यापारी को यह निर्धारित करना होगा कि कौन सी रणनीति सबसे अधिक लागत प्रभावी है।
4. **रणनीति को लागू करें और निगरानी करें:** यह सुनिश्चित करके कि रणनीति उस तरह से काम करती है जिस तरह से, जोखिम कम से कम रहेगा।

विदेशी मुद्रा मुद्रा व्यापार बाजार एक जोखिम भरा है, और हेजिंग केवल एक तरीका है कि एक व्यापारी जोखिम की मात्रा को कम करने में मदद कर सकता है। एक व्यापारी होने का इतना पैसा और जोखिम प्रबंधन है, जो शास्त्रागार में हेजिंग जैसे अन्य टूल को अविश्वसनीय रूप से उपयोगी है। सभी खुदरा विदेशी मुद्रा दलालों उनके प्लेटफार्मों में हेजिंग की अनुमति नहीं देते हैं। ब्रोकर को पूरी तरह से अनुसंधान करना सुनिश्चित करें जो आप व्यापार से पहले शुरू करते हैं। डॉलर के मुकाबले रुपये में गिरावट से निर्यातकों को फायदा हुआ, क्योंकि उन्हें डॉलर में भुगतान होता है। वहीं, आयातकों को नुकसान झेलना पड़ा, क्योंकि उन्हें डॉलर में पेमेंट करने के लिए बाजार से महंगा डॉलर खरीदना होता है। इस नुकसान को मुद्रा बाजार का जोखिम कहते हैं। इसे हेजिंग के जरिये कम किया जाता है।

क्या होती है हेजिंग:

हेजिंग को हम एक तरह के बीमा की तरह समझ सकते हैं, जिसमें किसी भी नकारात्मक असर को कम करने की कोशिश की जाती है। हेजिंग से जोखिम होने का खतरा कम नहीं होता। लेकिन अगर सही तरीके से हेजिंग की जाए तो किसी भी नकारात्मक परिस्थिति का असर जरूर कम हो सकता है। साधारण तौर पर आप समझ लें कि हेजिंग में आप वायदा बाजार में वह पोजिशन लेते हैं, जो हाजिर बाजार से बिल्कुल विपरीत होती है। इस तरह से आप मुद्रा बाजार में किसी भी उतार-चढ़ाव के असर को कम कर सकते हैं।

क्या तरीके हैं हेजिंग के:

मुद्रा बाजार में तीन तरीकों से हेजिंग की जाती है। पहला तरीका है फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट का। इस तरीके में कारोबारी पहले से तय की गई विनिमय दर पर पूर्व-निर्धारित समयसीमा में करार करते हैं। इस तरीके में आप अपने फायदे और नुकसान दोनों पर लगाम लगा कर पहले से ही चलते हैं। दूसरा तरीका करेंसी फ्यूचर्स का है। इस तरीके में किसी भी दो खास करेंसी का तय समय और तय दर पर आपस में आदान-प्रदान होता है। करेंसी ऑप्शन तीसरा तरीका है। इसे एक तरह का बीमा कह सकते हैं जो मुद्रा बाजार के आपके पक्ष में आने से फायदा देता है और आपके विपरीत जाने में आपकी सुरक्षा भी करता है।

हेजिंग की रणनीति:

निर्यातक करेंसी का फ्यूचर कॉन्ट्रैक्ट बेचते हैं। उदाहरण के तौर पर किसी निर्यातक को एक लाख डॉलर का सामान सप्लाई करना है। मुद्रा बाजार में उतार-चढ़ाव के जोखिम से बचने के लिए वह वायदा बाजार में डॉलर बेचता है। इसके उल्टे अगर किसी आयातक को माल के लिए एक लाख डॉलर चुकाना है तो वह वायदा बाजार में जाकर डॉलर खरीद जोखिम को कम कर सकता है। आयातक कॉल ऑप्शन के जरिये विदेशी मुद्रा की खरीद की कीमत को पहले से ही तय कर अपने जोखिम को कम करता है। इसके उलट निर्यातक पुट ऑप्शन के जरिये विदेशी मुद्रा की बिक्री की कीमत को पहले से तय करके जोखिम को कम करता है।

मुद्रा फॉरवर्ड के माध्यम से जोखिम**जोखिम प्रबंधन**

विदेशी मुद्रा भंडार प्रबंधन संबंधी व्यापक रणनीति, जिसमें मुद्रा संरचना और निवेश संबंधी नीति शामिल है, भारत सरकार के साथ विचार-विमर्श करके निर्धारित की जाती है। जोखिम प्रबंधन संबंधी कार्यों का मुख्य उद्देश्य सर्वोत्तम अंतरराष्ट्रीय प्रथाओं के अनुरूप एक सशक्त शासन संरचना का विकास, उन्नत जवाबदेही, सभी परिचालनों में जोखिम संबंधी सतर्कता की प्रणाली, संसाधनों का प्रभावी आबंटन और आंतरिक कौशल एवं दक्षता का विकास करना होता है। आगे के पैराग्राफ में विदेशी मुद्रा भंडार के विनियोजन से संबंधित जोखिमों अर्थात् क्रेडिट जोखिम, बाजार जोखिम, तरलता जोखिम एवं परिचालनगत जोखिम और इन जोखिमों के प्रबंधन के लिए कार्यरत प्रणालियों के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की गई है।

1 क्रेडिट जोखिम: भारतीय रिजर्व बैंक अंतरराष्ट्रीय बाजारों में विदेशी मुद्रा भंडार के निवेश से उत्पन्न क्रेडिट जोखिम के मामले में संवेदनशील रहा है। भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा उच्च रेटिंग वाले सरकारी, केंद्रीय बैंक और सुप्रानेशनल संस्थाओं के डेट दायित्व वाले बॉण्डों/खजाना बिलों में निवेश किया जाता है। इसके अलावा, जमाराशियां केंद्रीय बैंकों, अंतरराष्ट्रीय निपटान बैंक (बीआईएस) और वाणिज्यिक बैंकों की विदेश स्थित शाखाओं में रखी जाती हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक ने विदेशी मुद्रा भंडार की सुरक्षा और तरलता बढ़ाने के उद्देश्य से जारीकर्ता/प्रतिपक्षकारों के चयन के संबंध में मानदंड निर्धारित करते हुए उचित मार्गदर्शी सिद्धांत तैयार किए हैं। भारतीय रिजर्व बैंक ने

प्रतिपक्षकारों के चयन के लिए कड़े मापदंड अपनाया जा रहा है। अनुमोदित प्रतिपक्षकारों के संबंध में स्वीकृत सीमा और क्रेडिट एक्सपोजर की निरंतर रूप से निगरानी रखी जाती है। साथ ही प्रतिपक्षकारों से संबंधित गतिविधियों पर निरंतर नजर रखी जाती है। इस प्रकार के निरंतर प्रयास का मूल उद्देश्य यह निर्धारित करना होता है कि किसी प्रतिपक्षकार का क्रेडिट संबंधी दर्जा संभावित खतरे के दायरे में तो नहीं आ रहा है।

2 बाजार जोखिम: बहुमुद्रा वाले किसी संविभाग के मामले में बाजार जोखिम, मूल्यांकन में होनेवाले उस संभाव्य परिवर्तन को दर्शाता है, जो वित्तीय बाजार में कीमत में होनेवाले उतार-चढ़ाव जैसेकि ब्याज-दर, विदेशी मुद्रा विनिमय दर, इक्विटी मूल्य और कमोडिटी मूल्य में परिवर्तन के कारण होता है। केंद्रीय बैंकों के लिए बाजार जोखिम का प्रमुख स्रोत मुद्रा जोखिम, ब्याज-दर जोखिम और सोने की कीमतों में उतार-चढ़ाव होता है। विनिमय दरों और/या सोने की कीमत में उतार-चढ़ाव के कारण विदेशी मुद्रा आस्तियों और सोने के मूल्यांकन पर होनेवाले लाभ-हानि को बैलेंस शीट में मुद्रा एवं स्वर्ण पुनर्मूल्यन खाता (सीजीआरए) नामक शीर्ष के अंतर्गत दर्शाया जाता है। सीजीआरए में शेषराशियां विनिमय दर/स्वर्ण मूल्य में उतार-चढ़ाव, जिसमें हाल के समय में तीव्र अस्थिरता देखी गई है, के प्रति सुरक्षा प्रदान करती है। विदेशी दिनांकित प्रतिभूतियों का मूल्यांकन प्रत्येक माह के अंतिम कारोबार दिवस की बाजार की कीमतों के अनुसार किया जाता है और उसमें हुई मूल्यवृद्धि/मूल्यहास को निवेश पुनर्मूल्यन खाता (आईआरए) में स्थानांतरित किया जाता है। आईआरए की शेषराशियां, प्रतिभूतियों को धारित किए जाने की अवधि के दौरान, उनके मूल्य में होने वाले परिवर्तनों के सापेक्ष गुंजाइश (कुशन) प्रदान करती है।

2.1 मुद्रा जोखिम: मुद्रा जोखिम विनिमय दरों में उतार-चढ़ाव के कारण उत्पन्न होती है। अलग-अलग मुद्राओं के मामले में दीर्घकालीन निवेश संबंधी निर्णय विनिमय दर में होनेवाली संभाव्य उतार-चढ़ाव और अन्य मध्यम और दीर्घकालीन अपेक्षाओं (जैसे कि मध्यवर्ती मुद्रा में विदेशी मुद्रा भंडार का बड़ा हिस्सा रखना, विविधता का लाभ आदि) के आधार पर लिए जाते हैं। नियमित आधार पर नीति की समीक्षा द्वारा निर्णयों की पुष्टि की जाती है।

2.2 ब्याज-दर जोखिम: ब्याज-दर के परिवर्तनों के प्रतिकूल प्रभावों से निवेश के मूल्य को यथासंभव संरक्षित रखना ब्याज-दर जोखिम के प्रबंधन का महत्वपूर्ण पहलू है। संविभाग के ब्याज-दर की संवेदनशीलता मापदंड (बेंचमार्क) अवधि और मापदंड से अनुमोदित विचलन द्वारा निर्धारित की जाती है।

2.3 तरलता जोखिम: तरलता जोखिम में आवश्यकता के अनुसार बिना किसी लागत के किसी लिखत को बेच न पाने अथवा किसी पोजीशन को समाप्त न कर पाने का जोखिम अंतर्निहित होता है। किन्हीं अप्रत्याशित अथवा अत्यावश्यक जरूरतों की पूर्ति करने के उद्देश्य से विदेशी मुद्रा भंडार में सदैव उच्च स्तर की तरलता रखी जानी अपेक्षित है। किसी विपरीत गतिविधि को संभालने के लिए विदेशी मुद्रा भंडार का प्रयोग किया जाता है, और इसलिए निवेश रणनीति में उच्च स्तर की तरलता वाले संविभाग को बनाए रखने का दबाव होता है। संविभाग की तरलता लिखतों के चयन से निर्धारित होती है। जैसेकि कुछ बाजारों में, खजाना प्रतिभूतियां को बाजार में मूल्य को ज्यादा प्रभावित किए बगैर बड़ी संख्या में अर्थसुलभ बनाया जा सकता है और इसलिए उन्हें तरल माना जाता है। बीआईएस, वाणिज्यिक बैंकों की विदेश स्थित शाखाओं और केंद्रीय बैंकों में धारित मीयादी जमाराशियों और सुप्रानेशनल द्वारा जारी प्रतिभूतियों को छोड़कर लगभग सभी अन्य प्रकार के निवेशों में तरलता अधिक होती है, जो अल्प सूचना पर नकदी में परिवर्तित किए जा सकते हैं। भारतीय रिजर्व बैंक विदेशी मुद्रा भंडार के ऐसे हिस्से पर कड़ी नजर रखता है जिन्हें किसी अप्रत्याशित/आकस्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए काफी अल्प सूचना पर नकदी में परिवर्तित किया जा सकता है।

3 परिचालनगत जोखिम और नियंत्रण प्रणाली: वैश्विक रुझान के अनुरूप, परिचालनगत जोखिम नियंत्रण संबंधी व्यवस्थाओं को मजबूत करने की ओर गहराई से ध्यान दिया जाता है। महत्वपूर्ण परिचालनगत प्रक्रियाओं का दस्तावेजीकरण किया गया है। आंतरिक रूप से, फ्रंट और बैक कार्यालय के कार्यों को पूरी तरह से पृथक रखा गया है और आंतरिक नियंत्रण प्रणाली द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि किए गए डील, डील प्रोसेसिंग और

निपटान के स्तरों पर कई जांच बिंदु हों। भुगतान अनुदेशों को जेनरेट करने सहित डील प्रोसेसिंग और निपटान प्रणाली भी आंतरिक नियंत्रण संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांतों के अधीन है जो कि वन प्वाइंट डेटा एंट्री सिद्धांत पर आधारित है। सभी आंतरिक नियंत्रण संबंधी मार्गदर्शी सिद्धांतों के अनुपालन की निगरानी के लिए समवर्ती लेखापरीक्षा प्रणाली कार्यरत है। इसके अलावा, नियमित रूप से लेखों का मिलान किया जाता है। आंतरिक वार्षिक निरीक्षण के अलावा, बाहरी सांविधिक लेखा-परीक्षकों द्वारा लेखों की लेखा-परीक्षा की जाती है। विदेशी मुद्रा भंडार प्रबंधन संबंधी महत्वपूर्ण क्षेत्र की गतिविधियों/परिचालनों को सम्मिलित करते हुए एक व्यापक रिपोर्टिंग प्रक्रिया तंत्र मौजूद है। वरिष्ठ प्रबंध तंत्र को आवधिक रूप से अर्थात् दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, त्रैमासिक, अर्ध-वार्षिक और वार्षिक अंतराल पर जैसा भी मामला हो और जानकारी जितनी संवेदनशील हो, इस प्रक्रिया तंत्र द्वारा तदनुसार जानकारी उपलब्ध कराई जाती है। रिज़र्व बैंक अपने सौदों के निपटान और प्रतिपक्षकारों, बैंकों जिनके साथ नोस्ट्रो खाते रखे गए हैं, प्रतिभूतियों के अभिरक्षकों और अन्य कारोबारी भागीदारों को वित्तीय संदेश भेजने के लिए 'स्विफ्ट' प्रणाली का प्रयोग करता है।

4 पारदर्शिता और प्रकटीकरण: भारतीय रिज़र्व बैंक विदेशी मुद्रा भंडार एवं विदेशी मुद्रा बाजार में अपने परिचालनों से संबंधित आंकड़े, देश की बाह्य आस्तियों और देयताओं संबंधी स्थिति और विदेशी मुद्रा आस्तियों और स्वर्ण के नियोजन के माध्यम से प्राप्त आय से संबंधित आंकड़े साप्ताहिक सांख्यिकीय संपूरक (डब्ल्यूएसएस), मासिक बुलेटिन, वार्षिक रिपोर्ट आदि के माध्यम से आवधिक प्रेस प्रकाशनों द्वारा सार्वजनिक करता रहता है। पारदर्शिता और प्रकटीकरण के संबंध में भारतीय रिज़र्व बैंक का दृष्टिकोण इस विषयक श्रेष्ठ अंतरराष्ट्रीय प्रणालियों के अनुरूप रहता है। भारतीय रिज़र्व बैंक विश्व के उन 81 केंद्रीय बैंकों में से एक है जिन्होंने विदेशी मुद्रा भंडार संबंधी विस्तृत आंकड़ों के प्रकटीकरण के लिए अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के विशेष आंकड़ा प्रसार मानक (एसडीडीएस) टेम्प्लेट को अपनाया है। ये आंकड़े भारतीय रिज़र्व बैंक की वेबसाइट पर मासिक आधार पर उपलब्ध कराए जाते हैं।

फॉरवर्ड अनुबंध के लाभ और नुकसान

फॉरवर्ड एक्सचेंज कॉन्ट्रैक्ट फायदे

- ✓ फायदे स्पष्ट हैं, सबसे स्पष्ट यह है कि आप चीजों को और अधिक लागत से रोक सकते हैं, या भविष्य में किसी बिंदु पर विदेशी मुद्रा पर हार नहीं सकते हैं।
- ✓ अभी खरीदें, बाद में भुगतान करें
- ✓ भविष्य की खरीद / रसीद के लिए वर्तमान विनिमय दर में लॉक करें
- ✓ अपने जोखिम को हेज करें और अपने जोखिम को कम करें
- ✓ स्थापित करने के लिए बहुत आसान है
- ✓ बनाए रखने के लिए सस्ती
- ✓ आप जल्दी मुद्रा प्राप्त करने के लिए नीचे आकर्षित कर सकते हैं
- ✓ आप रोलओवर एफ कर सकते हैं आपको मूल निपटारे के बाद तक धन की आवश्यकता नहीं है

फॉरवर्ड एक्सचेंज अनुबंध नुकसान

मुख्य नुकसान निश्चित रूप से हिंडसाइट है। मुद्रा जोखिम सुरक्षा को देखते समय ध्यान में रखना एक बात यह है कि हेजिंग आपके खिलाफ काम कर सकती है। हालांकि, केवल कुछ नुकसान हैं, एक मुद्रा आगे प्रदान की जाने वाली सुरक्षा की तुलना करें।

- ✓ यदि मुद्रा आपके पक्ष में चलता है तो आपने लाभ गंवा दिया है।

✓ छोटी जमा राशि अभी भी पूंजी से जुड़ी है

भविष्य अनुबंध

भविष्य के अनुबंध भी दो पार्टियों के बीच समझौते हैं जिसमें खरीदार अन्य पार्टी (विक्रेता) से अंतर्निहित संपत्ति खरीदने के लिए सहमत होता है। परिसंपत्ति का वितरण बाद में होता है, लेकिन कीमत खरीद के समय निर्धारित होती है।

- नियम और शर्तें मानकीकृत हैं
- व्यापार एक औपचारिक आदान-प्रदान पर होता है जहां विनिमय इन लेन-देन में संलग्न होने का स्थान प्रदान करता है और इन अनुबंधों के व्यापार के लिए पार्टियों के लिए एक तंत्र तैयार करता है।
- कोई डिफॉल्ट जोखिम नहीं है क्योंकि एक्सचेंज काउंटरपार्टी के रूप में कार्य करता है, डिलीवरी की गारंटी देता है और क्लीयरिंग हाउस का उपयोग करके भुगतान करता है
- समाशोधन गृह अपने प्रतिपक्षों को लाभ और हानियों को व्यवस्थित करने के लिए और दैनिक आधार पर अपनी स्थिति के बाजार के लिए चिह्नित करने की आवश्यकता के आधार पर स्वयं की रक्षा करता है।
- वायदा उच्च मानकीकृत हैं, उनके बाजारों में गहरी नकदी प्रवाह है और विनिमय पर व्यापार होता है।
- एक निवेशक अनुबंध की कथित परिपक्वता से पहले एक विपरीत लेनदेन में शामिल होने से अपनी भविष्य की स्थिति को ऑफसेट कर सकता है।

उदाहरण: भविष्य के अनुबंध

मान लें कि सितंबर में हाइड्रोपोनिक टमाटर की जगह या मौजूदा कीमत \$ 3 है। 25 प्रति बुशल और वायदा कीमत \$ 3 है। 50. एक टमाटर किसान अपनी अगली फसल के लिए बिक्री मूल्य को सुरक्षित करने की कोशिश कर रहा है, जबकि मैकडॉनल्ड्स अगले साल एक बिग मैक के लिए कितना चार्ज करने के लिए यह निर्धारित करने के लिए खरीदारी मूल्य सुरक्षित करने का प्रयास कर रहा है। किसान और निगम एक वायदा अनुबंध में प्रवेश कर सकते हैं जो दिसंबर में 5 डॉलर की कीमत पर मैकडॉनल्ड्स के लिए 5 मिलियन बुशे के टमाटर वितरण की आवश्यकता है। 50 प्रति बुशल अनुबंध दोनों पक्षों के लिए कीमत में लॉक करता है यह यह अनुबंध है - और अनाज प्रति से नहीं - जो तब वायदा बाजार में खरीदा और बेचा जा सकता है।

इस परिदृश्य में, किसान लघु स्थिति का धारक है (वह अंतर्निहित परिसंपत्ति - टमाटर को बेचने पर सहमत हो गया है) और मैकडॉनल्ड्स की लंबी स्थिति का धारक है (यह खरीदने के लिए सहमत हो गया है संपत्ति)। अनुबंध की कीमत \$ 3 में 5 मिलियन बुशल है। 50 प्रति बुशल वायदा अनुबंध के मुनाफे और नुकसान की गणना दैनिक आधार पर की जाती है। हमारे उदाहरण में, मान लीजिए कि टमाटर के लिए वायदा अनुबंधों की कीमत बढ़कर 4 डॉलर प्रति किलोग्राम हो जाती है जो किसान के बाद और मैकडॉनल्ड्स के \$ 3 के अपने वायदा अनुबंध में प्रवेश करती है। 50 प्रति बुशल किसान, छोटी स्थिति के धारक के रूप में, \$ 0 खो दिया है 50 रुपये प्रति बुशल क्योंकि बिक्री की कीमत सिर्फ भविष्य की कीमत से बढ़ी है जिस पर वह अपने टमाटर को बेचने के लिए बाध्य है। मैकडॉनल्ड्स का लाभ \$ 0 है 50 प्रति बुशल जिस दिन कीमत में परिवर्तन होता है, उस समय किसान के खाते को \$ 2 का डेबिट किया जाता है। 5 मिलियन (50 डॉलर प्रति बुशल एक्स 5 मिलियन बुशल) और मैकडॉनल्ड्स को उसी राशि का श्रेय दिया जाता है। क्योंकि बाजार रोज चलता रहता है, वायदा स्थिति भी रोजाना तय होती है। प्रत्येक दिन के व्यापार से लाभ और हानि काट या प्रत्येक पार्टी के खाते में श्रेय दिया जाता है। वायदा अनुबंध की समाप्ति पर, मौके और वायदा कीमतें आम तौर पर एकजुट होती हैं।

वायदा बाजार में ज्यादातर लेन-देन नकदी में तय किए जाते हैं, और वास्तविक भौतिक वस्तु को नकदी बाजार में खरीदा या बेच दिया जाता है। उदाहरण के लिए, मान लीजिए कि दिसम्बर में समाप्ति की तारीख में टमाटर का फसल खराब हो सकता है और स्पॉट कीमत 5 डॉलर तक बढ़ जाती है। 50 एक बुशल मैकडॉनल्ड्स के अपने

वायदा अनुबंध पर \$ 2 प्रति बुशल का लाभ है लेकिन इसे अभी भी टमाटर खरीदना है स्पॉट मार्केट पर टमाटर की ऊंची लागत के खिलाफ कंपनी की 10 मिलियन डॉलर का लाभ (2 डॉलर प्रति बुशल x 5 मिलियन बुशल) ऑफसेट किया जाएगा। इसी तरह, 10 मिलियन डॉलर का किसान का नुकसान उच्च मूल्य के लिए ऑफसेट होता है जिसके लिए वह अब अपने टमाटर बेच सकता है

विकल्प (Options) ऑप्शन ट्रेडिंग

ऑप्शन क्या हैं?

आपके द्वारा ऑप्शन ट्रेडिंग शुरू करने से पहले आप क्या पूर्ण करने की आशा रखते हैं, उसकी समझ होना बेहद जरूरी है। केवल तभी आप ऑप्शन ट्रेडिंग रणनीति पर ध्यान केंद्रित कर पाएंगे। आइये पहले ऑप्शन की अवधारणा को समझते हैं।

ऑप्शन डेरिवेटिव नामक प्रतिभूतियों के वर्ग का भाग होता है।

ऑप्शन की अवधारणा को इस उदाहरण से समझा जा सकता है। उदाहरण के लिए, जब आप कुछ संपत्ति खरीदने की योजना बनाते हैं, तो आपने अन्य ऑप्शन का मूल्यांकन करने के दौरान उसे कुछ समय के लिए होल्ड करने के लिए नॉन-रिफंडेबल डिपॉजिट रखा हो सकता है। यह ऑप्शन के प्रकार का उदाहरण है। उसी प्रकार, शायद आपने सुना हो कि बॉलीवुड किसी उपन्यास पर कोई ऑप्शन खरीद रहा है। किसी उपन्यास को ऑप्शन करने में निर्देशक निर्दिष्ट दिनांक से पहले उपन्यास पर फिल्म बनाने के अधिकार खरीदता है। मकान और स्क्रिप्ट वाले दोनों मामलों में, किसी ने निश्चित दिनांक से पहले निश्चित मूल्य पर कोई उत्पाद खरीदने के अधिकार के लिए कुछ पैसा रखा है। स्टॉक ऑप्शन खरीदना भी कुछ ऐसा ही है। ऑप्शन वे अनुबंध हैं जो निश्चित समय के भीतर धारक को निश्चित मूल्य पर निश्चित स्टॉक की तय मात्रा बेचने या खरीदने का अधिकार देते हैं। कोई पुट ऑप्शन धारक को प्रतिभूति बेचने का अधिकार देता है, कोई कॉल ऑप्शन प्रतिभूति खरीदने का अधिकार देता है। हालांकि इस प्रकार के अनुबंध धारक को अधिकार देते हैं, बल्कि निश्चित दिनांक से पहले निश्चित मूल्य पर स्टॉक व्यापार करने की कोई बाध्यता नहीं देते हैं। कई व्यक्तिगत निवेशक को ऑप्शन उपयोगी साधन लगता है क्योंकि वे इसे निम्न तरह से उपयोग कर सकते हैं:

ए) लेवरेज के प्रकार के रूप में या

बी) बीमा के प्रकार के रूप में।

ऑप्शन में ट्रेड करना आपको शेयर का पूरा मूल्य दिए बिना शेयर के मूल्य से लाभ उठाने देता है। वे आपको पूर्ण रूप से शेयर खरीदने के लिए आवश्यक पैसों की तुलना में बेहद कम पैसों से स्टॉक के शेयर पर सीमित नियंत्रण प्रदान करते हैं। बीमा के रूप में उपयोग किए जाने पर ऑप्शन आपको सीमित समय के लिए खरीदने या बेचने का अधिकार प्रदान करके किसी निश्चित प्रतिभूति के मूल्यों में उतार चढ़ाव से आपकी सुरक्षा करते हैं। ऑप्शन स्वाभाविक रूप से जोखिमभरा निवेश साधन है केवल अनुभवी एवं ज्ञानी निवेशकों के लिए उचित है जो कि बाजार स्थिति को करीब से देखने के लिए तैयार है और अनुमान लगाकर संभावित नुकसान उठाने के लिए वित्तीय रूप से तैयार हैं।

अलग-अलग प्रकार ऑप्शन क्या हैं? ऑप्शन को लाभ कमाने/हानि घटाने के लिए रणनीतिक उपाय के रूप में कैसे उपयोग किया जा सकता है?

अ: ऑप्शन को निम्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है:

ए) कॉल ऑप्शन**बी) पुट ऑप्शन**

जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, ऑप्शन के दो प्रकार हैं, कॉल और पुट. कॉल ऑप्शन धारक को समापन अवधि से पहले किसी भी समय स्ट्राइक मूल्य पर अंतर्निहित स्टॉक खरीदने का अधिकार देता है. सामान्य तौर पर, अंतर्निहित साधनों का मूल्य बढ़ने पर कॉल ऑप्शन का मूल्य भी बढ़ता है.

इसके विपरीत पुट ऑप्शन समापन दिनांक को या उसके पहले स्ट्राइक मूल्य पर धारक को अंतर्निहित शेयर बेचने का अधिकार प्रदान करते हैं. अंतर्निहित साधनों का मूल्य कम होने पर पुट ऑप्शन का मूल्य बढ़ता है. पुट ऑप्शन वह है जिसमें कोई व्यक्ति बाद में होने वाली मूल्य गिरावट के लिए कोई स्टॉक सुनिश्चित कर सकता है. यदि आपके स्टॉक का मूल्य कम होता है, तो आप अपना पुट ऑप्शन लेकर इसे पूर्व में निर्धारित मूल्य स्तर पर बेच सकते हैं. यदि स्टॉक मूल्य ऊपर जाता है, तो आपको बस केवल चुकायी गई प्रीमियम राशि की हानि होती है. ध्यान रखें कि समाचार पत्रों और ऑनलाइन उदाहरणों में आप कॉल को सी के रूप में और पुट को पी के रूप में संक्षिप्त किया हुआ देखेंगे.

नीचे दिए उदाहरणों में पुट ऑप्शन का स्पष्ट रूप से वर्णन किया गया है:

केस 1: राजेश ने मई इंफोसिस टेक्नोलॉजिस मई 3000 पुट का 1 लोट खरीदता है और 250 का प्रीमियम देता है, यह अनुबंध राजेश को वर्तमान दिनांक से मई के अंत तक 3000 रुपए के 100 शेयर खरीदने देता है. इसका लाभ उठाने के लिए, राजेश को बस 25000 रुपए का प्रीमियम देना है (250 रुपए एक शेयर के लिए कुल 100 शेयर). पुट के खरीदार ने बेचने का अधिकार खरीद लिया है. पुट के स्वामी के पास बेचने का अधिकार है.

केस 2: यदि आप सोचते हैं कि कोई विशेष स्टॉक जैसे 'रे टेक्नोलॉजिस' का फरवरी के महीने में मूल्य अधिक है, और भविष्य में मूल्यों में सुधार हो सकता है. हालांकि आप मूल्य बढ़ने के मामले में कोई खतरा नहीं उठाना चाहते हैं. तो आपके लिए सबसे अच्छा विकल्प स्टॉक पर पुट ऑप्शन लेना रहेगा.

मान लीजिए स्टॉक के लिए भाव इसके अंतर्गत हैं:

स्पोट 1040 रुपए

1050 रुपए 10 पर मई पुट

1070 रुपए 30 पर मई पुट

इसलिए आपने स्ट्राइक मूल्य 1070 और पुट मूल्य 30 रुपए पर 1000 'रे टेक्नोलॉजिस' पुट खरीदे हैं. आप 30000 रुपए पुट प्रीमियम के रूप में चुकाते हैं.

दो अलग-अलग परिदृश्यों में आपकी स्थिति पर नीचे चर्चा की गई है:

1. रे टेक्नोलॉजिस का मई स्पोट मूल्य = 1020

2. रे टेक्नोलॉजिस का मई स्पोट मूल्य = 1080

पहली स्थिति में आपके पास 1070 रुपए पर 'रे टेक्नोलॉजिस' के 1000 शेयर बेचने का अधिकार है जिनका मूल्य 1020 रुपए है. यह ऑप्शन आजमा कर आप $(1070-1020) = 50$ रुपए प्रति पुट प्राप्त करते हैं, जो कि 50,000 रुपए है. इस स्थिति में आपकी कुल आय $(50000-30000) = 20,000$ रुपए होती है.

दूसरी मूल्य स्थिति में, मूल्य स्पॉट बाजार से अधिक है, इसलिए आप पुट लेकर कम मूल्य पर नहीं बेचेंगे.आपको पुट ऑप्शन को बिना आजमाएं समाप्त करने की अनुमति देनी होगी.इस प्रक्रिया में आप केवल 30000 रुपए के चुकाए गए प्रीमियम का नुकसान उठाएंगे.

अस्थिर ब्याज क्या है?

अ: ऑप्शन अनुबंधों और/या फ्यूचर अनुबंधों की कुल संख्या जो कि विशेष दिन पर बंद या वितरित नहीं हुए इसलिए आजमाएं नहीं गए हैं, समाप्त हो गए या वितरण के माध्यम से पूर्ण नहीं किए गए हैं उसे अस्थिर ब्याज कहा जाता है.

इंडेक्स फ्यूचर क्या है?

अ: जैसा कि ऊपर बताया गया है, फ्यूचर वे डेरिवेटिव है जिसके लिए दो पक्ष वित्तीय साधनों या भौतिक कमोडिटी के भविष्य में किसी निश्चित मूल्य पर लेनदेन करने पर सहमत होते हैं. इंडेक्स फ्यूचर वे फ्यूचर अनुबंध है जहाँ स्टॉक इंडेक्स (निफ्टी या सेंसेक्स) अंतर्निहित है और पूरे बाजार परिदृश्य पर नजर डालने में मदद करता है.

ऑप्शन प्रीमियम, स्ट्राइक मूल्य और स्पॉट मूल्य शब्दों का क्या अर्थ है?

अ: कॉल ऑप्शन/पुट ऑप्शन के लिए कोई व्यक्ति जो मूल्य चुकाता है उसे ऑप्शन प्रीमियम कहते हैं. स्ट्राइक मूल्य उस विशेष स्टॉक को निश्चित मूल्य पर खरीदने और बेचने का अधिकार सुरक्षित रखता है.दूसरे शब्दों में स्ट्राइक मूल्य वह निश्चित मूल्य है जिस पर स्टॉक ऑप्शन का कोई धारक स्टॉक खरीद सकता है.यदि आप स्टॉक खरीदने के लिए ऑप्शन का उपयोग नहीं करने का निर्णय लेते हैं, और आप ऐसा करने के लिए बाध्य नहीं हैं, तो ऑप्शन प्रीमियम ही केवल लागत होती है. किसी ऑप्शन का प्रीमियम = ऑप्शन का असली मूल्य + ऑप्शन समय मूल्य, ऑप्शन अनुबंध आजमाते समय ऑप्शन धारक द्वारा बताया गया प्रति शेयर मूल्य जिसके लिए अंतर्निहित स्टॉक खरीदा (कॉल के लिए) या बेचा (पुट के लिए) जा सकता है, उसे स्ट्राइक मूल्य कहते हैं. स्पॉट मूल्य वर्तमान मूल्य है जिस पर निश्चित समय या स्थान पर कोई विशेष कमोडिटी खरीदी या बेची जा सकती है.

निपटान मूल्य का क्या अर्थ है?

अ: किसी ट्रेडिंग दिवस पर अनुबंध के लिए चुकाया गया अंतिम मूल्य. निपटान मूल्य खुली ट्रेड इक्विटी, मार्जिन कॉल और डेरिवेटिव के लिए इनवॉइस मूल्य निर्धारित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं.

कोई व्यक्ति ऑप्शन का मूल्य कैसे निर्धारित कर सकता है?

अ: कई कारक ऑप्शन का मूल्य निर्धारित करते हैं.

अंतर्निहित स्टॉक का व्यवहार ऑप्शन के मूल्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है.कोई विशेष स्टॉक भविष्य में कैसे व्यवहार करेगा इस बारे में निवेशकों की अलग-अलग राय है और इसलिए किसी दिए गए ऑप्शन के मूल्य से असहमत हो सकते हैं.इसके अलावा, समाप्ति दिनांक के समीप आने पर ऑप्शन का मूल्य घटता है.इसलिए, इसका मूल्य समाप्त होने में शेष समय पर काफी निर्भर करता है.

स्वाभाविक और समय मूल्य

किसी ऑप्शन का मूल्य उसके स्वाभाविक मूल्य और समय मूल्य से मिलकर बनता है.किसी ऑप्शन अनुबंध की कीमत उसके उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने की संभावनाओं से आंकी जाती है.ऑप्शन की भाषा में, जिसका निर्धारण इस आधार पर होता है, कि क्या ऑप्शन - उसकी सीमा-समाप्ति पर इन दि मनी या आउट ऑफ़ मनी है या होने की संभावना है.स्वाभाविक मूल्य ऑप्शन किस हद तक 'इन दि मनी है'.इसलिए यह वाक्यांश स्वाभाविक

मूल्य के साथ ऑप्शन का वर्णन करने के लिए उपयोग किया गया विशेषण है। यदि स्पॉट मूल्य स्ट्राइक मूल्य से अधिक होते हैं, तो कॉल ऑप्शन धन में होता है। यदि स्पॉट मूल्य स्ट्राइक मूल्य से कम है, तो पुट ऑप्शन धन में होता है। इसकी गणना ऑप्शन स्ट्राइक मूल्य को स्पॉट मूल्य से घटा कर की जाती है। किसी धन की गैर-मौजूदगी वाले ऑप्शन का स्वाभाविक मूल्य शून्य होता है।

उदाहरण के लिए, यदि एक्सवार्डजेड 58 रुपए पर ट्रेड कर रहा है और जून 55 कॉल 4 रुपए पर ट्रेड का रहा है, तो स्वाभाविक मूल्य की गणना करने के लिए 58 से 55 को घटाने पर 3 रुपए का स्वाभाविक मूल्य प्राप्त होगा। शेष 1 रुपए को बाहरी या समय मूल्य के रूप में जाना जाता है। समय मूल्य स्वाभाविक मूल्य के ऊपर की राशि है जो खरीदार किसी ऑप्शन के लिए चुकाता है। समय मूल्य खरीदते समय, कोई ऑप्शन खरीदार मानता है कि ऑप्शन समय-सीमा समाप्त होने से पहले मूल्य में बढ़ेगा। ऑप्शन की समय सीमा समाप्त होने पर, इसका समय मूल्य कम होने लगता है।

सैद्धांतिक मूल्य

सैद्धांतिक मूल्य किसी ऑप्शन का ऑब्जेक्टिव मूल्य है। यह दिखाता है कि किसी ऑप्शन में समय-मूल्य कितना बचा है। किसी ऑप्शन के सैद्धांतिक मूल्य की गणना करने के सबसे आम तौर पर उपयोग किए जाने वाले फॉर्मूले को ब्लैक-स्कूल मॉडल कहा जाता है। इस मॉडल में स्टॉक का मूल्य, ऑप्शन स्ट्राइक मूल्य, समय समाप्ति से पहले शेष समय, अंतर्निहित स्टॉक की अस्थिरता, स्टॉक का लाभांश और ऑप्शन के सैद्धांतिक मूल्य पर आते समय वर्तमान ब्याज दर। यद्यपि कोई ऑप्शन इसके सैद्धांतिक मूल्य से कम या अधिक में व्यापार कर सकता है, बाजार सैद्धांतिक मूल्य को ऑप्शन के मूल्य के लक्ष्य मानक के रूप में देखता है। यह समय के साथ सभी ऑप्शन मूल्य को उनके सैद्धांतिक मूल्य की तरफ ले जाता है।

सैद्धांतिक मूल्य के घटक अस्थिरता

अंतर्निहित स्टॉक की अस्थिरता ऑप्शन का मूल्य निर्धारित करने वाला प्रमुख घटक है। अक्सर, स्टॉक की अस्थिरता बढ़ने पर ऑप्शन का मूल्य बढ़ता है। किसी अस्थिर स्टॉक के व्यवहार का पता लगाने में आने वाली कठिनाई ऑप्शन विक्रेता को अतिरिक्त जोखिम के लिए उच्च मूल्य का मांग करने की अनुमति देती है। अस्थिरता के दो प्रकार हैं, ऐतिहासिक और अंतर्निहित। जैसा कि शब्द से पता चलता है, किसी स्टॉक की ऐतिहासिक अस्थिरता पिछले व्यवहार के आधार पर स्टॉक गति का मापन है। इसके विपरीत अंतर्निहित अस्थिरता की गणना ऑप्शन मूल्य का उपयोग करके की जाती है। यह स्टॉक गति का मापन है कि कैसे बाजार वर्तमान में ऑप्शन का मूल्यांकन कर रहा है।

लाभांश: कॉल ऑप्शन के मालिक के रूप में आप कभी भी स्टॉक पर अपने अधिकार का उपयोग कर सकते हैं और इसके द्वारा चुकाया गया कोई भी लाभांश प्राप्त कर सकते हैं।

ब्याज दर: यदि आप स्टॉक की बजाय ऑप्शन खरीदते हैं, तो आप पहले से कम दिया हुआ धन निवेश करते हैं।

समय-सीमा समाप्ति तक दिन: निरर्थक संपत्ति के रूप में ऑप्शन, प्रत्येक दिन के गुजरने के साथ थोड़ा कम हो जाता है। इसलिए इसके मूल्य की गणना इसके जीवन में शेष दिनों से की जाती है।

स्वैप्शंस क्या हैं?

अ: स्वैप्शन ब्याज दर स्वैप पर ऑप्शन है। स्वैप्शंस ऑप्शन अनुबंध है, जो आपको ऑप्शन की समय-सीमा समाप्त होने पर एक-ऑफ़ प्रीमियम के बदले में स्वैप अनुबंध करने का अधिकार देता है। कवर की गई कॉल, कवर किया गया पुट, इन दि मनी, आउट ऑफ़ दि मनी, एट दि मनी का क्या अर्थ है?

ए: Ø इन-दि मनी

अंतर्निहित प्रतिभूति के बाजार मूल्य से स्ट्राइक मूल्य के कम होने पर कॉल ऑप्शन इन-दि मनी होता है। अंतर्निहित प्रतिभूति के बाजार मूल्य से स्ट्राइक मूल्य के ज्यादा होने पर पुट ऑप्शन इन-दि मनी होता है।

Ø आउट ऑफ़ मनी

अंतर्निहित साधनों का मूल्य स्ट्राइक मूल्य से कम होने पर कॉल ऑप्शन आउट-ऑफ़-मनी होता है। अंतर्निहित साधनों का मूल्य स्ट्राइक मूल्य से अधिक होने पर पुट ऑप्शन आउट-ऑफ़-दि-मनी होता है।

Ø एट-दि मनी

अंतर्निहित प्रतिभूति का बाजार मूल्य ऑप्शन के स्ट्राइक मूल्य के बराबर (या लगभग बराबर) होने की स्थिति को एट-दि-मनी कहते हैं।

Ø कवर की गई कॉल

आप समान अंतर्निहित संपत्ति पर कम समय के कॉल ऑप्शन साथ यदि लंबे समय के लिए संपत्ति लेते हैं, तो आप कवर की गई कॉल ले सकते हैं।

Ø कवर किया गया पुट

अंतर्निहित प्रतिभूति में समान राशि कम करते समय पुट ऑप्शन की बिक्री।

स्वैप ट्रेडिंग: भविष्य में नकद प्रवाह की श्रृंखला का आदान-प्रदान करने के लिए दो पक्षों के बीच एक स्वैप एक समझौता है।

यह कैसे काम करता है (उदाहरण):

नकदी प्रवाह का आदान-प्रदान करने के लिए स्वैप वित्तीय समझौते हैं। स्वैप ब्याज दरों, स्टॉक इंडेक्स, विदेशी मुद्रा विनिमय दर और यहां तक कि वस्तुओं की कीमतों पर भी आधारित हो सकते हैं।

आइए एक सादे वेनिला स्वैप के उदाहरण के माध्यम से चलें, जो कि केवल एक ब्याज दर स्वैप है जिसमें एक पार्टी एक निश्चित ब्याज दर का भुगतान करती है और दूसरा एक फ्लोटिंग ब्याज दर का भुगतान करता है। स्वैप की फ्लोटिंग रेट "लेग" का भुगतान करने वाली पार्टी का मानना है कि ब्याज दरें नीचे आ जाएंगी। यदि वे करते हैं, तो पार्टी के ब्याज भुगतान भी नीचे जायेंगे। स्वैप की निश्चित दर "फैर" का भुगतान करने वाली पार्टी इस अवसर को नहीं लेना चाहती कि दरों में वृद्धि होगी, इसलिए वे एक निश्चित दर के साथ अपने ब्याज भुगतान में बंद कर देते हैं।

कंपनी एक्सवाईजेड 15 साल के कॉर्पोरेट बॉन्ड में \$ 10 मिलियन जारी करता है जिसमें एलआईबीओआर + 150 आधार अंकों की परिवर्तनीय ब्याज दर है। LIBOR वर्तमान में 3% है, इसलिए कंपनी XYZ बांडधारकों का भुगतान 4.5% है। बॉन्ड बेचने के बाद, कंपनी एक्सवाईजेड के एक विश्लेषक का मानना है कि एलआईबीओआर निकट अवधि में बढ़ेगा। कंपनी XYZ LIBOR में वृद्धि के संपर्क में नहीं आना चाहती है, इसलिए यह निवेशक एबीसी के साथ एक स्वैप समझौते में प्रवेश करती है।

कंपनी एक्सवाईजेड निवेशक एबीसी 4.58% प्रत्येक वर्ष \$ 10,000,000 पर 15 साल के लिए भुगतान करने के लिए सहमत है। निवेशक एबीसी कंपनी XYZ LIBOR + 15% प्रति वर्ष \$ 10,000,000 प्रति वर्ष 15 साल के लिए भुगतान करने के लिए सहमत है। ध्यान दें कि एक्सवाईजेड एबीसी से प्राप्त होने वाली फ्लोटिंग रेट भुगतान हमेशा उनके बॉन्डहोल्डर्स को भुगतान करने के लिए आवश्यक भुगतान से मेल खाती है। निवेशक एबीसी सोचता है कि ब्याज दरें नीचे जा रही हैं। वह कंपनी XYZ से निश्चित दरों को स्वीकार करने के लिए तैयार है। ऐसा करने के लिए, कंपनी एक्सवाईजेड इस परिवर्तनीय दर पर ब्याज भुगतान की धारा खरीदने के इच्छुक निवेशक के साथ भावी ब्याज भुगतान का एक स्वैप संरचना करता है और प्रत्येक अवधि के लिए एक निश्चित राशि का भुगतान करता है। स्वैप के समय, ऋण के जीवन पर भुगतान की जाने वाली राशि वही है। निवेशक सट्टेबाजी कर

रहा है कि परिवर्तनीय ब्याज दर नीचे जायेगी, उसकी ब्याज लागत कम हो जाएगी, लेकिन कंपनी एक्सवाइजेड से ब्याज भुगतान समान होगा, जिससे अंतर पर लाभ (यानी आर्बिट्रिज) की अनुमति होगी।

यह क्यों मायने रखता है:

ब्याज दर स्वेप कभी भी पेश किए गए सबसे सफल डेरिवेटिव में से एक रहा है। वे निगमों, वित्तीय संस्थानों और सरकारों द्वारा व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। बैंक फॉर इंटरनेशनल सेटलमेंट्स (बीआईएस) के मुताबिक, 2009 के दूसरे छमाही में ओवर-द-काउंटर डेरिवेटिव्स मार्केट का काल्पनिक प्रिंसिपल \$ 615 ट्रिलियन था। उस राशि में कुल मिलाकर कुल 349 ट्रिलियन डॉलर का स्वामित्व था।